मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

दिसम्बर २००६ ▸ वर्ष ५६ ▸ अंक ११-१२

७२ वां स्थापना दिवस विशेषांक

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७
फोन - २२६८-०३१९

CREATING CORE INFRASTRUCTURE

Rail Bridge over river Saryu, Uttar Pradesh

National Highway No. 1 Panipat to Karnal in Haryana

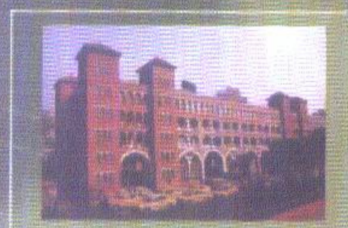

Rail Yatri Niwas at Howrah, West Bengal

Rail Bridge over river Saryu, Uttar Pradesh

PSC Girder Bridge on back waters of sea at Tamil Nadu

Infrastructure is the core of development. And, we at Tantia Constructions, have been actively involved in building infrastructural facilities across the nation and beyond. With our state-of-the-art technology coupled with our vision of a welfare state, we have been able to bring about a positive change in the lives of millions. Tantia Constructions. Where excellence is a way of life.

Creating Core Infrastructure

TANTIA CONSTRUCTIONS LIMITED
(An ISO 9001 : 2000 Company)
Registered Office : 25/27 Netaji Subhas Road, 1st Floor, Kolkata 700 001, INDIA
Corporate Office : Y6, Block EP, Sector V, Salt Lake City, Kolkata 700 091, INDIA
Tel : +91-33-2357-7651/2; Fax : +91-33-2357-7656, E-mail : tantia@tantiagroup.com

Cass Micrographics

Saree Kaho to....
minu®
SAREES

RUPA®

Miles ahead in comfort Styles ahead in fashion

Commited to produce only the best quality hosiery, with an immaculate blend of style and comfort, RUPA through its continuous innovations, has set the highest standards in quality fashion innerwear.

www.rupa.co.in

While Banking with

MAHESH BANK

Discover

Safety

Liquidity

Higher Return

Board of Directors

Ramesh Kumar Bung
Chairman

Purshotamdas Mandhana
Senior Vice-Chairman

Smt. Pushpa Boob
Vice-Chairperson

DIRECTORS

Anand Prakash Dalia
Chainsukh Kabra
Harikishan Bajaj
Ramprakash Bhandari
R.B. Kabra, FCA

Ashok Kumar Gilada
Devender Jhawar
Narayanlal Baheti
Smt. Ratnamala Saboo

Bhagwandas Jaju
Ghanshyamdas Kakani
Ramnivas Soni
Surya Prakash Sarda
Ramgopal Sarda, FCA

R.S. Jaju
CAIIB, LLB, MBA, FCS, FCA
Managing Director & CEO

- ☑ First Multi-State Scheduled Co-operative Urban Bank in South India.
- ☑ Housing Loans @11% p.a. (Conditions Apply)
- ☑ Educational Loans upto Rs. 15 Lakhs for pursuing higher education (Conditions Apply).
- ☑ (sevа) Available at Ameerpet, Khairatabad & RTC X Roads Branches.
- ☑ Lockers Facility available at all our branches. We accept NRE Deposits.
- ☑ Anywhere Banking at 4 major branches out of network of 30 branches.
- ☑ "Core Banking Solution" at all Branches is in progress.
- ☑ We offer interest @ 9.5% p.a. to Senior Citizens for deposits of 3 years & upto 6 years.
- ☑ Open Mahesh Lakhpathi Account with us and make your dreams come true.
- ☑ We offer Life Insurance solutions thru Max Newyork Life Insurance Co. Ltd.
- ☑ Instantaneous Cash Transfer - RTGS Facility.
- ☑ **Extended Business Hours at all branches 10.30 a.m. to 5.00 p.m.**

Interest rates w.e.f. 10th August 2006 (Interest rates are subject to change.)

महेश बैंक
Estd. 1978

The A.P. Mahesh Co-op. Urban Bank Ltd.

(Multi-State Scheduled Bank)

H. O. : 5-3-989, III Floor, Sherza Estate, N.S. Road, Hyderabad - 500 095 (A.P.)
Ph. : 24615296 & 99, 23437100 to 103 & 105 Fax : 040 - 24616427
Website : www.maheshbank.org e-mail : hyd1_apmb@sancharnet.in

With Best Compliments From :

SERVICE SINCE 1976

KANDOI
TRANSPORT LIMITED

Regd. Office : Professor Para, Cuttack - 753003
Telephone No. : 0671-2311179, 2311880, 2327204, 2331812
Fax No. : 0671 - 2332897
E-mail : kandoitransport@yahoo.co.in

BRANCHES :

KOLKATA : (033) 2577-0789, 9831002918 (M), RAIGARH : 9827464098 (M), CHANDIKHOL : 9437007248 (M), DUBURI : (06726) 245707, BALASORE : 9861106305 (M), MANGULI: 0671 - 2492552, PARADEEP : 06722- 222539, BELPAHAR : 9437050276 (M), VISHAKHAPATNAM : 9348995400, JODA : 06767 - 272140, MERAMUNDULI : 9437076029 (M), ROURKELA : 9437075326 (M)

राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता

प्रान्तीय भाषाओं को संविधान की आठवीं सूची में मान्यता प्रदान करने हेतु गठित सतीकान्त महापात्र समिति ने राजस्थानी एवं भोजपुरी भाषा की सिफारिश की है जिसे केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री के अनुसार स्वीकार कर केन्द्रीय मंत्रालय की स्वीकृति के लिए भेज दिया गया है। इस निर्णय पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे राजस्थानी भाषा - भाषियों के वर्षों के संघर्ष की सफलता बताया है। सम्मेलन राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता देने के लिए लगातार मांग करता रहा है। ज्ञात रहे कि राजस्थान की अशोक गहलोत सरकार ने विधान सभा में एक सर्व दलीय सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर केन्द्र सरकार से राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में मान्यता प्रदान करने की सिफारिश की थी। सम्मेलन आशा करता है कि अब केन्द्रीय कैबिनेट शीघ्र ही अवश्य निर्णय लेगा।

72वां स्थापना दिवस विशेषांक

क्रमांक

चिट्ठी आई है - 11

संपादकीय - 15
अध्यक्षीय - 17

क्षतशीश मगर... - 18

बेहतर सोच से... -19

स्व. भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार - 21

राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार... - 25

संवाददाता सम्मेलन - 27

चिन्तन शिविर 31-41

समाज और हम - 42

एक संस्था और एक संविधान - 46

राष्ट्रीय कार्यकारिणी - 49
सदस्यता अभियान - 50

मनुष्य जीवन की... 53

विचार मंच - 55 से 65
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री दीपचन्द नाहटा, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री साधूराम बंसल, श्री इन्द्रचंद संचेती, श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल, श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल एवं श्री चिरंजीलाल अग्रवाल।

आवश्यकता एवं चुनौती-66
मां - 67

हमें हमारी पुख्ता... 71

आज के युग... 69

युगपथ चरण - 73

समाज विकास

दिसम्बर, 2006
वर्ष 56, अंक 11-12
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

संपादक : नंदकिशोर जालान
विशेषांक सहयोगी : शंभु चौधरी

FOODS FATS & FERTILISERS LTD.

DIVISIONS :

International Trading	: Rice, Wheat, Suger, Pulses, Maize and Groundnut
Speciality Fats	: Sal Steanin, Kokurm Fat, Mango Fat, Shea Steanin, Palm Mid Fraction
Palm Cultivasion	: Operations in Andhra Pradesh & Karnataka
Power	: 7.5 MW industrial waste based cogeneration Power Project 11MW Biomass based power project in Chattisgarh State
Oils & Fats	: Edible Oils, Vanaspati, Bakery Fats, Maraganine, Aerated Bakery Shortenings
Fatty Acid & Chemicals	: TRIFFA Steanic Acid, Crude and Distilled Fatty Acids, Glycenne Pitch Oil, Oleoresins and High Grade Wax.
Natural Products	: Herbal extracts, Bio-Nutrients, Pharma ingredients
Engineering	: Captive engineering for expansions, transform innovative R & D into plant-scale reality.

REGISTERED OFFICE & WORKS :
P.O. Box No. 15, Tanuku Road
Tadepalligudem 534 101, A.P.
Phone : 222571 (4 lines)
Fax : 91-8818-222172/225121, E-mail:tpg@fff.co.in

CHENNAI :
P.O. Box No. 759 Fountain Plaza, 7th Floor
Pantheon Road, Eginore, Chennai 600008 (India)
Phone : 28193121 Dir : 28193339
Fax : 91-44-28193322/28193065, E-mail : chn@fffco.in, sbg@fff.co.in

HYDERABAD OFFICE ADDRESS :
6-3-569/2, 1st Floor, Rockdale
Somajigude, Hyderabad - 500 082
Phone : 23320551 / 52, 66134061 / 62
Fax : 040-30727575, E-mail : hyd@fff.co.in

MUMBAI OFFICE ADDRESS :
Green House, 2nd Floor, Green Street
Fort G.P.O. No. 10066, Mumbai - 400 023
Phone : 22662136 / 22661846 / 22663118
E-mail : fffb@bom 3.vsnl.net.in, fffb@mtn.net.in

Branches : • KOLKATA • BARODA • KAKINADA • DELHI • BANGALORE • NAGAPATTNAM • COCHIN • VISAKHAPATNAM

Website : www.3fg.in

INDIA
Foods Fats & Fertilisers Ltd.,
Asia Pacific commodities Ltd

OVERSEAS
Parker International Pte. Ltd. (Singapore)
Ceylon Speciality Fats (P) Ltd. (Sri Lanka), 3F Ghana Ltd., (Ghana)

Jai Bharat Commercial Corporation

23/24, Radha Bazar Street, 3rd Floor
Kolkata - 700 001
Phones : 2242-5889, 2242-7995, 2231-8944
Fax : 2242-9813, E-mail : jbccsonthalia@yahoo.com

Manufacturers & Suppliers of :-

C.I./M.S./E.R.W./G.I./P.V.C./C.I.D.F. Pipes (Tubes), D.I. Fittings, Pipes Fittings, A. C. Pressure Pipes, C.I.D. Joints, M.S. Rounds, Tor Steel, Rubber Gasket and Rings and Pig Lead and Hand Pump, Swallow/Deep Tubewells & accessories

लोकसभा के अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

72वां स्थापना दिवस समारोह

25 दिसम्बर 2006 को प्रातः 10 बजे स्थानीय कला मन्दिर सभागार में सम्मेलन का 72वां स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया है। समारोह का उद्‌घाटन करेंगे **लोकसभा के अध्यक्ष माननीय श्री सोमनाथ चटर्जी** एवं अध्यक्षता करेंगे सम्मेलन सभापति **श्री सीताराम शर्मा**।

इस अवसर पर समाज के प्रतिभावान कलाकारों द्वारा राजस्थान की सौंधी माटी की सुगंध लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'ओल्यूं आवे रे' की संगीतमयी प्रस्तुति की जायेगी।

रामअवतार पोद्दार	**श्री सजन भजनका**	**अरुण गुप्ता, रविन्द्र कुमार लड़िया**	**हरिप्रसाद कानोड़िया**
राष्ट्रीय महामंत्री	अध्यक्ष, कार्यक्रम समिति	संयुक्त महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

गायक वृन्द

सोनाली मूंधड़ा, मारूति मोहता, संगीता, जया शर्मा, राजीव माहेश्वरी, राजेश सादानी।

नृत्य

सुप्रिया बैद, पुनम रावत, स्वाति जायसवाल, स्नेहा अग्रवाल, मोनू अग्रवाल, रजनी डागा, प्रेरणा डागा, आयुषी भावसिंहका, राशिका कोठारी, निकिता थिरानी, प्रियंका झुनझुनवाला, वंदना बिन्नानी।

नृत्य निर्देशन : **देवगोविन्द बिन्नानी**

संगीत संयोजन : **नीलमणि राठी**

With best compliments from :

hitech

HI-TECH SYSTEMS & SERVICES LTD.

Registered Office :

White House
119 Park Street
Kolkata - 700016

Tel : (033) 22290045
Fax : (033) 22291264
e-mail : info@hitech.in
Web : www.hitech.in

Branches :

BHUBANESHWAR, CHENNAI, HYDERABAD, NEW DELHI, MUMBAI, VADODARA

चिट्ठी आई है

समाज विकास के मार्फत पढ़ी, खुशी हुई कि सामाजिक कुरीतियों को कम करने तथा समाज सुधार के क्षेत्र में ''सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक सुधार कार्यक्रम'' तय करने की पहल हो रही है। समाज सुधार के लिए जरूरी है कि संस्था के वरीय पदाधिकारीगण अपने यहां से शुरू कर मिशाल कायम करें।

-**श्रवण कुमार देबुका**
जुगसलाई, जमशेदपुर-831006

आपने प्रान्तीय पदाधिकारियों के साथ 4-5 नवम्बर 2006 को कोलकाता में एक चिन्तन शिविर का आयोजन किया, वह मारवाड़ी समाज में आगे आने वाले समय में मील का पत्थर होगा। क्योंकि इस चिन्तन शिविर में जिन बातों पर चिन्तन हुआ होगा वह इसकी रूप रेखा देखने से ही विदित हो रही है। राष्ट्रीय चिन्तन शिविर - ''समाज की अपेक्षाएं एवं हमारी जिम्मेदारियां'' लेख भाई श्री बंशीलाल बाहेती द्वारा लिखा पढ़ा।

-**किशोरी लाल अग्रवाल**
प्रांतीय संयुक्त महामंत्री, बि. प्रा. मा. सम्मेलन

यद्यपि मैं अब काफी शरीर से शिथिल हो गया हूँ फिर भी मारवाड़ी सम्मेलन की बागडोर आपके हाथ में आने से मुझे बहुत उत्साह हो रहा है। समाज विकास के माध्यम से अनेक बातों का ज्ञान होता है। गत 4-5 नवम्बर को राष्ट्रीय चिन्तन शिविर की सूचना मुझे शायद नहीं मिली थी इसीलिए मैं इसमें शामिल न हो सका था। भविष्य में इस ढंग के विचार-विमर्श के सन्दर्भ में कृपया मुझे पूरी जानकारी टेलीफोन पर मिल सके, इसकी व्यवस्था अपने ऑफिस में करा दीजियेगा तो बड़ी कृपा होगी।

मिलनी में चाँदी के रुपयों के बजाय कागज के चार रुपया हो ये प्रस्ताव आपने पारित किया है। यद्यपि यह बड़ा अच्छा है परन्तु या तो मिलनी में कोई भी रुपया नहीं दिये जाये या 4 चाँदी के सिक्के 10 ग्राम वाले दिये जा सकते हैं। चाँदी के पंचम जार्ज या विक्टोरिया वाले सिक्के कभी भी व्यवहार में नहीं लेने चाहिए।

वैवाहिक सुधार का कार्यक्रम तभी कुछ हो पायेगा, जब सम्मेलन इसको लगातार करता रहे।

-**गिरधारीलाल जगतरामका**
हेस्टिंग्स, कोलकाता

लिखने का कारण समाज विकास पत्रिका के माध्यम से बहुत जानकारी प्राप्त हो रही है, हर प्रान्त में अपनी-अपनी भाषा का उपयोग होता है। हमारे समाज की भाषा का उपयोग हम आपस में तथा पत्रिका में क्यों नहीं कर रहे हैं? मेरा एक सुझाव है, पत्रिका में, आने वाले महीनों का व्रत, त्योंहार, पूजा, सरकारी छुट्टी की जानकारी रहे तो और अच्छा रहेगा।

हमारी संस्था तीन भागों में बंटी हुई है - (1) महिला सम्मेलन, (2) मारवाड़ी युवा मंच, (3) अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन, लेकिन एक व्यक्ति युवा मंच में है तो मारवाड़ी समिति में भी है, दोनों जगह एक व्यक्ति नहीं होना चाहिए। सम्मेलन कोई भी एक मंच में होना चाहिए।

-**अशोक कुमार अग्रवाल**, खेतराजपुर, सम्बलपुर-3

आपके राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने की कोटिश: बधाई। सम्मेलन को राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में आप जैसी सशक्त पर्सनालिटी की ही जरूरत थी। आशा है आपके नेतृत्व में हमारा सम्मेलन समाज को नित नई ऊंचाइयों पर ले जायेगा।

जालानजी के अध्यक्षकाल में कलकत्ता ऑफिस से लगातार संपर्क बना रहता था। और लगता था कि हमारे सम्मेलन के दादा-गुरु कलकत्ते में हैं।

एक बार पुन: सीतारामजी शर्मा का नाम राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में देख कर ऐसी ही उम्मीद जगी है। पुन: शुभकामनाएं इन उम्मीदों के साथ:-

''किसी मोड़ पर फिर मुलाकात होगी,
मुसाफिर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी।''

-**श्रीमती ललिता मोदी**, वाराणसी

यह शिविर मेरे लिए यादगार शिविर रहेगा। आप सभी भाइयों से मिलकर एक सुखद अनुभूति हुई और आपने हमारे प्रस्ताव मानकर हम बहनों का मनोबल बढ़ाया, इसके लिए मैं अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की सभी बहनों की तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करती हूँ।

-**श्रीमती अरुणा जैन**, राष्ट्रीय अध्यक्षा, महिला सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच। यानि की भाईयों की, बहनों की एवं युवा भाईयों की तीन संस्थाएं पूरे भारत वर्ष में स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही है। अब प्रश्न महिलाओं के सामने यह आता है कि वे कहां जुड़े समाज सेवा के लिए? यदि महिलाएं वृद्ध हैं या यूँ कहिए युवा नहीं हैं, वे अपने पतिदेव के साथ अ.भा.मा. सम्मेलन की महिला शाखा से जुड़ जाती हैं और इसी भांति युवतियां-युवा मंच की महिला शाखा से जुड़ जाती है। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन - जो कि 25 वर्षों से अपने संविधान का निर्माण कर स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही है, उसके लिए यह समस्या आ रही है कि मारवाड़ी महिलाएं बहुत कम ही समाज-सेवा में बराबर लग पाती हैं। तीन भागों में विभाजित होना पड़े तो शक्ति बजाय संगठित होने के बंट जाती है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कुछ कार्यक्रम तीनों संस्थाएं मिलजुल करें ताकि आपसी सौहार्द्र बना रहे। नई सोच, नई सुव्यवस्था को मस्तिष्क में रखते हुए एक नया अधिनियम बनाएँ ताकि सबको साथ में लेकर शक्ति को संगठित कर हम सब कुछ कर सकें।

-**श्रीमती प्रेमलता खंडेलवाल**
गुवाहाटी, असम

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उत्तर बंगाल में सिलीगुड़ी बहुत ही द्रुत गति से प्रगति कर रहा है। इतना कुछ होते हुए भी अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन की कोई शाखा यहाँ नहीं है। अगर है भी तो बिलकुल निष्क्रिय और गुमनाम है।

आपसे सादर अनुरोध है, यहाँ पर भी सम्मेलन की एक प्रभावशाली शाखा खोलने की व्यवस्था करें।

-**ओमप्रकाश अग्रवाल**, सिलीगुड़ी

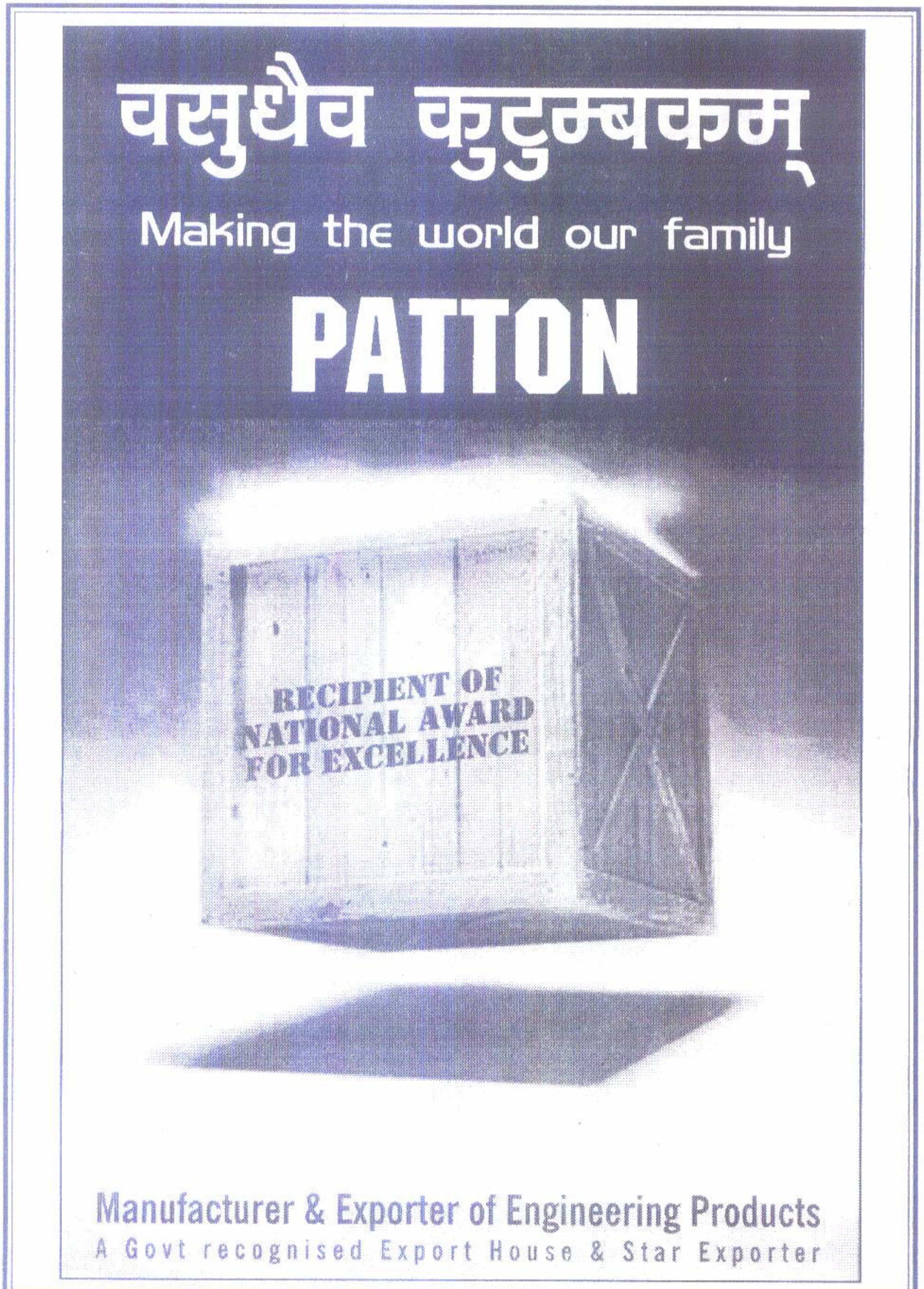

वसुधैव कुटुम्बकम्
Making the world our family
PATTON
RECIPIENT OF
NATIONAL AWARD
FOR EXCELLENCE
Manufacturer & Exporter of Engineering Products
A Govt recognised Export House & Star Exporter

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी

कार्यकाल	स्थान	अध्यक्ष	महामंत्री
1935-1938	कलकत्ता	स्व. रायबहादुर रामदेव चोखानी (कलकत्ता)	स्व. भूरामल अग्रवाल
1938-1940	कलकत्ता	स्व. पद्मपत सिंघानिया (कानपुर)	स्व. ईश्वरदास जालान
1940-1941	कानपुर	स्व. बद्रीदास गोयनका (कलकत्ता)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
1941-1943	भागलपुर	स्व. रामदेव पोद्दार (बम्बई)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
1943-1947	दिल्ली	स्व. रामगोपाल मोहता (बीकानेर)	स्व. बजरंगलाल लाठ
1947-1954	बम्बई	स्व. बृजलाल बियाणी (अकोला)	स्व. रामेश्वरलाल केजड़ीवाल श्री नन्दकिशोर जालान
1954-1961	कलकत्ता	स्व. सेठ गोविन्ददास मालपानी (जबलपुर)	श्री नन्दकिशोर जालान
1961-1966	कलकत्ता	स्व. गजाधर सोमानी (बम्बई)	स्व. रघुनाथ प्रसाद खेतान
1966-1973	पूना	स्व. रामेश्वरलाल टांटिया (कलकत्ता)	स्व. रामकृष्ण सरावगी श्री दीपचंद नाहटा
1973-1976	राँची	स्व. भंवरमल सिंघी (कलकत्ता)	श्री नन्दकिशोर जालान
1976-1979	हैदराबाद	स्व. भंवरमल सिंघी (कलकत्ता)	श्री नन्दकिशोर जालान
1979-1982	बम्बई	स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार (बम्बई)	स्व. बजरंगलाल जाजू
1982-1986	जमशेदपुर	श्री नन्दकिशोर जालान (कलकत्ता)	स्व. बजरंगलाल जाजू श्री रतन शाह
1986-1989	कानपुर	श्री हरिशंकर सिंहानिया (दिल्ली)	श्री रतन शाह
1989-1993	राँची	स्व. रामकृष्ण सरावगी (कलकत्ता)	स्व. दुलीचंद अग्रवाल
1993-1997	दिल्ली	श्री नन्दकिशोर जालान (कलकत्ता)	श्री दीपचंद नाहटा
1997-2001	हैदराबाद	श्री नन्दकिशोर जालान (कलकत्ता)	श्री सीताराम शर्मा
2001-2004	कानपुर	श्री मोहनलाल तुलस्यान (कलकत्ता)	श्री सीताराम शर्मा
2004-2006	मुम्बई	श्री मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री भानीराम सुरेका
2006-2008	भुवनेश्वर	श्री सीताराम शर्मा (कोलकाता)	श्री राम अवतार पोद्दार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रादेशिक सम्मेलनों के अध्यक्ष एवं महामंत्री

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री रमेश कुमार बंग

महामंत्री
श्री नरेशचन्द्र विजयवर्गीय

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री विजय कुमार मंगलुनिया

महामंत्री
श्री बजरंगलाल नाहटा

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला

महामंत्री
श्री कमल नोपानी

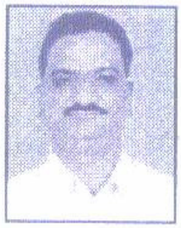

तमिलनाडु प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री कैलाशमल दुग्गड़

महामंत्री
श्री विजय गोयल

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया

महामंत्री
श्री धर्मचन्द जैन 'रारा'

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया

महामंत्री
श्री शिव कुमार अग्रवाल

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी

महामंत्री
श्री रमेश कुमार गर्ग

उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री सोमप्रकाश गोयनका

महामंत्री
श्री गोपाल सूतवाला

महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री रमेशचन्द्र गोपीकिशन बंग

महामंत्री
श्री ललित सकलचंद गांधी

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

अध्यक्ष
श्री लोकनाथ डोकानिया

महामंत्री
श्री गोपाल अग्रवाल

संपादकीय

यह कैसी गांधीगीरी?

विश्व द्रुतगति से भौतिकवाद के नये दौर से गुजर रहा है, रातों रात आर्थिक परिवर्तन इतनी तेजी से हो रहें हैं, कि आजादी के पूर्व एवं बाद के पच्चास सालों में इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। एक उद्योग लगाना एवं सिर्फ शिक्षा प्राप्त कर उद्योग से अधिक की आय कोई भी युवा चाहे तो आज कमा सकता है। ऐसे समय में सुस्पष्ट चिन्तन की युवाओं को कितनी आवश्यकता है, कितनी नहीं यह इनको ही तय करना है। आर्थिक परिधि के चारों तरफ हर पल नया परिवर्तन देखने को मिल रहा है, हमें चाहिए कि हमारे युवक समय रहते इस परिधि को पकड़ें, अन्यथा अन्य विश्व में माइक्रोसॉफ्ट की तरह दुनियां में छा जायेगा, हम किसी गाँधीगीरी के चक्रव्यूह में अपना वक्त गवां न दें, यह ज्यादा जरूरी है। हाँ, गाँधी जी के आदर्श को जेहन में रखकर देश के हर युवक को चाहिए कि आने वाली नस्ले हिंसक न बन उच्च आदर्शों को अपनाये उनमें भी सहनशीलता, जीवन के प्रति जिम्मेदारी व देश - परिवार के प्रति प्रेम हों यह जरूरी है। देश प्रेम सर्वाधिक जरूरी है।

> ***वक्त गांधीगीरी करने का नहीं, विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर एक कदम आगे चलने का है, और यह तभी संभव है, जब युवक अपनी उर्जा को सही समय पर पहचाने।***

यह कैसी गांधीगीरी? गांधी जी के न्याय-अहिंसा को भोग-हिंसा करने का माध्यम बनाया जा रहा है। युवकों में गांधी जी के आदर्श पनपें इसका प्रयास कैसे हो। यह तो कोई भले ही नहीं कह पाये, परन्तु गांधी जी के जो मूल मंत थे (1) देश भर में हिन्दी का प्रचार-प्रसार। (2) स्वदेशी आन्दोलन। (3) छुआ-छूत की समाप्ति। आजादी के आन्दोलनों में "करो या मरो", "विदेशी वस्त्र जलाओ", "अंग्रेजी भारत छोड़ो" जैसे आन्दोलनों की आज के परिप्रेक्ष्य में कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है। परन्तु हिन्दी प्रचार, छूआ-छूत, व स्वदेशी आन्दोलन की आज भी उपयोगिता है, और सबसे बड़ी बात बढ़ती हिंसा है। जगह - जगह लोग छोटे-छोटे मतभेदों को लेकर हिंसा पर उतर जाते हैं। अहिंसा का अनमोल पाठ जो गांधी जी ने देश को ही नहीं, बल्कि विश्व को दिया इसके प्रति हमारे देश के युवक क्यों नहीं सोचते? गांधीगीरी का चोला पहन कर गांधी जी का माखौल तो उड़ाया जा सकता है। गांधीजी के आदर्शो का परिपालन कदापि संभव नहीं हो सकता। गाँधीवाद स्वयं में एकतपस्या है, और इस तपस्या को करने के लिए गाँधीगीरी का चोला जरूरी नहीं है। गाँधी जी के प्रति निष्ठावान बनने के लिए ग्रामीण अंचलों में जाकर युवकों को काम करने की जरूरत है, भोग और हिंसा के मार्ग को त्याग कर संयम और अहिंसा को अपनाने की जरूरत है। गाँधी जी के मान को हम सम्मानित नहीं कर सकते, तो कम से कम अपमानित करने का मार्ग तो न चुनें।

विश्व के बदलते स्वरूप में जहाँ आर्थिक रूप से विश्व में नये-नये प्रयोग हो रहे हैं, रातों-रात कई कम्पनियां अपने व्यवसाय को विश्व भर में फैला रही है, हमारे युवक उनके लिए काम कर रहे हैं। भारत में सैकड़ों की संख्या में Call Center काम करने लगें। हजारों युवक, युवतियां रात को काम पर जाने लगे। बैंक सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक काम करने लगे। पहले कोई दुकानदार यदि अपनी दुकान सुबह आठ बजे खोलता या रात को बन्द करता था। ग्रामीण इलाकों या शहरों में श्रम कानून के अधिकारी उनको प्रताड़ित करते पाये जाते थे। वक्त बदल चुका है। गांधीजी के प्रति मेरी पूरी श्रद्धा है, परन्तु यह आवश्यक है कि उनके आदर्शों एवं चिन्तन को मनन करने व समझने की।

वक्त गांधीगीरी करने का नहीं, विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर एक कदम आगे चलने का है, और यह तभी संभव है, जब युवक अपनी उर्जा को सही समय पर पहचाने। गाँधीगीरी के लिए नहीं गाँधी के सपने को साकार करने के लिए युवक आगे आयें।

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

152–बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता–700007

सूचना

26 दिसम्बर 2006

सभी सदस्यों की सेवा में

महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा आगामी रविवार 28 जनवरी 2007 को प्रात: 10 बजे सम्मेलन भवन, 25 अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता-9 में निम्नलिखित विषयों के विचारार्थ आयोजित की गयी है।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा करेंगे।

विचारार्थ विषय

1. सम्मेलन के पिछले वर्ष (2005-06) के आय-व्यय लेखे एवं संतुलन पत्र को स्वीकृत करना।
2. सम्मेलन के पिछले वर्ष के कार्यकलापों पर चर्चा।
3. लेखा-परीक्षक की नियुक्ति।

सभी सदस्य सादर आमंतित है।

सधन्यवाद,

विनीत
राम अवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री

संलग्न : आय-व्यय का ब्यौरा देखें पृष्ठ 51-52

श्री नथमल टिबड़ेवाल

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद हेतु सर्वसम्मति से मुजफ्फरपुर निवासी 54 वर्षीय श्री नथमल टिबड़ेवाल को चुन लिया गया। श्री टिबड़ेवाल 13 जनवरी 2007 को योग नगरी मुंगेर में सम्पन्न होने वाले मारवाड़ी सम्मेलन के 25वां रजत जयंती महाधिवेशन में नये सत्र के अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण करेंगे।

श्री टिबड़ेवाल अनेक आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं चिकित्सा संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। बधाई।

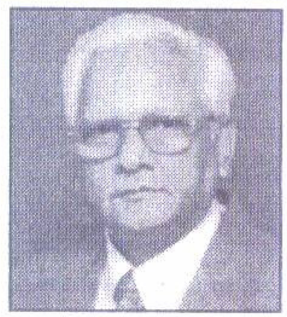

श्री विश्वम्भर नेवर

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्वाचित

सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने 20वें राष्ट्रीय अधिवेशन द्वारा प्रदत्त अधिकार के अन्तर्गत कोलकाता के सुपरिचित सामाजिक कार्यकर्ता व दैनिक छपते-छपते के सम्पादक श्री विश्वम्भर नेवर को सम्मेलन का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर मनोनीत किये।

युवा-महिला उपसमिति

श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल को युवा-महिला उपसमिति के अध्यक्ष पद हेतु मनोनीत किया गया।

चिन्तन शिविर एवं वैवाहिक आचार संहिता

अध्यक्षीय

गत 4-5 नवम्बर, 2006 को कोलकाता के साल्टलेक स्थित स्व० रामस्वरूप गुप्ता स्मृति सभागार में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित "चिन्तन शिविर" एक बहुत ही सफल एवं सार्थक कार्यक्रम रहा। सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच से सर्वभारतीय स्तर पर जुड़े करीब 100 पदाधिकारियों, एवं सदस्यों ने सम्मेलन के इतिहास में संभवत: पहली बार एक छत के नीचे बैठकर लगातार दो दिन तक मारवाड़ी समाज के समक्ष प्रश्नों, समस्याओं, एवं चुनौतियों के विषय में बेबाक बातचीत की। आत्म-आलोचना के स्तर पर वक्ताओं को सम्मेलन की कमियों एवं सम्मेलन के संविधान, सदस्यता, कार्यशैली आदि पर खुलकर वाद-विवाद किया।

सभी सर्व-सम्मत थे कि मारवाड़ी सम्मेलन न सिर्फ आज भी प्रासंगिक है बल्कि इसे और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है जिससे यह सही मायने में मारवाड़ी समाज की प्रतिनिधि संस्था की भूमिका निभा सके। 'चिन्तन शिविर' के आयोजन का एक स्वर में स्वागत करते हुए वक्ताओं ने इसे एक नयी शुरूआत बताया। संगठन, संविधान, सदस्यता, कार्यक्रम, समाज सुधार, राजनीति में भागीदारी, आर्थिक चुनौतियां, सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, आदि सवालों पर महत्वपूर्ण विचार एवं ठोस सुझाव सामने आयें। मत-विरोध, आक्रोश, निराशा एवं खीझ के स्वर भी उभरे लेकिन सभी के मन में एक चिन्ता थी, यहीं चिन्तन शिविर की सफलता के प्रतीक थे। उपस्थित प्राय: प्रत्येक व्यक्ति ने बात चीत में लगातार हिस्सा लिया, न समय-सीमा थी, न ही कोई रोक-टोक। एक व्यक्ति जितनी बार चाहे उतनी बार अपनी बात रख सकता था। लगा, कितना कुछ कहना-सुनना था। **मैं प्रस्तावित करना चाहता हूँ कि प्रत्येक प्रांतीय सम्मेलन वर्ष में एक बार इस तरह के 'चिन्तन शिविर' का आयोजन प्रांतीय स्तर पर जिला पदाधिकारियों के साथ करने की योजना हाथ में लें। जहां प्रांतीय प्रश्नों के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रश्नों पर खुली बातचीत हो।**

वैवाहिक आचार संहिता

जैसा कि आपको विदित है मैंने अपने कार्यकाल का नारा दिया है—समाज सुधार एवं समरसता। पदभार ग्रहण के समय मैंने इस बात को स्वीकार किया था कि सम्मेलन में समाज सुधार की बातों एवं कार्यक्रमों में पिछले वर्षों में कमी आयी है। इसे दूर करना है। अतएव चिन्तन शिविर में 'समाज सुधार' पर विशेष रूप से जोर दिया गया। समाज में पिछले वर्षों में दिखावा, आडम्बर, एवं फिजूलखर्ची बड़ी तेजी से बढ़ी है। विवाहों में इसका प्रदर्शन सबसे अधिक चिन्ता का विषय रहा है।

सम्मेलन ने यह निर्णय लिया कि चिन्तन शिविर में एक सर्वसम्मति एवं सर्वमान्य 'वैवाहिक आचार संहिता' निर्धारित करने का प्रयास किया जाये। प्रस्तावित 'ड्राफ्ट' आचार संहिता पर घण्टों गर्म-नरम बहस हुयी। सभी एक आचार संहिता जारी करने के पक्ष में थे। सभी आडम्बर-दिखावे पर चिन्तित थे। सभी सामाजिक पाबन्दी के पक्षधर थे। सभी को आशंका थी कि क्या आचार संहिता का पालन कराया जा सकेगा? लेकिन सभी एकमत थे कि इसके लिये विरोध-प्रदर्शन का पथ नहीं अपनाया जाये। सभी एकमत थे कि स्वीकृत आचार संहिता का देश-व्यापी स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जाये एवं इसके पक्ष में जनमत तैयार किया जाये। सभी एकमत थे कि एक बड़े उद्देश्य की ओर "एक छोटे कदम" के रूप में 'सर्वमान्य, सर्वसम्मत एवं न्यूनतम' के सिद्धान्त के आधार पर ही आचार संहिता निर्धारित की जाये।

इस सर्वसम्मत माहौल में एक सर्वमान्य आचार संहिता पर सहमति बनाना अधिक कठिन नहीं होना चाहिये था पर प्रस्तावित 'ड्राफ्ट' आचार संहिता के बिन्दुओं पर एक लम्बी बहस हुयी। चिन्तन शिविर में आमंत्रित कोलकाता स्थित जातिगत संस्थाओं के प्रतिनिधियों से इस आचार संहिता पर विचार विमर्श बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक रहा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा पारित "वैवाहिक आचार संहिता" आपके सामने (मुख-पृष्ठ पर) प्रस्तुत है। अब इसका प्रचार-प्रसार एवं पालन आपके -हमारे हाथ में हैं। सम्मेलन का यह एक मुख्य कार्यक्रम बने। हमें इसे घर-घर तक पहुंचाना है। इसके पक्ष में जनमत तैयार करना है। आचार संहिता के सभी बिन्दुओं पर सभी पूरी तरह सहमत हो यह आवश्यक नहीं। समाज के कुछ हिस्सों में तो पहले से ही आचार संहिता के प्रावधानों से भी आगे बढ़कर पालन किया जा रहा है। **हमें एक शुरूआत करनी है, एक संदेश देना है—विवाहों में सादगी बरतें।**

(सीताराम शर्मा)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

क्षतशीश मगर नतशीश नहीं!

राम अवतार पोद्दार, महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंच से जो चर्चा अतीत में हुई या वर्तमान में हो रही है उसका एकमात्र उद्देश्य इस समाज के गौरव को अक्षुण्य रखते हुए, समय के साथ नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए सुनहरे भविष्य का आधार तैयार करना रहा है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एक वैचारिक संस्था है जहां पूरे देश और विश्व के प्रवासी मारवाड़ियों की समस्याओं को सामने रखकर सामूहिक रूप से उसका समाधान निकालने की चेष्टा की जाती है। सम्मेलन द्वारा समाज के हित में जारी दिशानिर्देशों को देखें तो स्वत: इस बात का पता चल जाता है कि सम्मेलन ने समाज के सर्वांगीण विकास को अहमियत दी है, किसी विशेष व्यक्ति या समूह को नहीं।

अपने व्यक्तिगत जीवन में हम जिन चुनौतियों से रूबरू होते हैं विस्तृत रूप में वही समाज की चुनौतियां होती है इसलिए चुनौतियों से लोहा लेने के लिए पहले व्यक्तिगत स्तर पर अपने को प्रस्तुत करना होता है बाद में समूह या समाज उसके लिए प्रस्तुत होता है।

आज हमारे समक्ष क्या चुनौतियां हैं? मोटे तौर पर वर्तमान विश्व व्यवस्था के अनुरूप देखें तो पाते हैं कि समाज के लोगों में संगठन के प्रति उपेक्षा भाव, स्वार्थ जनित संबंधों का बढ़ता चलन, आधुनिकता के नाम पर कुसंस्कारों और कुरीतियों को आत्मसात करने की पवृत्ति, सामूहिकता की बजाए व्यक्तिगत विकास को प्रधानता, सामाजिक संरचना में बड़े-छोटे के अंतर को नजर अंदाज करना, संवादहीनता एवं अर्थ को ही सब कुछ मानकर मानवीयता का त्याग ऐसी चुनौतियां हैं जिनके निदान को लेकर तत्काल पहल करने की जरूरत आन पड़ी है। इन चुनौतियों से मुँह मोड़ना समाज को अंधकूप में धकेलना है और कोई भी सामाजिक चेतना सम्पन्न व्यक्ति ऐसा नहीं चाहेगा।

गहराई से विचार करें तो देखते हैं कि अर्थ आधारित सामाजिक संरचना को जबसे स्वीकृति मिली है समाज में समस्याएं तभी से अधिक बढ़ी है। मेरा आशय यह नहीं है कि अर्थ का जीवन में महत्व नहीं है। मैं यह मानता हूँ कि अर्थ सदा से मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण रहा है और आज तो सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए अर्थ की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है लेकिन इसके साथ यह भी सही है कि अर्थ तभी शोभनीय है जब वह मेहनत, लगन, ईमानदारी और प्रतिभा से अर्जित हों। येन-केन-प्रकारेन अर्थ उपार्जन की कोशिश में सफलता अगर मिलती भी है तो उसके साथ कलंक लगने का भय निरंतर बना रहता है।

अर्थ के चलन ने सादगी को हाशिये पर धकेल दिया। जीवन में चमक-दमक ही प्रधान हो गया। दिखावा, प्रदर्शन, आडम्बर की मनोवृत्ति बढ़ती गई। आज यह चरम पर है। विशेषकर वैवाहिक आयोजनों में अर्थ के दुरुपयोग का जो आलम है वह हृदय को गहरे तक बेधता है।

वैवाहिक आयोजन सिर्फ वर-वधू के गृहस्थ जीवन में प्रवेश का अवसर ही नहीं होता बल्कि यह दो परिवारों, दो कुल की रीति-रिवाजों एवं उनके कुटुम्बियों को आपस में मिलने का अवसर भी होता है। ऐसे अवसर पर, जहां सादगी, सौहार्दता, सांस्कृतिक अभिरुचि, पारंपरिक लोक व्यवहार का निदर्शन होना चाहिए वहां हम पाते हैं कि पूरा माहौल कृत्रिमता से भरा होता है। स्टेटस सिम्बल के नाम पर स्वजन परिजन के अतिरिक्त ऐसे लोगों को भारी संख्या में आमंत्रित किया जाता है जो दोनों ही परिवारों से अंतरंग नहीं होते। ऐसे लोग आमंत्रितों की संख्या में इजाफा तो करते हैं, माहौल को गरिमापूर्ण नहीं बना पाते। फिर सिर्फ खाने और दिखाने के इस चलन का औचित्य?

पिछले वर्षों में हमने यह भी देखा है कि विवाह समारोहों में अनुचित आडम्बर यथा कई-कई पार्टियों का आयोजन, मिलनी में द्रव्यों का चलन, मिलन समारोह को भी अधिक से अधिक खर्चीला बनाने का रिवाज बढ़ा है। इससे समाज में विभेद की सृष्टि हुई है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के केन्द्रीय एवं सभी प्रांतीय नेतृत्व को सामाजिक विषमता की इस खाई को पाटने की चिन्ता है और इस दिशा में ठोस पहले करते हुए पिछले दिनों में दो दिवसीय चिन्तन शिविर का आयोजन कोलकाता में किया गया जिसमें सम्मेलन से जुड़े पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा सर्वसम्मति से एक दिशानिर्देश जारी किया गया। सम्मेलन द्वारा जारी दिशा निर्देश समग्र समाज के हित में है एवं हम आशा करते हैं कि सभी इसका पालन करेंगे। हमारा उद्देश्य शांतिपूर्ण तरीके से समाज की विकृतियों का उन्मूलन है।

हम चाहेंगे कि लोग स्वयं ही यह तय करें कि समाज की विकृति को कैसे खत्म करना है। लोगों द्वारा किया गया सार्थक पहल समाज को गौरव प्रदान कर सकता है। अपनी करनी से औरों के सम्मुख नतशीश होने से बेहतर है कि क्षतशीश के साथ रहें पर गौरव को अक्षुण्य रखें।

•

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

बेहतर सोच से ही बेहतर समाज बनता है

मोहनलाल तुलस्यान, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

आधुनिकता की जो आंधी अभी चल रही हैं उसमें आदमी के सोचने की शक्ति कुंद हो गई है। वह वक्त के बहाव में बदहवास भागता जा रहा है। उसकी भावनात्मकता, संवेदनशीलता, सामूहिकता यहां तक कि मनुष्यता के मायने बदल गये हैं।

आज के युग की बिडम्बना है कि लोगों के पास घर बड़े हैं पर परिवार छोटे हैं। सुविधाओं की भरमार है लेकिन उसे भोगने के लिए समय की कमी है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से उपाधियों की भरमार हो गई है पर आत्मबोध का भाव खत्म हो रहा है। सूचना क्रांति के चलते लोगों की जानकारी बढ़ी है पर निर्णय लेने की क्षमता का ह्रास हो रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञों की बाढ़ सी आ गई है परन्तु इसके समानान्तर समस्याएं भी निरंतर बढ़ती जा रही है। चिकित्सा विज्ञान के कारनामे हमेशा चर्चे में रहते हैं मगर यह भी सच है कि आदमी का स्वास्थ्य अक्सर खराब रहता है।

सभ्यता की प्रगति के साथ जीवनशैली का विकास इतना हो गया है कि महीनों में घर के साजोसामान को बदलने की जरूरत होती है पर वर्षों तक अपने प्रियजनों से मिलने का समय निकालना कठिन हो जाता है।

चांद पर जाकर लौट चुकी मानवी सभ्यता की त्रासदी यह है कि पड़ोसी के घर की ख़बर अखबारों में पढ़कर पता चलता है। संवादहीनता ने चेतनाशक्ति को शून्य कर दिया है।

वस्तुत: आज हमारा जीवन एकांकी होता जा रहा है। एक तरफ सभ्यता के विकास में नित-नव आयां जुड़ रहे हैं, वैज्ञानिक आविष्कारों की चकाचौंध में आदमी सुख के संसाधनों को अधिक से अधिक केन्द्रित कर लेने की होड़ में पागल हुआ जा रहा है, व्यक्तिगत जीवन इतना महत्वपूर्ण होता जा रहा है कि सामाजिक जीवन की ओर देखने का वक्त निकालना मुश्किल हो रहा है वहीं दूसरी ओर आत्मीयता और आंतरिकता जीवन से दूर होती जा रही है। हमारी सोच का दायरा निरंतर सिकुड़ता जा रहा है।

हमारे व्यक्तित्व और कृतित्व के निर्माण और निर्धारण में सोच की अहम भूमिका होती है। हम जैसा सोचते हैं वैसा ही करते हैं और जैसा करते हैं वैसा ही परिणाम हमें मिलता है। सोच सकारात्मक हो, विकासोन्मुखी हो, विवेकपूर्ण व मानवीयता से युक्त हो तो परिवार एवं समाज के साथ-साथ राष्ट्र की दिशा और दशा के निर्माण में हम महत्वपूर्ण साबित हो सकते हैं वहीं संकीर्ण व नकारात्मक सोच से न सिर्फ राष्ट्र और समाज बल्कि अपने परिवार तक के लिए हम समस्या का कारण बन जाते हैं। इसलिए जीवन में बेहतर कुछ करने के लिए सोच का बेहतर होना बहुत जरूरी है।

सोच बेहतर हो इसके लिए सबसे पहले हमारे इर्द-गिर्द के माहौल का बेहतर होना आवश्यक है। माहौल ही हमारे संस्कारों का निर्माण करता है। अपने परिवार और समाज से ही हम सर्वाधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। अतएव परिवार समाज के माहौल में सद्भावना, सौहाद्रता और सहयोगिता की भावना हो, यह अत्यन्त जरूरी है।

हम अपने समाज के अतीत और वर्तमान की परिस्थिति पर गंभीरता से विचार करें तो सोच के अंतर का पता स्वत: चल जाएगा।

राजस्थान, हरियाणा और मालवा की भूमि छोड़कर बेहतर जीवन के संदान में जब हमारे पूर्वज दिशावर को निकले थे तो व उनके पास न संसाधन था और न ही उनकी परिचिति थी। सिर्फ सकारात्मक सोच की सम्पदा उनके पास थी। मेहनत की ताकत और हर माहौल में डल जाने की उदारता के बूते उन्होंने मातृभूमि से सैकड़ों, हजारों कोस दूर जाकर भी अपना सिक्का जमाया। उनकी सोच की व्यापकता का ही कमाल था कि कहीं भी स्थानीय निवासियों की घृणा और उपेक्षा का शिकार नहीं होना पड़ा और वे क्रमश: उन्नति पथ पर अग्रसर होते गये। सबको साथ लेकर चलने की दूरदर्शिता ने उन्हें सुरक्षा उपलब्ध कराया। अपने साथ औरों के जीवन स्तर को आगे बढ़ा उन्होंने अपनी मानवीय छवि बनाई। ऐसा करने के पीछे उन्होंने कभी भी अहं को आड़े नहीं आने दिया क्योंकि वे जानते थे कि-

मैं बहुत ऊंचा हूं रहूं अलग सब से
मन में पहाड़ के ये बात आयी जब से
सूख गया रस, तन-मन बने पत्थर के
भूमि पर लदा है बोझ सा वह तब से।

लेकिन आज सोच में ही खोट आ गयी है। शिक्षा है, धन है, आलीशान घर है, परिवार है पर जीवन में सुख-शांति नहीं है क्योंकि पूर्वजों के आदर्शों को तिलांजलि देकर आधुनिकता की आंधी में लोग ऐसे बह रहे हैं कि उन्हें इन कारणों को खोजने की फुर्सत ही नहीं है। लोगों की सोच अपने तक सीमित है। व्यापक सोच और सबको साथ लेकर चलने की सदाशयता लोग भूल रहे हैं।

मानव सभ्यता का विकास सोच का ही प्रतिफल है। अतीत में लोगों ने जैसा सोचा, जैसा किया उसी के अनुरूप सभ्यताओं का उत्थान-पतन होता रहा। आज का सच भी यही है। फैसला हमें करना है कि उन्नत सोच के सहारे हम बेहतर भविष्य बनाएंगे अथवा संकीर्ण सोच से बिखंडित समाज और परिवार।

●

विलास विनाश है।

नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन

नववर्ष तुम्हारा अभिनन्दन, नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।
हो नई क्रान्ति हर घर में, न रहे अशान्ति किसी मन में॥
क्या उठा पटक के टक्कर में, बदलाव हो रहा जीवन में।
कृति को सम्मान मिलेगा ही, सद्भाव संजोये रहो मन में॥ नव वर्ष......1
न डरें किसी से कभी भी हम, बनने न किसी को दें दानव हम।
हम चरित्रवान निश्छल रहकर, करते हैं प्रेम का आवाहन॥
हम कृति के पक्के साधक हैं, सन्मार्ग बनाते रहते हम।
अपने भविष्य के लिए सदा, करते हैं हम प्रभु से वन्दन॥ नव वर्ष.......2
निर्भय होकर जीते हैं हम, मानवता का सुख पाते हम।
हम क्यों अतीत में जायें फिर, नव युग के सृजन को जाते हम॥
हम त्याग भावना के आगे, नतमस्तक रहते हैं हरदम।
मन के विचार बदलो मानव, अब और न सह सकते क्रन्दन॥ नव वर्ष.......3
सद्भावना के हम अनुयायी, सद्सृजन में ही है चतुराई।
अनुकूल भावना लाने को, हम रोज बजाते शहनाई॥
बदलो अब खुद को 'तुलस्यान', क्यों जीर्ण-शीर्ण में पड़े हैं हम।
शुभागमन तुम्हारा, नया वर्ष, तेरे स्वागत में लगे हैं हम॥ नव वर्ष......4

–जगदीश प्रसाद 'तुलस्यान' मुजफ्फरपुर, बिहार

With best compliments from :

SKIPPER STEELS LIMITED

MANUFACTURER OF STEEL PIPES, SWAGED
TYPE POLES, GROUND BASED & ROOF
TOP TELECOM TOWERS,
TRANSMISSION LINE TOWERS

OPERATOR
Horizontal Directional Drilling Machine
For under ground Cable and Pipe Lying
Using Trench less Technology

Registered Office
5D, Crescent Tower
229, AJC Bose Road
Kolkata – 700 020
Phone No. 2289-2327/28
Fax No. 91-033-22892328
E-Mail: mail@bansalgroup.co.in

Factory:
National Highway No. VI
Vill: JANGALPUR
Post: ANDUL MOURI
Dist: HOWRAH (W.B.)
Phone No. 26691251/52
Fax No. 2669-5973

स्व. भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार–2006 से सम्मानित

श्री गणपतराय धानुका

रौशन रहे यह दीपक

गणपतरायजी को उम्र के इस पड़ाव पर इस बात का बेहद अफसोस है कि समाज को जोड़ने, एकजुट करने का काम अधूरा रह गया। इस दिशा में वे अपनी युवा अवस्था से लगे हैं। वे मानते हैं कि समाज के अंदर कई संगठनों का गठन हो जाने से समाज टुकड़ों में बंटकर कमजोर हो गया है। असम में समाज के लोगों की पहचान सिर्फ मारवाड़ी के रूप में है। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन इकलौता संगठन था। आज सभी जातियों के अलग-अलग संगठन हो गए हैं। इससे समाज बंट गया है। समाज और प्रदेश के हित में एक सशक्त और संयुक्त संगठन जरूरी है। मजबूत संगठन रहेगा तभी अन्याय और असुविधाओं के खिलाफ आवाज उठाई जा सकती है।

कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं होता
तबीयत से एक पत्थर तो उछालो यारो।

गणपतराय धानुका अपने जीवन में इन्हीं पंक्तियों को जीते रहे। अपने लिए तो सभी जीते हैं। विरले ही ऐसे इंसान पैदा होते हैं, जो पूरे समाज के लिए जीते हैं। गणपतराय जी ऐसे ही चंद लोगों में एक हैं। बात चाहे समाज की आवाज बुलंद करने की हो या जुल्म के खिलाफ प्रतिवाद करने की। सर पर कफन बांधकर निकल जाते थे। सामाजिक व रचनात्मक कार्यों का साकार करने में उनकी अग्रणी भूमिका रही हैं। गणपतराय उस शख्स का नाम है, जिसने पूरे समाज को जोड़ने की जद्दोजहद जारी रखी। अभी वे करीब 97 साल के हो चुके हैं, लेकिन आज भी उनसे बातचीत करने, उनकी आवाज की बुलंदी से ही पता चल जाता है कि अपने यौवनकाल में उनके हौसले कितने बुलंद थे। आज समाज की युवा पीढ़ी को अतीत के उन भयानक लम्हों का अहसास नहीं है, जब पूरे समाज का अस्तित्व हिल रहा था। तब गणपतरायजी जैसे कुछ साहसी पुरुष ही आगे आए थे समाज को बचाने और अन्याय के खिलाफ प्रतिवाद करने के लिए। उनके पीछे पूरा समाज खड़ा था। मेरा संकेत 1969 में फैंसीबाजार पर हुए हमले की तरफ है।

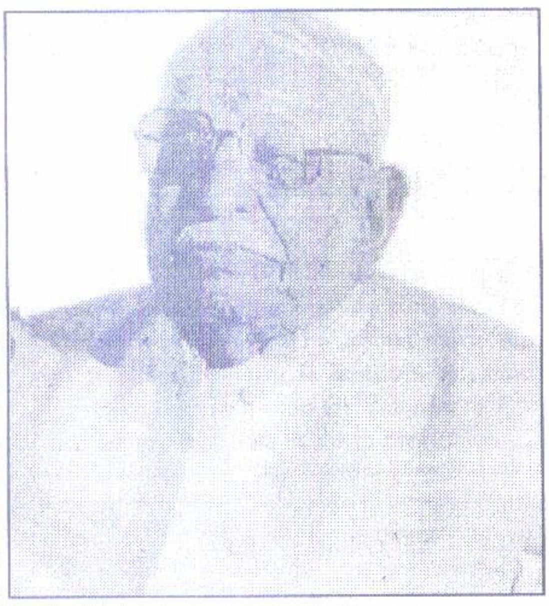

स्वतंत्रता संग्राम में भाग ले चुके और राष्ट्रीय एकता के लिए समर्पित गणपतरायजी से अपने ही घर में भेदभाव बर्दाश्त नहीं हुआ और जुल्म के खिलाफ सड़क पर उतर गए।

गणपतरायजी के शब्दों में, 'घरों पर पत्थर चलाए जा रहे थे। कई घरों में आग लगा दी गई थी। उस वक्त विजय भगवती कांग्रेस के अध्यक्ष थे। स्व. विमला प्रसाद चालिहा मुख्यमंत्री के साथ गृहमंत्री का भी काम देखते थे। प्रभुदयाल जी कामरूप चैंबर आफ कामर्स के अध्यक्ष थे। मैं आगे बढ़ा। लोग पत्थर चला रहे थे और पुलिस बंदूक नीचे झुकाकर तमाशबीन बनी हुई थी। हमलोगों ने विरोध में बाजार बंद करवा दिया। मैं विजय भगवती के पास गया और पूछा-ये सब क्या हो रहा है। वे भी मर्माहत थे। यह बात दिल्ली तक पहुँची। उस घटना की जांच के लिए केंद्र सरकार ने एक समिति भेजी। सारे लोग बैठे थे। मुख्यमंत्री चालिहा भी थे। मैंने उठकर पूछा-जब समाज के लोगों पर हमले हो रहे थे, तब पुलिस बंदूक झुकाकर क्यों खड़ी थी। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया-अब ऐसा नहीं होगा। बाद में मुख्यमंत्री चालिहा बाजार में आए और बैठक की। लोगों को सुरक्षा का आश्वासन दिया। उसके बाद ही बाजार खुला।' इसी घटना से गणपतरायजी के हौसले का पता चल जाता है। उस दौर में केदारमलजी ब्राह्मण, देवीदत्त सांगानेरिया, राधाकिशन सिवोटिया,

श्यामसुंदर गोयनका जैसे व्यक्ति सामाजिक कार्यों में बढ़ा चढ़कर हिस्सा लेते थे। गौहाटी गौशाला के निर्माण में इन हस्तियों ने सराहनीय भूमिका निभाई।

गणपतरायजी के पौत्र अशोक धानुका बताते हैं कि दादाजी व्यक्तिगत जीवन में भी नियम के पक्के और अनुशासन प्रिय हैं। उनका हर कार्य नियम और समय में बंधा है। जब कोई इसमें इधर-उधर करता है तो वे काफी नाराज हो जाते हैं। अभी भी उनके खाने-पीने, पूजा करने और सोने का समय तय है।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सभा को सम्बोधित करते हुए श्री धानुका जी। साथ में परिलक्षित है सम्मेलन उप सभापति श्री ओंकारमल अग्रवाल।

वे कामरूप चैंबर आफ कामर्स के अध्यक्ष पद पर भी रहें। 1956 में जब कांग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन गुवाहाटी में हुआ तो उन्होंने आयोजन समिति के वित्त प्रबंधन का दायित्व संभाला और तत्कालीन केंद्रीय मंत्री मोतीलाल बोरा के कंधे से कंधा मिलाकर अधिवेशन को सफल बनाया। वे पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, असम आयल मिल्स और असम राइश मिल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष पद पर भी रहे। धार्मिक कार्यों में भी उनकी गहरी रूचि थी। धार्मिक पत्रिका कल्याण के प्रकाशन में सहयोग किया तथा गीता समाज मंदिर के न्यासी और कोषाध्यक्ष भी रहे।

चैंबर ऑफ कामर्स हो या मारवाड़ी सम्मेलन, गणपतरायजी जहां रहे, समाज को जोड़ने का काम ही करते रहे। अन्याय उन्हें बर्दाश्त नहीं है। किसी एक व्यापारी की गलती के लिए पूरे समाज को गाली देने का वे हमेशा विरोध करते थे और इसके लिए कोई भी मुसीबत झेलने को तैयार रहते थे। एक बार असम राइस मिल्स एसोसिएशन का सम्मेलन था। तब स्व. महेंद्र मोहन चौधरी खाद्य और नागरिक मंत्री थे। वे सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। उस सम्मेलन में ही उनकी मंत्रीजी से बहस हो गई-''उस बैठक में मंत्री महोदय

सफरनामा

- जन्मभूमि : कोलकाता : वर्तमान अवस्था 97 वर्ष। बचपन से ही धार्मिक कार्यों में रुचि।
- सन् 1926 में बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी से पण्डित की उपाधि प्राप्त।
- सन् 1928 में संस्कृत से मध्यमा के 2 खण्ड उत्तीर्ण किए।
- युवावस्था में क्रांतिकारी-दार्शनिक हनुमान प्रसाद पोद्दार (संपादक 'कल्याण') तथा आध्यात्मिक चिंतक जयदयाल गोयनका के निकट सम्पर्क से विशेष प्रभावित हुए। वर्धा में महात्मा गांधी का भी आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर जनसेवा की ओर प्रवृत्ति विकसित हुई।
- सत्ता एवं सम्पदा से अप्रभावित सिद्धांतनिष्ठ समाजसेवी जो अनवरत प्रवाह निरपेक्ष रहकर विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर गतिमान रहे। आपकी वाणी का संयम और दिमाग का ठण्डापन अद्भुत है।
- 1942 में द्वितीय महायुद्ध के समय बर्मा से जो शरणार्थी आए, उनकी असम मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष के नाते सेवा की।
- हिन्दी शिशु निकेतन गोहाटी की स्थापना में अग्रणी हाथ। पीएस धानुका बालिका विद्यालय के आलीशान भवन निर्माण में सहयोग।
- असम राइस मिल्स तथा असम आयल मिल्स एसोसिएशन के अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे। टीबी अस्पताल तथा भुवनेश्वर बरुवा कैंसर हास्पीटल के संस्थापक सदस्य।
- नारंगी स्थित गीता मंदिर की कार्यकारिणी समिति तथा ट्रस्टबोर्ड के ट्रस्टी एवं कोषाध्यक्षा इस दिशा में पंजाब के पूर्व राज्यपाल महेन्द्र मोहन चौधरी का विशेष सहयोग।
- कलकत्ता मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आजीवन सदस्य। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी सम्मेलन-शिक्षा कोष, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिगंबर जैन पंचायत (गौहाटी) के अतिरिक्त राजस्थान की अनेक जन कल्याणकारी संस्थाएं भी श्री धानुका के परामर्श से लाभान्वित होती रहीं।
- गौहाटी-गोशाला से आपका विगत 46 वर्षों से घनिष्ठ संबंध। गोसेवा आपके जीवन का मिशन बन गया है।
- तुलसीदास की अमर कृति 'श्रीरामचरितमानस' का इनके जीवन पर अद्भुत प्रभाव तथा एक सुवक्ता की हैसियत से उसकी शिक्षा का प्रचार-प्रसार।
- श्री धानुका असम में 1930 में आए व तभी से यहां के जन-जीवन का सूक्ष्म निरीक्षण। श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय के माध्यम से आपने अपना सार्वजनिक जीवन प्रारंभ किया और फिर असम के वातावरण में समरस होते गए।
- सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओं की प्रगति में तन-मन-धन से योगदान। एलओजी हिंदी हाईस्कूल के कार्य-कलाप में खास रुचि। विद्यालय के सभी छात्रों के प्रति अगाध स्नेह, भाव।
- श्री धानुका की जागरूक समाजसेवा तथा सर्वांगीण जनहित-कार्यक्षमता का ही परिणाम रहा कि ऋषि कुल ब्रह्मचर्याश्रम रतनगढ़ ने आपको 'समाज भूषण' की पदवी से सम्मानित किया। कई संगठनों-संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

भंवरमल सिंघी समाजसेवा पुरस्कार 2005 वयोवृद्ध समाजसेवी गणपत राय धानुका को

2005 वर्ष का सम्मेलन द्वारा स्थापित भंवरमल सिंधी समाज सेवा पुरस्कार असम के सुप्रसिद्ध 84 वर्षीय समाजसेवी एवं सम्मेलन के अभिभावक श्री गणपत राय धानुका को प्रदान करने का सर्वसम्मत निर्णय चयन मण्डल द्वारा 4 दिसम्बर 2006 को श्री नन्दकिशोर जालान की अध्यक्षता में लिया गया है।

व्यापारियों को गाली देने लगे और कहा कि व्यापारी कृत्रिम संकट पैदा करके वस्तुओं का ज्यादा दाम ले रहे हैं। मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ। अपने भाषण में मैंने कहा-होजाई, कानपुर आदि शहरों में सैकड़ों ट्रक परमिट के इंतजार में खड़े हैं। सरकार समय पर परमिट क्यों नहीं देती है। सामान नष्ट हो रहे हैं। इस स्थिति के लिए सरकार जिम्मेदार है। इतना सुनने बाद मंच पर बैठे कांग्रेस के तत्कालीन राष्ट्रीय नेता रामसेवक सिंह ने मुझसे चुप रहने का अनुरोध किया।'' इस पत्रकार से बातचीत के दौरान उन्होंने सभी व्यापारियों को चोर बताने की मंत्री और अधिकारियों की प्रवृत्ति पर रोष जताते हुए कहा कि अब समाज के लोगों में वह जोर नहीं दिखता है। समाज और संगठन कमजोर हो गया है। लोगों का आत्मबल गिर गया है। हम चोरी नहीं करते हैं तो क्यों गालियां सुनें। इसका विरोध होना चाहिए। अब तो उम्र हो गई। जितना कर सकता था, किया।

गणपतरायजी को उम्र के इस पड़ाव पर इस बात का बेहद अफसोस है कि समाज को जोड़ने, एकजुट करने का काम अधूरा रह गया। इस दिशा में वे अपनी युवा अवस्था से लगे थे। वे मानते हैं कि समाज के अन्दर कई संगठनों का गठन हो जाने से समाज टुकड़ों में बंट जाने से कमजोर हो गया है। असम में समाज के लोगों की पहचान सिर्फ मारवाड़ी के रूप में है। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन इकलौता संगठन था। आज सभी जातियों के अलग-अलग संगठन हो गए हैं। इससे समाज बँट गया है। समाज और प्रदेश के हित में एक सशक्त और संयुक्त संगठन जरूरी है। मजबूत संगठन रहेगा तभी अन्याय और असुविधाओं के खिलाफ आवाज उठाई जा सकती है। इस बात की बेचैनी का आभास उनकी बातचीत में दिखता है। जब मैंने उनसे पूछा कि वैसी इच्छा क्या है, जो पूरी नहीं हो पाई तो उन्होंने कहा-मैं चाहता हूं कि समाज संगठित हो, चाहे मारवाड़ी सम्मेलन हो या चैंबर, सभी एकजुट रहेंगे तभी समस्याओं और खतरों का मुकाबला कर सकेंगे।

गणपतरायजी के लिए पद और सम्मान मायने नहीं रखता है। वे जिस पद पर रहे, उस पद की गरिमा बढ़ाई। उनको सम्मान देकर सम्मान की शोभा बढ़ी। मैंने इस बातों का उल्लेख महज इसलिए किया है कि पाठकों को गणपतरायजी के संपूर्ण अवदानों का मूल्यांकन करने और उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने में सुविधा हो। ●

समाज के सजग सैनिक

ओंकारमल अग्रवाल
(उपाध्यक्ष-अखिल भारतीवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन)

श्रद्धेय गणपत राय धानुका जी ने अपना पूरा जीवन समाज के एक सजग प्रहरी के रूप में गुजारा है। समाज के हितों की रक्षा करना और सामाजिक विकास मूलक कार्यों की निरंतरता को बनाए रखने के लिए श्री धानुका जी ने जिस सक्रिय और अनुकरणीय भूमिका का निर्वाह किया वह आने वाली कई पीढ़ियों को समाज सेवा के लिए प्रोत्साहित करेगी। एक प्रकार से देखा जाय तो वे अपने आप में एक संस्थान हैं। समाज में शायद ही कोई ऐसा संस्थान होगा, जिसमें उनकी सक्रिय उपस्थिति की महक न हो। श्री गौहाटी गौशाला, पीएम धानुका बालिका विद्यालय जैसे संस्थानों की उन्होंने जो नींव बनाई वह इतनी मजबूत थी कि आज भी ये संस्थान अपने -आप में पूरी मजबूती लिए टिके हैं। इनके सामाजिक कार्यों में एक दृढ़ स्पष्टवादिता की झलक को देखा जा सकता है। मैं समझता हूं कि धानुका जी स्वास्थ्य की दृष्टि सो भले बूढ़े हो गए हों, मगर इनके दिल में समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा आज भी किसी युवा से कम नहीं है। समाज में राजनीतिक चेतना के अभाव को इन्होंने बड़ी शिद्दत से महसूस किया। ये चाहते हैं कि समाज में न सिर्फ राजनीतिक चेतना का विकास हो, बल्कि देश की राजनीति में उसकी भागीदारी भी सुनिश्चित हो। इसलिए यदि कहा जाए कि धानुका जी हमारे समाज का वह जीता-जागता दस्तावेज है, जिसे न सिर्फ पढ़ा जा सकता है, बल्कि दिल की गहराईयों में महसूस भी किया जा सकता है।

सरोकार ही सब कुछ

अनिल जैना (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच) :

'जहां तक मुझे यह याद है वह असम गण परिषद के पहले शासनकाल की बात है, जब भृगुकुमार फूकन राज्य के गृहमंत्री हुआ करते थे। उसी दौरान जोरहाट में दंगा हुआ था, जिसमें वहां के मारवाड़ी समाज के लोगों को निशाना बनाया गया था। तब श्री फूकन ने धानुका जी से जोरहाट जाने का अनुरोध किया था ताकि वहां की स्थिति को संभाला जा सके। यह एक उदाहरण ही काफी है यह बताने के लिए कि धानुका जी समाज के लिए कितने सम्मानित व्यक्ति हैं।

इस उम्र में भी उनकी सक्रियता युवाओं के लिए प्रेरणादायक है। विभिन्न सामाजिक संस्थानों को आगे बढ़ाने की और उनको सुचारू रूप से संचालित करने संबंधी उनमें जो गुण हैं, वह 'गाड गिफ्टेड' ही हो सकते हैं। मैंने उनको उन सामाजिक संस्थानों के लिए सदैव चिंतित और चिंतनशील पाया है, जिन संस्थानों से वे आज सीधे जुड़े तो नहीं हैं, मगर आज भी उनके मन में काफी गहरे तक बसे हुए हैं। उनका गौरवशाली अतीत किसी के लिए भी एक ऐसा अध्याय बन सकता है, जिसे पढ़कर कोई भी अपने सामाजिक सरोकारों के मानदंडों को तय कर सकता है। जहां तक अन्य समाज में उनके महत्व की बात है तो स्थानीय समाज में भी उनकी छवि दयावान व्यक्ति की है।

शुभकामनाओं सहित :-

चिरंजीलाल अग्रवाल

17, बी एवं सी, एवरेस्ट हाउस
46-सी, चौरंगी रोड, कोलकाता-71

दूरभाष : 2288-6439
मोबाइल : 98302-90333

स्व. सीताराम रूंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार 2006

श्री गजानन वर्मा

राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार 2006

गीत सम्राट गजानन्द वर्मा को

लोकप्रिय राजस्थानी गीतों के सम्राट श्री गजानन्द वर्मा को सर्वसम्मति से स्व. सीताराम रूंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार 2005 के लिए चुना गया। यह निर्णय चयन समिति की 4 दिसम्बर 2006 को श्री नन्दकिशोर जालान की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में लिया गया। वर्तमान में कोटा निवासी श्री वर्मा को सम्मेलन के 72वें स्थापना दिवस समारोह में 25 दिसम्बर 2006 को पुरस्कृत किया जायेगा।

जीवन परिचय

- जन्म - रतनगढ़ (राजस्थान) दिनांक 23 मई 1926।
- शिक्षा - रतनगढ़ और आगरा में।
- सन् 1945-46 में ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया मंडी में शिक्षक और पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर स्वामी केशवानन्दजी के संरक्षण में कार्य किया।
- सन् 1947-48 में 'जनपथ' साप्ताहिक, कलकत्ता के संयुक्त संपादक-पद पर कार्य किया।
- सन् 1950 से 1953 तक बालभारती, बीकानेर तथा रामपुरिया विद्यानिकेतन, गंगाशहर (बीकानेर) में शिक्षक के रूप में कार्य किया व बाल-रंगमंच के संस्थापक रहे।
- प्रसिद्ध कथाकार श्री प्रेमचन्द का 'हंस' मासिक पत्र बन्द हो जाने पर सन् 1953-54 में प्रगतिशील द्वैमासिक पत्रिका 'नई चेतना' बीकानेर के संपादकों में से एक। सलाहकार मण्डल में - सर्व श्री राहुल सांकृत्यायन, भगवतशरण उपाध्याय व शिवदान सिंह चौहान।
- राजस्थान कला केन्द्र, बीकानेर (राजस्थान इप्टा) के संस्थापक सचिव रहे एवं अखिल भारतीय प्रदर्शनों/प्रस्तुतियों में बीकानेर राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया।
- सन् 1954 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के रतनगढ़ आगमन पर उनके सम्मान में काव्यपाठ। उनका गीत 'चाह यह मेरी अकिंचन' तत्कालीन मासिक पत्र 'विशाल भारत' (कलकत्ता) तथा राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रंथ में प्रकाशित।
- सन् 1958 में पुतलीघर (कठपुतली) नाट्य संस्थान, नई दिल्ली के संस्थापकों संचालकों में से एक। पुतलीघर नाट्य संस्थान का उद्घाटन IFACS ऑडिटोरियम नई दिल्ली के मंच पर पं. जवाहरलाल जी नेहरू ने किया। अमर सिंह राठौड़ कठपुतली नाटक के लेखक। अमरसिंह कठपुतली नाटिका के लिए उदयपुर में हुई अखिल भारतीय प्रतिस्पर्धा में पुतलीघर की नाटिका को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। केन्द्र के तत्कालीन मंत्री प्रो. हुमायूं कबीर के हाथों पुरस्कार प्राप्त।
- सन् 1957-58 में जामिया मिल्लिया ओखला (नई दिल्ली) के रिसर्च ट्रेनिंग एण्ड प्रोडक्शन सेन्टर के सर्वेक्षक पद पर कार्य किया। देश के 5 हिन्दी भाषी प्रान्तों के अनेक गांवों में भ्रमण किया। भारतीय हिन्दी क्षेत्रों, विशेषकर राजस्थानी लोकगीतों का व्यापक अध्ययन किया। उ. प्र. के लोकगीतों पर शोध प्रबंध ग्रन्थ का लेखन किया जो अभी अप्रकाशित है। राजस्थानी के सैकड़ों स्वयं लिखित वैवाहिक लोकगीतों व प्रचलित गीतों का भण्डार है उनके पास।
- सन् 1958 में सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशक श्री सलिल चौधरी के साथ कार्य किया। 'बम्बई यूथ कोयर' में राजस्थानी गीत विभाग के संयोजक रहे। सहयोगी थे स्व. मुकेश, शंकर शैलेन्द्र तथा सुगायक किशोर कुमार की पूर्व धर्मपत्नी रूमा गांगुली, अब वे रूमा गुहा ठाकुरता हैं।
- दी ग्रामोफन कम्पनी (एच. एम. व्ही.) के सुगायक। आपकी सुमधुर आवाज में कई ग्रामोफोन रेकॉर्ड्स और कैसेट्स निकल चुके हैं। राजस्थान लोकशैली के लोकगीतों एवं निजी गीतों के प्रख्यात गायक व संगीतकार।
- अखिल भारतीय स्तर के वरिष्ठ कवि-गीतकार, सुगायक तथा नृत्य नाटककार।
- बंगला और असमिया फिल्मों के हिन्दी व राजस्थानी गीतकार अभिनेता। फिल्मों के नाम 'जाली' 'लोटी-घोटी' तथा 'चिकमिक बिजुली'। निर्देशक डॉ. भूपेन हजारिका।
- 'मेरा धर्म मेरी माँ' तथा 'चमेली मेमसाब' हिन्दी फिल्मों के लोकप्रिय गीतकार, जिसके संगीतकार थे दादा साहब फालके पुरस्कार विजेता पद्मभूषण डॉ. भूपेन हजारिका।

- प्रयोगात्मक राजस्थानी लघु फिल्म 'हळदी को रंग-सुरंग' के लेखक, निर्देशक, निर्माता तथा संगीत निर्देशक।
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों के लोकप्रिय गीतकार-कवि।
- राजस्थान साहित्य तथा संगीत नाटक अकादमियों के भूतपूर्व सदस्य तथा कार्यकारिणी-सदस्य।
- राष्ट्रीय कला मण्डल, जोधपुर के भूतपूर्व कार्यवाहक सचिव।
- अनेकानेक साहित्य, संगीत एवं सामाजिक संस्थाओं के सम्मानित, विशेषत: राजस्थानी विकास मंच (राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार विश्वविद्यालय) जालौर से प्रदत्त राजस्थानी साहित्य के 'डॉक्टर' की मानद उपाधि से विभूषित।
- 'रिमझिम', रितुरंग (मुंबई), संस्कृति संगम, राजस्थान कला केन्द्र, कोलकाता संस्थाओं के भूतपूर्व सचिव।
- 'बनड़ौ-बनड़ी' राजस्थानी विडियो-फिल्म के लोकप्रिय संगीत निर्देशक तथा 'सपनौ और कुरजां' विडियो-फिल्म एवं फुटकर गीतों के गीतकार तथा संगीत-निर्देशक। लगभग हजार-डेढ़ हजार गीतों के रचयिता।
- निर्माणाधीन संगीत प्रधान राजस्थानी फिल्म 'एक छोरी काळती' के गीतकार एवं संगीत निर्देशक। इस फिल्म के संगीत पर्यवेक्षक हैं डॉ. भूपेन हजारिका।
- 'बारहमासा' 'चौमासा' 'घूघरां का बोल' 'मीराबाई' 'सुहागरात' 'सत्तर खान बहत्तर उमराव' आदि नृत्य-नाटकों के लेखक-निर्देशक एवं संगीत निर्देशक। 27 मई 1968 को मीराबाई का मंचन तो श्रीराम भारतीय कला केन्द्र नई दिल्ली की संस्था ने भी किया। विश्व हिन्दी सम्मेलन के लिए नागपुर में 'मीराबाई' का प्रदर्शन हुआ।
- राजस्थानी लोक-संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए केन्द्रीय (राष्ट्रीय) संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली का राष्ट्रीय पुरस्कार (अकादमी अवार्ड) महामहिम उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत जी के कर कमलों द्वारा दिनांक 12 मई 2001 को नई दिल्ली के अशोका होटल में प्राप्त।
- 'मीरा' गीति नाटक बिनानी न्यास मुंबई के लिए श्रीमती पद्मा बिनानी द्वारा निर्मित ऑडियो कैसेट के आलेखक, संदर्भ गीतकार, स्वर-बंधक, निर्देशक एवं निर्मित ऑडियो कैसेट के आलेखक, संदर्भ गीतकार, स्वर-बंधक, निर्देशक एवं संगीत निर्देशक। इस ऑडियो कैसेट का विमोचन 28 सितम्बर 2001 को मुंबई जुहू स्थित हरे कृष्ण हरे रामा ऑडिटोरियम में सिने तारिका हेमामालिनी द्वारा किया गया। अध्यक्ष थे पद्मश्री पुरुषोत्तम जालोटा मुख्य अतिथि थे दादा साहेब फालके अवार्ड प्राप्त एवं पद्मभूषण डॉ. भूपेन हजारिका एवं विशिष्ट अतिथि थीं लोकप्रिय फिल्म निर्देशिका सुश्री कल्पना आजमी।

<u>प्रकाशित पुस्तकें</u>

1. **स्पन्दन** (हिन्दी गीत-संग्रह) (1946 में लखनऊ से प्रकाशित)
2. **धरती री धुन**
3. **सोनौ निपजै रेत मैं**
   राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) से स्वर्ण पदक एवं प्रथम पुरस्कार प्राप्त।
4. **बारहमासा** (राज. काव्य)
   क्रमश: नृत्य-सम्राट उदयशंकर एं योगेन्द्र देसाई के नृत्यदल को लेकर श्री वर्मा के ही संगीत-निर्दशिन में बहुचर्चित बारहमासा व अन्य नृत्यनाटकों का मंचन। मुंबई, दिल्ली, अहमदाबाद व कलकत्ता में भव्य प्रदर्शन।
5. **चौमासा** (राज. गीति नाटक)
   कलकत्ता में नृत्य सम्राट उदयशंकर व अमलाशंकर के नृत्यदल द्वारा श्री वर्मा के संगीत निर्देश में नृत्यनाटिका के रूप में मंचन।
6. **हळदी को रंग सुरंग** (राज. विवाह संस्कार गीक लोकशैली में) लगभग 25 वर्षों से राजस्थान के प्रवासी परिवारों के विवाहों में श्री वर्मा लिखित गीतों व उनकी संगीत रचना का योगदान। श्री वर्मा के अनेक गीत लोकगीत बन गये हैं।
7. **हेलौमार सुर-सिणगार** (राजस्थानी गीत-संग्रह)
8. **मैं तेरा सुर तुम श्रुति मेरी** (हिन्दी प्रणय गीत संग्रह)
9. **भावनानुबंध** (चलचित पटकथा शैली में प्रकाशित प्रणय-गाथा)

<u>अप्रकाशित पुस्तकें</u>

1. **बूंदी री कलम, स्यांम रौ कलाम राधा रै नांव** (राज. काव्य नाटक)
2. **मीरा** (राज. गीति नाटक)
3. **हर्ष और जीण** (राज. काव्य नाटक)
4. **डूंगजी-जवारजी** (राज. काव्य नाटक)
5. **ढोला-मारू** (राज. काव्य नाटक)
6. **सत्तर खान बहत्तर उमराव** (तोगा री तरवार-राज. गीति नाटक)
7. **वीर अमर सिंह राठौड़** (कठपुतली सैली रौ राज. नाटक)
8. **राजस्थानी गीतगजरौ** (राज. गीत)
9. **मां करणी अर भजन** (राज. काव्य अर भजन)
10. **सुर-श्रुति-शृंगार** (हिन्दी गीत)
11. **हिन्दी क्षेत्रों का लोक-साहित्य** (शोध-प्रबंध)
12. **कथक नृत्याचार्य स्व. सुन्दरप्रसादजी रा नृत्य-बोल** (जयपुर घराणै री नृत्य-विधा रो अकथ कथ्य)
13. **लेनिन** (बालोपयोगी काव्य)
14. **चाल म्हारी डामकी डमाकडम** (एक हौ झींटियो - बालो. राज. नाटक)
15. **सपने वाले खिलौनों के देश में** (हिन्दी बालोपयोगी काव्य रूपक)
16. **सुनो रे कहानी सुनो** (बालोपयोगी हिन्दी नीति कथाएँ)
17. **धर कूचां धर मजला** (यात्रा-स्मरण)

गणतंत्र दिवस पर दिल्ली के लालकिले में होते रहे अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में धूम मचाने वाले लोकप्रिय ध्वनि गीतकार कवि।

स्थाई पता : चित्रकला भवन, रतनगढ़ (राज.) 331022, दूरभाष : 01567 222534 (प्रति.), दूरभाष : 01567 225305 (नि.)

संवाददाता सम्मेलन (31 अक्टूबर 2006)

सभापति श्री शर्मा द्वारा जारी विज्ञप्ति

बायें से सर्वश्री रवीन्द्र लड़िया, श्री हरिप्रसाद कानोरिया, श्री सीताराम शर्मा, श्री राम अवतार पोद्दार एवं श्री अरुण गुप्ता।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना 71 वर्ष पूर्व 25 दिसम्बर 1935 को हुई। सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन 30-31 दिसम्बर 1935 को कोलकाता के हैलिडे पार्क में हुआ। जिसकी अध्यक्षता सम्मेलन के प्रथम सभापति रायबहादुर श्री रामदेव चोखानी, एम. एल. सी. ने की।

कोलकाता (1935) से भुवनेश्वर (2006) मारवाड़ी ने एक ऐतिहासिक यात्रा तय की है। इस 71 वर्षीय यात्रा में मारवाड़ी सम्मेलन के दूरदर्शी नेतृत्व ने बहुत से ऐसे निर्णय लिये जो क्रांतिकारी एवं प्रगतिशील थे। उदाहरण के लिये—

→ 1938 में सम्मेलन ने मुनीम, गुमास्तों एवं दुकानों के कर्मचारियों के शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक विकास पर विचार करते हुए (क) सप्ताह में एक दिन की छुट्टी (ख) प्रतिदिन अधिक से अधिक 10 घंटे कार्य (ग) साल में 30 दिन सवेतन छुट्टी (घ) बीमारी की हालत में आवश्यक सुविधा का एक प्रगतिशील एवं कल्याणकारी प्रस्ताव पारित किया जो सरकारी कानून बनने के बहुत पहले समाज ने सोचा एवं प्रस्तावित किया।

→ 1940 के अधिवेशन में सम्मेलन के तात्कालीन अध्यक्ष सर बद्रीदास गोयनका ने 'दिखावा एवं आडम्बर' के प्रति सचेत किया।

→ 1947 में भीषण मतभेद एवं बहस के बावजूद सम्मेलन ने सर्वसम्मति से 'पर्दा प्रथा' के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया। घर-घर जाकर पर्दे हटाये गये एवं कार्यकर्ताओं ने गालियाँ एवं लाठियाँ तक खाई।

→ जहाँ आरम्भिक वर्षों में सम्मेलन का उद्देश्य केवल आर्थिक एवं राजनैतिक विषयों तक सीमित था, वहीं 1947 से समाज सुधार के कार्यक्रम - दहेज, दिखावा, बालिका शिक्षा, मृत भोज, आडम्बर आदि- मुख्य रूप से उभर कर सामने आये।

नया सत्र

20वें राष्ट्रीय अधिवेशन (5-6 अगस्त 2006, भुवनेश्वर) में नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने पद भार ग्रहण किया है। श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री एवं श्री हरिप्रसाद कानोड़िया कोषाध्यक्ष पद पर मनोनीत किये गये।

नये सत्र का नारा :— *समाज सुधार एवं समरसता।*

भावी कार्यक्रम

1. संगठन एवं सदस्यता

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन समग्र प्रवासी मारवाड़ी समाज की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था है।

वर्तमान में सम्मेलन दस राज्यों पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर, उत्कल, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तामिलनाडु एवं आंध्र प्रदेश में प्रांतीय सम्मेलनों के माध्यम से सक्रिय है। शीघ्र ही पाँच नये प्रांतों-दिल्ली, कर्नाटक, गुजरात, उत्तरांचल एवं छत्तीसगढ़ - में प्रांतीय सम्मेलन स्थापित किये जायेंगे।

प्रत्येक प्रांतों की अपनी सदस्यता के अतिरिक्त, जो हजारों में हैं। केन्द्रीय सम्मेलन के सारे देश के स्तर पर करीब 6 हजार सदस्य हैं, जिसे 10 गुना बड़ाकर दो वर्षों में 60 हजार करने का प्रस्ताव है। इस तरह से केंद्रीय एवं प्रांतीय सम्मेलन के कुल सदस्यों की संख्या 1 लाख के लगभग पहुंचने की आशा है।

पत्रिका

हर मारवाड़ी पैसेवाला नहीं- सीताराम शर्मा

प्रभात खबर

राष्ट्रीय चिंतन शिविर चार से

छपते छपते

लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

मारवाड़ी सम्मेलन का चिंतन शिविर

जनसत्ता

सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन का एलान

सन्मार्ग

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः

समाज सुधार एवं समरसता का नारा दिया

कोलकाता : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने आज संवाददाताओं को अपने सम्मेलन द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि उनके नये सत्र का नारा है 'समाज सुधार एवं समरसता' अर्थात स्थानीय भाषा और संस्कृति को अपनाना। [illegible]

दैनिक जागरण

मारवाड़ी सम्मेलन का चिंतन शिविर चार को

दैनिक विश्वमित्र

हिन्दी का प्राचीनतम राष्ट्रीय दैनिक

समाज सुधार के लिए चिंतन करेंगे मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारी

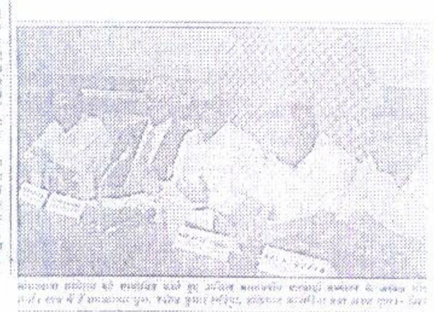

2. समाज सुधार-सम्मेलन की भिन्न पहचान

यूँ तो समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है, लेकिन इस सत्र में इसमें एक नयी तेजी लाने का प्रस्ताव है, क्योंकि समाज सुधार ही सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य एवं कार्यक्रम है एवं समाज सुधार ही मारवाड़ी सम्मेलन को किसी भी अन्य संस्था से भिन्न पहचान प्रदान करता है।

मारवाड़ी सम्मेलन सम्भवत: एकमात्र संस्था है जो अपने समाज की बुराईयों, कमियों एवं खामियों के विषय में न सिर्फ चर्चा करता है, साथ ही उसके विरुद्ध जनमत तैयार कर उनको दूर करने का सामूहिक प्रयास करता है।

आगामी 4-5 नवम्बर 2006 को एक कार्यक्रम के अन्तर्गत एवं ''राष्ट्रीय चिन्तन शिविर'' का आयोजन स्व० जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन, साल्ट लेक, कोलकाता में किया गया है जहाँ इस दो दिवसीय शिविर में सभी राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी सम्मेलन की भावी दिशा पर विचार-विमर्श कर महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

समाज सुधार के क्षेत्र विवाहों में दिखावा, आडम्बर एवं फिजूलखर्ची समाज के सामने एक ज्वलंत एवं गम्भीर प्रश्न है। चिंतन शिविर के दौरान सामाजिक एवं जातीय संगठनों से विचार विमर्श कर एक ''**सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक आचार संहिता**'' पर निर्णय लेने का प्रस्ताव है।

गिरते सामाजिक एवं नैतकि मूल्य एक चिन्ता का प्रश्न है, साथ ही बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, बुजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी आदि सामाजिक प्रश्नों पर भी विचार किया जायेगा।

3. समाज की तस्वीर

सभी मारवाड़ी, उद्योगपति, व्यापारी अथवा धनी नहीं है। मारवाड़ी समाज में भी सभी समाज की तरह उच्च, मध्यम एवं नौकरी करने वाला वर्ग है। मारवाड़ी समाज में भी बेरोजगारी है, गरीबी है।

एक तरफ जहां समाज की इस सही तस्वीर को प्रस्तुत करना है, वहीं समाज ने शिक्षा, साहित्य, कला-संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, खेल-कूद सभी क्षेत्रों में नयी ऊँचाइयाँ प्राप्त की है। समाज के इस पक्ष को उजागर करना सम्मेलन का उद्देश्य है।

4. समरसता

मारवाड़ी समाज देश के कोने कोने में बसा है। प्रवासी मारवाड़ी समाज की यह खूबी रही है कि वह जहाँ भी गया वहां के लोगों के साथ शान्तिपूर्वक मिल-जुलकर रहता है।

सम्मेलन का एक मुख्य कार्यक्रम है-समरसता। सम्मेलन चाहता है कि मारवाड़ी समाज जहां भी जाये वहां दूध में चीनी की तरह घुलकर एक हो जाये। समरसता के लिये वहां की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को जानना एवं समझना आवश्यक है। मारवाड़ी समाज अपनी भाषा एवं संस्कृति के साथ-साथ स्थानीय भाषा एवं संस्कृति को भी अपनाएं।

इस क्षेत्र में केंद्रीय मारवाड़ी सम्मेलन पश्चिम बंगाल सरकार की बंगला अकादमी के साथ मिलकर बंगला भाषा साहित्य पुरस्कार का आयोजन कोलकाता में पिछले 4-5 वर्षों से कर रही है। इस कार्यक्रम में दो पुरस्कार दिये जाते हैं—एक उस बंगला साहित्यकार को जो राजस्थान पर साहित्य सृजन करता है, दूसरा एक उदीयमान युवा साहित्यकार को उसकी बंगला साहित्य कृति के लिये।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अभी तक शंकु महाराज, चैताली चट्टोपाध्याय, ज्योतिर्मय दास, किन्नर राय, शष्ठीपद चट्टोपाध्याय, शेखर समद्दार, अहना विश्वास एवं बुद्धदेव राय को पुरस्कृत किया जा चुका है।

5. उद्यम विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

समरसता के अन्तर्गत मारवाड़ी समाज के साथ-साथ स्थानीय समाज के युवकों-युवतियों में उद्यम प्रतिभा विकसित करने के लिये अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं **इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्सपेरेशन एँड सेल्फ डेवलेपमेंट द्वारा** संयुक्त रूप से एक उद्यम विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करने का प्रस्ताव है। युवा उद्यमियों को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत उद्यम विकास के लिये अल्पकालीन कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जायेगा। समाज के सफल उद्योगपतियों द्वारा यह प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मारवाड़ी सम्मेलन भवन

कोलकाता के अमहर्स्ट स्ट्रीट में एक पाँच तल्ले का मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण का निर्णय लिया गया है। यह मारवाड़ी समाज के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करेगा। भवन में सभागार, पुस्तकालय, प्रदर्शनी गैलरी, ट्रेनिंग कार्यशाला, गेस्ट हाउस आदि की व्यवस्था की जायेगी। सम्मेलन के ट्रस्ट मारवाडी सम्मेलन फाउण्डेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के देख-रेख में भवन का कार्य हाथ में ले लिया गया है तथा फरवरी 2007 में निर्माण कार्य का शिलान्यास उप-राष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत के हाथों किये जाने का प्रस्ताव है।

7. राजनैतिक चेतना

मारवाड़ी समाज की राजनीति में भागीदारी को विकसित करने के लिये एक तीन दिवसीय राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन नयी दिल्ली में अप्रैल 2007 में आयोजित करने का प्रस्ताव है। इस सम्मेलन में समाज के सभी वर्तमान एवं भूतपूर्व सांसद, विधायक एवं पार्षदों के अतिरिक्त मान्यताप्राप्त राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों को भी आमंत्रित किया जायेगा। ''कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बनो'' का नारा दिया गया है।

8. उच्च शिक्षा न्यास

सम्मेलन ने समाज में विशेषकर बालिका शिक्षा पर सदैव जोर दिया है। इसी संदर्भ में विभिन्न राज्यों में शिक्षा कोष सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

वर्त्तमान सत्र में एक उच्च शिक्षा न्यास की स्थापना का प्रस्ताव है जो देश-विदेश के विश्वविद्यालयों में आधुनिक विषयों में उच्चतम शिक्षा के लिए सहायता प्रदान करेगा। सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल की अध्यक्षता में इस योजना को मूर्त रूप देने के लिये एक उप-समिति का गठन किया गया है।

With best compliments from

MIRONDA TRADE & COMMERCE PVT. LTD.

MERCURY INTERNATIONAL

MALVIKA COMMERCIAL PVT. LTD.

TOUCHSTONE EXPORTS

SB TOWERS, 3rd FLOOR
37, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA - 700 017

PHONE : 2289-5400
FAX : 2289-5401
email : info@mirondagroup.com

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रयोगात्मक कार्यक्रम

चिन्तन शिविर

(4–5 नवम्बर 2006, साल्टलेक कोलकाता)

- सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक आचार-संहिता पारित
- एक संस्था, एक संविधान
- राजनैतिक जागरुकता आवश्यक
- 'एक लाख सदस्य' का नारा
- सम्पन्न समाज, लेकिन विपन्न
- आत्म-सम्मान एवं आत्म गौरव
- सेवा कार्य से सम्मेलन को जोड़ें
- सम्मेलन की परिचिति बढ़े

बायें से दायें राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री सर्वश्री अरुण गुप्ता, पूर्व महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती अरुणा जैन, कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल, पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय मंगलूनिया व राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया।

कोलकाता के साल्टलेक स्थित जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन में 4-5 नवम्बर 2006 को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा अपने ढंग का प्रथम अनूठा चिन्तन शिविर का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रांतों से पधारे पदाधिकारियों एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच के पदाधिकारियों ने दो दिन तक मुक्त चिन्तन किया। प्रश्न थे – सम्मेलन को सही मायने में राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था कैसे बनाया जाये? सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य एवं कार्यक्रम क्या हो? आगामी वर्षों में सम्मेलन किन कार्यक्रमों को प्राथमिकता दें? संगठन एवं सदस्यता का क्या स्वरूप हो? इस सफल कार्यक्रम की आँखों देखी विस्तृत रपट प्रस्तुत है:-

स्व-परिचय के साथ सभा की कार्यवाही शुरू हुई।

महामंत्री **श्री राम अवतार पोद्दार** द्वारा सभी उपस्थित बंधुओं का स्वागत किया एवं प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा द्वारा समरसता का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संगठन में स्फूर्ति आयी है। नये कार्यक्रम हाथ में लिये गये हैं। कोषाध्यक्ष श्री कानोड़िया जी ने भवन निर्माण की अहम भूमिका को निभाने का संकल्प लिया है। समाज सुधार के कार्यक्रमों को तेजी से लागू करने का निर्णय लिया गया है। चिन्तन शिविर की परिकल्पना स्वयं राष्ट्र अध्यक्ष की है। अगले दो दिन इस पर विस्तार से चर्चा होगी। उन्होंने अनुरोध किया कि पदाधिकारी कम से कम बोले एवं ज्यादा से ज्यादा सुने।

श्री सीताराम शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने दीप प्रज्ज्वलित करके विधिवत चिन्तन शिविर का शुभारम्भ किया।

पदाधिकारियों – प्रांतीय अध्यक्षों की उपस्थित के लिए आभार व्यक्त किया। महिला मंच की अध्यक्षा व युवा मंच के पदाधिकारियों का स्वागत करते हुए आशा व्यक्त की कि मुख्य संगठन के साथ महिला मंच एवं युवा मंच का सक्रिय सहयोग प्रभावी सिद्ध होगा। एदर्थ संक्षिप्त भूमिका व्यक्त करते हुए चिन्तन शिविर से संभावित

सम्मेलन सभापति
श्री सीताराम शर्मा

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री राम अवतार पोद्दार

श्री मोहनलाल तुलस्यान
निवर्तमान रा. अध्यक्ष, कोलकाता

उपलब्धियों की चर्चा करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि हम पारिवारिक माहौल में इस चिन्तन शिविर में अपने विचारों का मन्थन करेंगे। हम अपने संगठन की जानकारी पूरे समाज को अभी तक पहुंचा नहीं पाये हैं - अतः प्रयास करना होगा कि हम इसे किस प्रकार प्रभावी बनाए और राष्ट्रीय स्तर का सही संगठन स्थापित करने में सफल हों। आज के चिन्तन शिविर में हम गंभीर मनन के बाद निर्धारित कार्यक्रम बनाये हैं उस पर निर्णय करके भावी कदम उठाने पर रूपरेखा तय करेंगे। हम सम्मिलित बंधुओं के विचार सुनेंगे खास करके इनके अपने अनुभव जो स्थानीय रूप से उनके हैं उनको सुनेंगे। इस शिविर के संदर्भ में प्रेस कांफ्रेन्स भी की गयी जिसको दैनिक अखबारों में विशेष रूप से स्थान दिया।

संगठन में किस प्रकार का परिवर्तन या परिवर्द्धन उचित है सदस्यता का आधार क्या हो ये ज्वलंत प्रश्न है और हमें निष्कर्ष पर पहुंचना है। सदस्यता शुल्क के बावत भी हम सही निर्णय लें। अपनी बात कहने के लिए प्रान्तीय पदाधिकारियों, युवा मंच एवं महिला संगठन को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

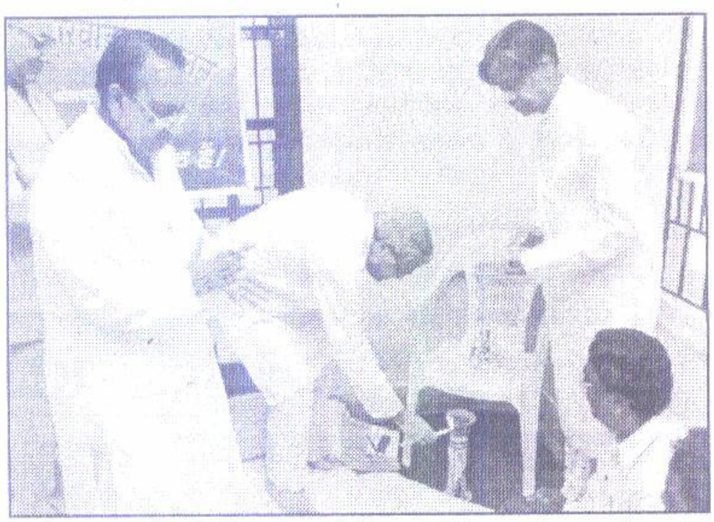

सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा चिन्तन शिविर का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए। साथ में परिलक्षित हैं उपाध्यक्ष गणेश कन्दोई। महामंत्री रामअवतार पोद्दार एवं संयुक्त महामंत्री रवीन्द्र कुमार लड़िया।

पूर्वोत्तर प्रदाशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय मंगलूनिया ने अपनी बात कहते हुए कहा कि हमारे अंचलों के विधानों में विसंगतियां हैं और इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि प्रान्तीय संविधान को थ्री टायर बनाना चाहिए।

प. बंगाल महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने संगठन को मजबूत करने के लिए सुझाव दिया कि विधान में सही परिवर्तन होना चाहिए। सदस्यता राष्ट्रीय आधार पर हो और उसकी राशि उचित रूप में पालन होनी चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर एक राष्ट्रीय पत्रिका मारवाड़ी गौरव के नाम से प्रकाशित हो।

बिहार के प्रांतीय अध्यक्ष श्री कैलाश झुनझुनवाला ने कहा कि संगठन दो तरीके से बढ़ सकता है ज्यादा से ज्यादा इसमें लोग जुड़े। सम्मेलन को ऐसे कार्यक्रम लेना पड़ेगा जिससे लोग अपने आप जुड़ेंगे। उदाहरण के तौर पर एक समय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने पूरे समाज को आदर दिया। एक प्रारूप बनाना चाहिए जिनमें मारवाड़ी समाज की उपलब्धियों का विवरण हो और उसके विस्तार से प्रचारित किया जावे। हमारा आयोजन जैसे खाटू, सालासर आदि जगहों पर मारवाड़ी सम्मेलन का शिविर लगाए एवं प्रारूप का वितरण किया जाये। अलग-अलग संगठनों के अलग-अलग विधान की जगह एकरूपता के लिए एक ही विधान हो एवं केन्द्र इस प्रकार की व्यवस्था की पहल करे और संभावित बाधाओं को हल करें।

श्री नवरतनमल सुराणा (कोलकाता) ने कहा कि बुद्धिजीवी हमारे साथ नहीं जुड़े हैं अतः एक इंटेक्चुअल फोर्म का गठन करने की जरूरत है। अग्रवाल, माहेश्वरी और ब्राह्मण समाज से जुड़े एवं सभी लोग इस संगठन से जुड़े। अधिक से अधिक दौरे करें ताकि जागरुकता बढ़े। सदस्यता शुल्क एवं सदस्यता अभियान पर विशेष चिन्तन की आवश्यकता

श्रीरामगोपाल जी अग्रवाल
'नूतन' (बिहार)

श्री ओंकार मल्ल अग्रवाल
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, असम

श्री रतन शाह
कोलकाता

श्री जुगलकिशोर जैथलिया
कोलकाता

का उन्होंने समर्थन किया।

कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सांवरमल भीमसरिया ने कहा कि संगठन एक ऐसा विषय है जिसमें समारे कार्यक्रम सम्मिलित हैं। हालात यह है कि हमारा संगठन इस समय सीमित नजर आता है यह अलग बात है हम एक-दो प्रान्तों में सक्रिय हैं। राजस्थान में तो अधिकांश तक इस संगठन की जानकारी नहीं रखते, दौरे बहुत जरूरी है अगर संगठन को प्रभावी बनाना है।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका पहली बार चिन्तन शिविर हो रहा है। संगठन की बात प्रमुख है और इसे मजबूत करना पहली आवश्यकता हो। प्रान्तों को मजबूत करने के लिए शाखाओं को मजबूत करना जरूरी है। प्रान्तों को मजबूत करने से ही राष्ट्रीय संगठन मजबूत होगा। असम की घटित घटना के लिए अविलम्ब कदम उठाये इसका विस्तार से विवरण देते हुए श्री भानीराम ने अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा की सक्रियता की सराहना की। स्थानीय संस्थाओं को आमंत्रित करना बेहद उचित है उससे संगठन का आधार बढ़ेगा। सम्मेलन से जुड़े पुराने लोगों की उपेक्षा नहीं हो। साथ ही नये लोगों को जोड़ना समय की आवश्यकता है। दोनों स्थितियों में संतुलन रखना है। उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष के सभी प्रयासों की हार्दिक सराहना की।

विभिन्न प्रदेशों से आये हुए प्रतिनिधिगण।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गणेश प्रसाद कन्दोई : संगठन को ऐसे कार्यक्रमों को अपनाना चाहिए जहां हमारा प्रतिदिन का योगदान हो जैसे गौशालाओं को स्थापित करना एवं उनकी देखरेख करना।

श्री राधेश्याम रेणवा ने कहा कि सदस्य की भूमिका क्या है इसका स्पष्टीकरण हो।

श्री जुगल किशोर जैथलिया : राजस्थान हरियाणा और उससे जुड़े क्षेत्रों की लोगों की अपनी-अपनी समस्याएं हैं और संगठन की सार्थकता भी है जब हम उन समस्याओं का समाधान करें इन क्षेत्रों के प्रभावी कार्यकर्ताओं को जोड़ना जरूरी है। विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं के बावत जानकारी हमारे लिए जरूरी है ताकि हम उनका हल निकाल सके।

राष्ट्रीय अध्यक्षा (महिला सम्मेलन) श्रीमती अरुणा जैन ने पोलियो टीका की तरह का कोई प्रान्तीय कार्यक्रम हाथ में लेना चाहिए।

श्रीमती प्रेमा पंसारी (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा-महिला सम्मेलन) ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शर्मा को धन्यवाद देते हुए यह खुशी व्यक्त की कि युवा मंच, महिला मंच एवं राष्ट्रीय संगठन एक साथ आगे बढ़ना चाहते हैं। आगामी नए अध्यक्ष को निर्वाचन 2 वर्ष पहले होना चाहिए, जैसा महिला संगठन में होता है। जरूरी है महिला मंच, युवा मंच व राष्ट्रीय सम्मेलन के विधानों में जो सबसे बढ़िया है उन्हें समाहित करें।

श्री गौरीशंकर सिंहानिया (कोलकाता) : हमारे संगठन को बहुत कम लोग जानते हैं। उनका सुझाव था कि कोलकाता को कई अंचलों में बांटना चाहिए और हर अंचल से कुछ विशिष्ट लोगों को जोड़ना चाहिए और नये-नये कार्यक्रम इन अंचलों में बनाएं। इससे पूरे कोलकाता में संगठन विशिष्टता प्राप्त करेगा। इसी ढंग से प्रान्तों में कार्य हो तो संगठन मजबूत होगा।

श्री ओमप्रकाश पोद्दार, अध्यक्ष-कोलकाता मारवाड़ी सम्मेलन: संगठन व सदस्यता दोनों मिले-जुले विषय है। कार्यक्रम केन्द्र को देना चाहिए और सही कार्यक्रम से चेतना होगी। समाज

श्री भानीराम सुरेका
कोलकाता

श्री गोपाल अग्रवाल
प्रांतीय महामंत्री (प. बंगाल)

श्री शम्भु चौधरी
कोलकाता

श्री सांवरमल भीमसरिया
कोलकाता

आपसे आशा करता है आप पहल करें। हम सेवा में लगे व्यक्तियों और संस्थाओं का राष्ट्रीय स्तर पर परिचय दें।

पूर्वांचल अध्यक्ष श्री मंगलूनिया ने कहा कि पदाधिकारियों का दौरा संगठन में अहम भूमिका निभायेगा। प्रत्येक प्रान्त एवं राष्ट्र स्तर के पदाधिकारियों का दौरा हो। उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष को धन्यवाद दिया कि उन्होंने पूर्वांचल के दौरे की स्वीकृति दी है। मारवाड़ी समाज के प्रति आदर और समान है इसको समझने की जरूरत है। हम अपने को कमजोर नहीं समझें। अलग-अलग जातीय संगठन अधिक सक्रिय है, क्षेत्रीय संगठन भी प्रभावी है फिर क्या कारण है सम्मेलन को उतनी गंभीरता से लोग क्यों नहीं लेते।

महेश जालान, पटना ने सुझाव दिया कि सदस्यता बढ़ायें- व्यक्तिगत सम्पर्क से समाज से जुड़े। निश्चित कार्यक्रम हमारी शाखाओं को दें। युवा-युवतियों को रोजगार के अवसरों के बाबत दिशा-निर्देश बताएं। युवा-युवतियों के शादी विवाह का मजबूत आधार बनायें। ऐसे कार्यक्रम से जो समाज को प्रेरित करे और अधिक लोग समाज से जुड़े। छोटे एवं बड़े बजट के कार्यक्रम बनायें। बैठकों को हाइटेक की जरूरत है। प्रचार माध्यम को पूरा उपयोग करने की जरूरत है। हमारी पहचान के लिए यह जरूरी है कार्यक्रम निर्धारित हो। शाखाओं को दिशा दें ताकि वे सार्थक कार्य कर सकें।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अपनी बात कहते हुए उन्होंने कहा कि हम एक साथ रहे ताकि संगठन मजबूत हो। हम खेमों में बंटे हुए हैं। मारवाड़ी का अर्थ है राजस्थान हरियाणा एवं मालवा प्रदेश से आए सभी एक हैं। अपना हैदराबाद का अनुभ बताते हुए उन्होंने कहा वहां माहेश्वरी और अग्रवाल दोनों खेमों सामंजस्य का अभाव है। हमें इस प्रकार वातावरण बनाना है ताकि सभी मारवाड़ी भाई एकजुट हो सके।

श्री राजेन्द्र खंडेलवाल : उन्होंने प्रेस कांफ्रेन्स के आयोजन क प्रशंसा की। उन्होंने स्पष्ट किया कि हम अपने बाबत देश को बताएं हमारा अपना वेबसाइट हो। मारवाड़ी समाज हर जगह है कि उनकी पहचान करना इस संगठन की जिम्मेवारी है। उन स बंधुओं को हमारे कार्यक्रम में शरीक करना हमारा कर्तव्य है। अलग अलग क्षेत्रों में जाक वहां के लोगों को जोड़ हमारी पहल हो चाहिए।

श्री आत्माराम सोंथलिय (कोलकाता) : उन्हों भरोसा व्यक्त किया सदस्यता संख्या बढ़ असंभव नहीं है पर जरूर है लोगों जागरुकता लाने क कार्यकर्ताओं का अभा सबसे बड़ी बाधा है, उ खोजना जरूरी है समाज विकास में अंग्रे के पृष्ट भी हो एवं इसका आकार एवं स्वरूप विस्तृत हो।

चिन्तन शिविर को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा उपस्थित है महामंत्री राम अवतार पोद्दार एवं निवर्तमान अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान।

श्री कैलाशजी झुनझुनवाला : कर्नाटक में प्रवासी बिह मारवाड़ी सम्मेलन कार्यरत है। उसका सहयोग नया प्रान्तीय सम्मेल बनाने में मिल सकता है। सदस्यता अभियान तभी सफल होगा ज हम समाज को प्रेरित कर सकेंगे और हमारा कार्यक्रम तदनुरूप हो सामूहिक विवाह परिचय सम्मेलन बहुत उपयोग सिद्ध नहीं हुए।

श्री जगदीश मुंधड़ा (कोलकाता) : सदस्यता के बाबत उचि होगा कि महिलाओं एवं युवाओं से फीस आधी ली जाये। जाते

श्री लोकनाथ डोकानिया
कोलकाता

श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया
कोलकाता

श्री ओम लड़िया
कोलकाता

श्री आत्माराम सौंथलिया
कोलकाता

संगठनों के अध्यक्षों को पदेन सदस्य बनाये। संरक्षक सदस्यों को आप आमंत्रित करें। उन सदस्यों को सम्मानित करना चाहिए जो कुछ सेवा करें।

श्री ओंकारमलजी अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : मारवाड़ी समाज के योगदान की अपनी पहचान है। नए कार्यक्रमों की जरूरत है, नई पीढ़ी को जोड़ने की जरूरत है। तमाम सारे कार्यों के बावजूद हम प्रताड़ित हो रहे हैं। आत्म सम्मान एवं आत्मगौरव को आधार बनाकर आंदोलन की जरूरत है। महज दूसरों की तुष्टि से आप स्थानीय लोगों से जुड़ नहीं पायेंगे।

पूर्व महामंत्री श्री रतन शाह ने कहा शिविर में आने पर कुछ खुशी कुछ गम महसूस हुआ। आलोचना और निगरानी के अभाव, संगठन को कमजोर कर देता है। इस आयोजन के लिए मैं धन्यवाद देता हूँ इस शिविर को निर्णायक स्तर पर पहुंचे, महज शब्दों के भ्रम जाल से बचें। यह शिविर महज सिफारिश की सीमा तक ही निर्णायक होगा। जब तक लोग जुड़ेंगे नहीं यह सार्थक नहीं रहेगा। आम राय की जरूरत है, नये कार्यक्रम स्पष्ट हो। मारवाड़ी में आत्मगौरव पैदा करने की जरूरत है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ एक पल : बायें से सर्वश्री महेश जालान, श्री सुबीर पोद्दार, श्री रवीन्द कुमार लड़िया, श्री औंकारमल अग्रवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, श्री बजरंगलाल नाहटा जी, श्री विजय कुमार मंगलूनिया एवं श्री शम्भु चौधरी।

श्री भानीराम सुरेका : विधान या गठन किसी व्यक्ति विशेष के कारण नहीं बल्कि एक सम्मिलित प्रयास है। ''मिलनी चार रुपया चांदी छोड़ कागज का रुपया'' नारे का समाज में अच्छा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने सुझाव दिया कि मिलनी में एक रुपया व एक नारिल हो।

श्री कैलाश झुनझुनवाला ने कहा कि शादी में बैंड बाजे नहीं हो।

श्री नवरतन जी सुराणाजी ने कहा सगाई घर में हो। बाजार होटलों में मिलनी में सिर्फ परिवार के लोग हो।

श्री ओम लाड़िया : इतने कम लोगों के बीच में निर्णायक फैसले उचित नहीं होंगे।

श्री लोकनाथ डोकानिया का कहना था कि वे सामाजिक सुधार के प्रति प्रतिबद्ध हैं और अपनी तरफ से इन कामों में निरन्तर प्रयत्नशील हैं। दौरे के समय लोग पूछते हैं सम्मेलन क्या कर रहा है? लोग परेशान हैं, उनके बच्चे-बच्चियों के रिश्ते नहीं हो रहे हैं। सम्मेलन को कुछ करना होगा।

श्री बजरंगलाल नाहटा ने कहा कि मर्यादा रखनी उचित है। आचार-संहिता लागू करनी चाहिए।

श्री सूर्यकरण सारस्वा : चार रुपये महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण है हम उनकी बात करे जो लाखों रुपये दहेज में लेते-देते हैं।

श्री श्याम सुन्दर पोद्दार (कटक) : वील पावर बहुत बड़ी है, हमारी इच्छा मजबूत होनी चाहिए। समाज सुधार का कार्य ठीक है परन्तु हमारी मौजूदा समस्याओं का समाधान खोजना जरूरी है।

श्री शम्भु चौधरी : अब तक सम्मेलन द्वारा पारित प्रस्तावों का पालन अग्रवाल समाज ने किया है। प्रस्तावों को बनाते वक्त समग्र

श्री सुधीर पोद्दार
कोलकाता

श्री ओमप्रकाश पोद्दार
कोलकाता

श्री महेश जालान
पटना

श्रीमती विमला डोकानिया
कोलकाता

मारवाड़ी समाज को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

श्री मोहनलाल तुलस्यान : हम वही करते हैं जो सबके लिये हो, हमें बल प्रयोग नहीं करना चाहिए। आचार-संहिता का पालन हो यह संगठन का अनुरोध है। सादगी से विवाह हो।

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया : मंच पर बैठे लोगों को पहल करके सुधार करना चाहिए। अन्तर्जातीय विवाह का नया स्वरूप उभरा है।

द्वितीय सत्र 5 नवम्बर 2006

अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा की अस्वस्थता के कारण भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी तुलस्यान ने समारोह की अध्यक्षता की।

श्री रामपाल नूतन : राजनैतिक जागरुकता व भागीदारी के बाबत समाज की अपनी भूमिका का स्वरूप क्या हो, एतदर्थ अपने अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि हमारा समाज बहुतायत में है - पटना अजीब तर्क दिया जाता है कि वहाँ चुनाव लड़ने वाले मारवाड़ी की तुलना में अन्य समाज को इसलिए वोट जरूरी था क्योंकि वह व्यक्ति मारवाड़ी समाज के हितों का संरक्षण करता है और उसके जीतने की संभावना ज्यादा है। ऐसी स्थिति में अपने समाज के व्यक्ति का समर्थन समाज के हित में नहीं होगा। दुर्भाग्य यह है कि चुनाव में शरीक होने वाले लोग सिद्धान्तों के आधार पर नहीं खड़े होते बल्कि अपने तथाकथित महत्व के आधार पर या निजी हितों को ध्यान में रखकर खड़े होते हैं। इसलिए हमें प्रयास करना होगा कि जहाँ हमारे समाज का प्रतिनिधि यदि द्वितीय स्थान पर है तब भी हम उसे प्रथम बनाने का प्रयास करें, अन्यथा हमारी स्थिति विषम हो सकती है। अनेको बार हमें विषम परिस्थितियों में निर्णय करने होते हैं। ऐसी स्थिति में सही दिशा क्या हो, यह चिन्तनीय है। कई बार ऐसी स्थितियाँ भी उभरती हैं कि मारवाड़ी समाज के अपने उम्मीदवार लोगों में प्रतिस्पर्धा होती है। बनिया, ब्राह्मण, अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन आदि विभिन्न तबकों के उत्साही लोग आपस में टकराते हैं। तब यह तय करना कि किसका समर्थन करें यह भी दुष्कर हो जाता है।

मारवाड़ी युवा मंच के सहयोगी सदस्य श्री दिलीप गोयनका, श्री बिमल चौधरी, श्री अनिल डालमिया, श्री विनोद सराफ।

श्रीमती प्रेमा पंसारी : अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि बहुत मुश्किल से समाज के लोग चुनावों में भाग लेने आगे आते हैं। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि अपने लोग ही प्रतिरोध में उपस्थित हो जाते हैं। और इसीलिए सारे प्रयास सार्थक नहीं होते हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें भाजपा की उम्मीदार के रूप में म्युनिसिपल चुनावों में टिकट मिला था, किन्तु हमारे ही समाज की एक दूसरी महिला को बम्बई के हमारे अपने समृद्धशाली लोगों ने उनके विरुद्ध खड़ा कर दिया। परिणाम यह हुआ कि हमारे समाज की हम दोनों प्रतिद्वन्दी हार गयी और अन्य ने जीत हासिल कर लिया। महिलाओं को विशेष रूप से मजबूती प्रदान करनी होगी। क्योंकि नयी व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करनी है और उसका लाभ भी समाज को मिलेगा।

श्री ओंकारमल जी अग्रवाल : उन्होंने कहा कि वे पूर्वोत्तर से हैं और वहाँ भी स्थिति का जो अनुभव है उसकी चर्चा करना उचित है। धुबड़ी क्षेत्र में 10 लाख लोग हैं उनमें 9 लाख मुस्लिम हैं। हम स्थानीय स्तर पर हर सहयोग देते हैं, फिर भी स्थानीय लोग हमें

श्रीमती अरुणा जैन
महिला सम्मेलन की रा. अध्यक्षा

श्रीमती प्रेमा पंसारी
कोलकाता

श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल
मुंगेर

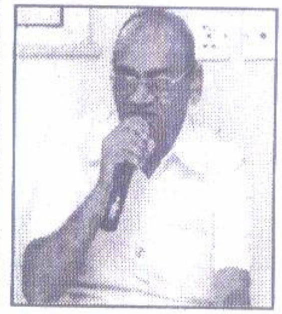

श्री बजरंगलाल नाहटा
पूर्वोत्तर

सहयोग क्यों नहीं देते। धुबड़ी में मात्र 500 मारवाड़ी घर हैं, फिर मैंने स्थानीय लोगों को अपने साथ जोड़ने का प्रयास किया और इसीलिए लोकसभा चुनावों में 2.25 लाख वोट प्राप्त हुए। यह अलग बात है कि 30 हजार वोट से हार गया। राधाकिसन खेमका, जुगल किशोर केडिया, प्रह्लाद राय जी आदि सभी बेदाग राजनीतिज्ञ हुए हैं। उन्हें भरोसा है मारवाड़ी राजनीति में आगे आयें केन्द्रीय सम्मेलन निश्चित रूप से राजनीति में भाग लेने को प्रेरित करें, ताकि हमारा समाज जागरुक बन सके।

तुष्टीकरण के बाबत अपनी बात कहते हुए उन्होंने कहा कि मारवाड़ी अपनी जन्मभूमि से आये, उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में पूरा सहयोग दिया है और स्थानीय हितों का संरक्षण किया है और विकास के कामों में तन-मन-धन से भागीदारी की। केन्द्रीय सम्मेलन को संगठित रूप से अपने लोगों को स्थानीय स्तर पर संगठित एवं सशक्त करना होगा। **(जरूरत है एक राष्ट्रीय राजनैतिक कांफ्रेन्स करके हम एक कार्यक्रम एवं दिशा-निर्देश की रूपरेखा तय करें। ताकि हमारे समाज को राजनैतिक रूप से जागरुक एवं सशक्त बनाने का रास्ता खोजा जा सके। हमारे अन्दर हीन भावना नहीं होनी चाहिए। जरूरत है कि आत्म सम्मान के साथ हम संगठित हों।)**

श्री गणेश प्रसाद कन्दोई (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) : महाज समाज सुधार हमारे उपलब्धि का कारण नहीं हो सकता। अन्य क्षेत्रों में भी परिश्रम हमें करने होंगे।

श्री जगदीश अग्रवाल : दौरा करते समय हमारे समाज के लोग जानना चाहते हैं, सम्मेलन उनके लिए क्या करता है। हमें लोगों को बताना चाहिए ताकि समाज के नजदीक आ सकें। नीति निर्धारण में स्पष्टता रहे। प्रान्तीय पदाधिकारी क्षेत्रों के स्थानीय लोगों के सुख-दु:ख के भागीदार बनें।

श्री कमन नोपानी : हमें एक सशक्त राजनीतिक मंच बनाना चाहिए, आज समाज का संगठन कमजोर है। अत: हमें राजनेताओं के पास जाना पड़ता है। संगठन मजबूत होगा तो हमारी इज्जत भी बढ़ेगी।

श्री सांवरमल भीमसरिया : अपना अनुभव बताते हुए कहा कि 1984 से वे कलकत्ता की राजनीति से जुड़े हुए हैं। बड़ाबाजार का अनुभव यह है कि हम प्रतिरोध की क्षमता खो चुके हैं और इससे हम हीन भावना से ग्रस्त हो रहे हैं। राजनैतिक जागृति पैदा करनी होगी।

श्री बंशीलाल बाहेती, श्री आत्माराम सौंथलिया, श्री गीतेश शर्मा, श्री नीलमणि राठी।

श्री ओम पोद्दार : अपनी बातों का पुरजोर शब्दों में व्यक्त करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार लम्बे समय तक श्री ईश्वर दासजी जालान ने बड़ाबाजार का जनप्रतिनिधित्व किया। किस प्रकार श्री राजेश खेतान ने हमारा प्रतिनिधित्व किया। किस प्रकार 2004 के चुनाव में किसी भी प्रमुख राजनैतिक दल ने मारवाड़ी समाज के व्यक्ति को टिकट नहीं दिया। चिन्तन शिविर में हमें रास्ता बतायें महज सतही बातें नहीं करें। सारडा के मुद्दे पर उन्होंने संगठन की चुप्पी को आश्चर्यजनक बताया। हम स्पष्टतया बतायें गलत है या सही संकोच नहीं करें।

श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल : हर समाज में कुछ गलत तत्वों का होना असंगत नहीं है। हमें मारवाड़ी होने पर गर्व होना चाहिए। कुछ लोगों के गलत कामों में पूरा समाज उपेक्षित नहीं हो जाता है। हमारे समाज की एक लड़की सविता इन्दौरिया जकरिया स्ट्रीट में मुस्लिम वोटों से पार्षद बनी है। हमें तमाम क्षेत्रों में अपने लोगों को वोटर बनाना है और जहाँ-जहाँ समाज है वहां अपनों को आगे लाकर

श्री नवरतन मल सुराणा

श्री किशोरीलाल मरतिया
देवघर

श्री हरीचरण चोखानी

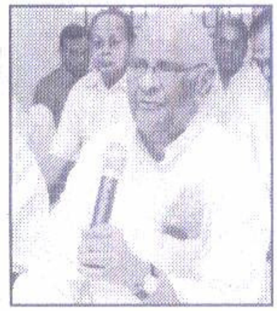

श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला
अध्यक्ष, बिहार प्रा. सम्मेलन

जयी बनाना हमारा प्रयास है। हर एक मारवाड़ी को वोटर बनाना होगा। बूथ पर जाना होगा एवं स्थानीय लोगों के साथ समरसता बनानी होगी। तभी यह अपना संगठन आगे बढ़ सकता है। इस देश के 87 प्रतिशत अखबारों पर मारवाड़ी समाज का अधिकार है। हमें अपने समाज को उनको साथ लेना चाहिए और पूरी ताकत के साथ राजनैतिक रूप से मंजबूत होकर उभरना चाहिए।

श्री निर्मल कुमार जालान (मुंगेर) : राजनीति में समाज को आगे आना चाहिए। महज जो राजनीति में है उन्हें बढ़ाना ही ध्येय नहीं हो। क्योंकि जो सफल हो जाते हैं वे हमसे दूर हो जाते हैं, वे समाज के योगदान को महत्व नहीं देते। किसी भी राजनैतिक सम्मेलन में मौजूद हमारे समाज के राजनेताओं की वचनवद्धता को स्पष्ट करना चाहिए। समाज सुधार के विषयों में कहा कि कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार कर समाज सुधार को मजबूती दी जाए। मुंगेर सम्मेलन 11-12 जनवरी को होगा। उसमें उन्होंने सभी को आमंत्रित किया।

सामाजिक एवं जातीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों के सत्र की अध्यक्षता करते हुए निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान।

श्री अरुण गुप्ता : महज मारवाड़ी समाज के वोटों के आधार पर हर जगह जीतना मुश्किल है। प्रयास यह हो कि हम अन्य समाजों में अपनी साख बढ़ायें तभी जीत संभव है।

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया : सभी राजनैतिक दलों में हम अपनी पैठ बनायें। जहां जिस पार्टी की स्थिति मजबूत हो उसका सहयोग समाज के विकास के लिये लें। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय घनश्याम दास बिड़ला ने कहा था कि हम सफल होना चाहते हैं तो हमें राजनैतिक रूप से जागरुक होना चाहिए। अपने बीच जो गलत है उसकी भर्त्सना जरूरी है परन्तु अपनों पर अत्याचार भी बर्दाश्त नहीं करें।

आत्माराम सोंथालिया : कोलकाता में करीब 20 लाख मारवाड़ी हैं, फिर भी मारवाड़ी सम्मेलन में 6000 सदस्य ही हैं। हमारे बल पर सभी राजनीतिक पार्टियां लाभान्वित होती हैं परन्तु हम स्वयं के समाज का हित नहीं साध पाते हैं। यह अलग बात है कि हमारी ज्यादा शक्ति निजी स्वार्थ में लग जाती है जो समाज के समृद्धशाली लोग विभिन्न पार्टियों को धन देते हैं। वे मारवाड़ी समाज के हित का ध्यान रखें।

श्री गोपी धुवालिया : पदाधिकारी पहले कार्यकर्ता बनें।

श्री गोविन्द शर्मा : अधिक से अधिक सदस्य बनाएं। निजी हितों में शक्ति व्यय करने के बजाय सामूहिक हित की पहल करें। मारवाड़ी समाज अपना वर्चस्व बढ़ाये।

श्री लोकनाथ डोकानिया : ऐसा चिन्तन शिविर पहली बार हो रहा है। संगठन को मजबूत करें लेकिन कथनी-करनी पर भी ध्यान रखें। जो अखबार मारवाड़ी समाज के विरुद्ध लिखे उसे हमारा समाज विज्ञापन नहीं दें।

श्री रवि लाड़िया, संयुक्त महामंत्री : सदस्यता अभियान में नये फार्म बनाये जा रहे हैं उन्हें संग्रह करने का अनुरोध किया गया।

श्री श्याम सुन्दर पोद्दार
कटक

श्री गणेश कन्दोई
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री विजय कुमार मंगलूनिया
अध्यक्ष–पूर्वोत्तर

श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल

(संविधान ऐसा हो जो केन्द्रीय, प्रान्तीय एवं शाखा स्तर पर समानता बनाये रखे। नया संविधान जरूरी है।)

श्री विजय कुमार मंगलूनिया (पूर्वोत्तर) : मारवाड़ी समाज में बढ़ते बिखराव को हटाना है। जातीय सभाओं की सक्रियता से सम्मेलन कमजोर होगा। जातीय संगठन राष्ट्रीय संगठन को सम्मान दे।

श्री बजरंगलाल नाहटा : संगठन मजबूत करने के लिए अच्छा कार्यक्रमों को बनाना होगा।

श्री रतन शाह : नीति निर्धारण जरूरी है। आम सहमति भी उतनी ही आवश्यक है। समाज को सुरक्षा कैसे प्रदान करें। यह संगठन की प्रमुख चिंता है। आत्म-गौरव की बात विस्तार से हो। संविधान में परिवर्तन की जरूरत है। कार्यक्रम बनायें जिसमें प्रमुख लोगों की भागीदारी हो एवं जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं को जोड़ें।

अध्यक्ष श्री तुलस्यान ने चिंतन शिविर में अपने अनुभव के विषय में उपस्थित बन्धुओं के विचार जाने का आग्रह किया।

जगदीश जी अग्रवाल (मुंगेर) : बड़ा अच्छा अनुभव हुआ। उपस्थिति से निराशा हुई। प्रान्तीय अध्यक्षों की उपस्थिति नहीं हो यह खेदजनक लगा। विचार-विमर्श सुनकर अच्छा लगा।

श्री ओंकारमलजी अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : अच्छा लगा। चिंतन के बाद मंथन करने की जरूरत है। जमीनी कायर्यकर्ताओं को हम जोड़ें। जब भी विपत्ति आये तो केन्द्र व प्रदेश वहां अपनी उपस्थिति कराये।

श्री गणेश जी कन्दोई, उड़ीसा : जरूरत है हमारे निर्णय लागू हो और ऐसा करने के लिए आवश्यक पहल की जरूरत है। गांवों में शाखाएं खुले, अधिक से अधिक सदस्य बने।

श्री राजेन्द्र डोडेलवाल : अर्से बाद एक शुरूआत हुई है। एक सम्मेलन और एक संविधान हो। सभी प्रदेशों का प्रतिनिधित्व हो अन्यथा संगठन बढ़ेगा नहीं। सभी प्रांतों के लोग नहीं आ सके। सम्मेलन का वेबसाइट बने। आम लोगों को जोड़ने के लिए सदस्यता शुल्क कम करे। प्रति व्यक्ति 10 नये लोगों को सदस्यता की पहल करें।

श्री नूतन : 70 वर्ष के जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव आए हैं और काम को निरन्तर बढ़ाने की जरूरत है। नये क्षेत्रों में संगठन बढ़े। चिंतन शिविर में रचनात्मक सुझाव आये हैं।

द्वितीय दिवस : तृतीय सत्र

स्थानीय जातीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों से वैवाहिक आचार–संहिता पर विचार–विमर्श

इस सत्र की परिचर्चा में सर्वश्री हरिचरण चोखानी, डा. कैलाश प्रसाद अग्रवाल, गोविन्द प्रसाद शर्मा, जगदीश प्रसाद केडिया, राधेश्याम गुप्ता, विमल चौधरी, जगदीश मुंधड़ा, अमित मुंधड़ा, राधाकृष्ण सराफ, राजेन्द्र खण्डेलवाल, विश्वनाथ भुवालका, नरेश लाखोटिया, पी. डी. भूत, गोविन्द अग्रवाल, योगेन्द्र कुमार बिहानी, कृष्ण कुमार राठी, केशवचन्द सारडा, उमेश केडिया आदि ने भाग लिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अपने समापन भाषण में कहा कि चिन्तन शिविर में आपसी बातचीत हमारा उद्देश्य था उसमें हम सफल रहे हैं क्योंकि मित्रों ने बहुत खुलकर बातचीत की है। कम उपस्थिति की चर्चा हुई है लेकिन मैं उपस्थिति से निराश नहीं

जातिगत संस्थाओं के प्रतिनिधि

श्री जोगेन्द्र कुमार बियाणी (विधाननगर माहेशवरी सभा), श्री कैलाश प्रसाद अग्रवाल (चिराना नागरिक परिषद), श्री आर. के. खण्डेलवाल (राजस्थान ब्राह्मण संघ), श्री पी. डी. भूत (भारत विकास परिषद), श्री राधा किशन सराफ, श्री नरेश लाखोटिया, श्री जे. एन. मूंदड़ा आदि कई संस्थाओं के पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया।

श्री गौरीशंकर सिंघानिया

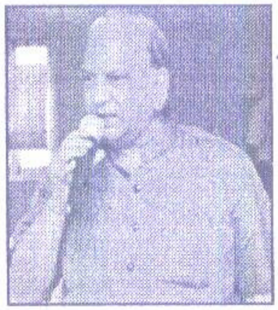

श्री जगदीश प्रसाद मूंधड़ा

श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा

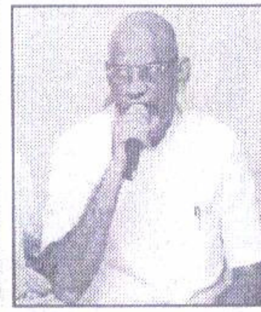

श्री रामगोपाल माहेश्वरी

हूँ। आम धारणा के विपरीत यह सार्वजनिक सभा नहीं थी। हमारे कुल आमंत्रित सदस्यों की संख्या करीब 100 थी - राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं प्रांतीय सम्मेलनों के शीर्ष पदाधिकारीगण- जिसमें से 60-70 की उपस्थिति प्रोत्साहित करती है। यह अपने ढंग का अनूठा पहला प्रयोगात्मक प्रयास था। कुछ और प्रांतों के पदाधिकारी पधारते तो और अच्छा होता। झारखंड, उत्कल एवं महाराष्ट्र प्रांतीय सम्मेलन के पदाधिकारियों के आगमन की संभावना थी।

सम्मेलन के तीन मुख्य उद्देश्य है - सुरक्षा, समाज सुधार एवं समरसता। जब तक देश में आर्थिक विषमता रहेगी तब तक सुरक्षा का प्रश्न बना रहेगा। हाल ही में असम की घटनाओं ने हमें चिन्तित किया है।

माहेश्वरी, ओसवाल, अग्रवाल, सभी जातीय संस्थायें फूले-फले एवं मजबूत हो, लेकिन अन्य समाज के लिए सभी प्रवासी राजस्थानी एवं हरियाणवी केवल 'मारवाड़ी' के रूप में ही जाने जाते हैं। इसलिए सभी प्रवासी बन्धुओं की सामूहिक बात प्रभावी ढंग से केवल मारवाड़ी सम्मेलन ही रख सकता है। हमें अपने आपको एक मजबूत संगठन के रूप में प्रस्तुत करना है इसके लिए हमें अपनी सदस्य संख्या के बढ़ाकर एक प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करना है। हमें अपनी सदस्यता को बढ़ाकर एक लाख तक ले जाना है, इस प्रयास में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय सम्मेलनों को मिलकर काम करना है।

हमें यह स्वीकार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि समाज सुधार के क्षेत्र में सम्मेलन में पिछले वर्षों में कुछ शिथिलता आयी है। समाज में तेजी से नैतिक गिरावट आयी है। आडम्बर, दिखावा, फिजूलखर्ची बढ़ी है।

मैं चिन्तन शिविर की यह एक बड़ी उपलब्धि मानता हूँ कि हमने एक सर्वमान्य न्यूनतम वैवाहिक आचार-संहिता पर सहमति प्राप्त कर उसे पारित किया है। हमें इस आचार-संहिता को देश को कोने-कोने में प्रचारित-प्रसारित करना है। इस पर आम सहमति एवं जनमत तैयार करना है। हमारा यह प्रयास सफल होगा इसमें मुझे संदेह नहीं है। मारवाड़ी समाज की सही तस्वीर प्रस्तुत करने के लिए हमें प्रयास करना है। समाज के राजनैतिक जागरुकता के लिए चिन्तन शिविर में कई महत्वपूर्ण बातें रखी गयी है। सदस्यता-संविधान पर भी बातचीत हुई है।

इस कार्यक्रमों को सफल बनाने के पीछे बहुत से लोगों का हाथ रहा है। मैं सर्वप्रथम बाहर से पधारे हमारे अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। बैठक के लिए जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन निःशुल्क मुहैया करवाने के लिए हम श्री जयनारायण गुप्ता स्मृति भवन निःशुल्क मुहैया करवाने के लिए हमें श्री राधेश्याम जी गुप्ता एवं श्री बाबूलाला जी धनानिया के आभारी हैं। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया एवं कार्यकारिणी सदस्य श्री सुबीर पोद्दार द्वारा भोजन पर आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। हमारे युवा साथियों - विनोद सराफ, दिलीप गोयनका, अनिल डालमिया, मुकेश खेतान, प्रेम सुरेलिया, शम्भु चौधरी, विमल चौधरी ने दिन-रात मेहनत की है। हमारे पदाधिकारी स्वयं महामंत्री राम अवतार पोद्दार, संयुक्त मंत्री द्वय अरुण गुप्ता एवं रविन्द्र कुमार लड़िया तथा विश्वनाथ सुल्तानिया, लोकनाथ डोकानिया, राजेन्द्र खण्डेलवाल, बंशीलाल बाहेती, आदि को भी मैं हृदय से धन्यवाद देना चाहूंगा। भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान के प्रति मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूं जिनका पूर्ण सहयोग एवं समर्थन हमें प्राप्त हुआ है। महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती अरुणा जैन श्रीमती प्रेमा पंसारी, श्रीमती विमला डोकानिया के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। युवा मंच के श्री महेश जालान एवं उनके सभी साथियों की उपस्थिति भी हमारे लिए महत्वपूर्ण रही है। ●

श्री गोपी धुवालिया

श्री सूर्यकरण सारस्वा

श्री बंसीलाल बाहेती

श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री

चिन्तन शिविर...

महामंत्री का प्रतिवेदन

(राम अवतार पोद्दार)

सर्वप्रथम आप सबका, विशेषकर बाहर से पधारे अतिथियों का, राष्ट्रीय चिन्तन शिविर में हार्दिक स्वागत करता हूँ।

सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम जी शर्मा ने 20वें राष्ट्रीय अधिवेशन (5-6 अगस्त 2006, भुवनेश्वर) को सम्बोधित करते हुए अपने अभिभाषण में नये सत्र का नारा "समाज सुधार एवं समरसता" दिया था। नये सत्र के आरम्भ के एक महीने में 5 सितम्बर 2006 को प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का आयोज़न किया गया जिसमें औपचारिक रूप से "चिन्तन शिविर" करने का निर्णय लिया गया। यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयोगात्मक कार्यक्रम है।

सम्मेलन के कार्यों में एक नयी तेजी आयी है जिसका श्रेय आप सभी को जाता है। हमें प्रांतीय सम्मेलनों, कार्यकारिणी एवं स्थायी तथा उप-समिति सदस्यों सभी का पूर्ण समर्थन प्राप्त हो रहा है। कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम तय किये गये हैं। कोलकाता में मारवाड़ी सम्मेलन भवन के निर्माण की तैयारी का कार्य भवन उप-समिति के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरि प्रसाद कानोड़िया की देखरेख में जोरों से चल रहा है। उप-समितियों का गठन कर दिया गया है। आने वाले महीनों में सदस्यता अभियान, उच्चशिक्षा कोष न्यास, उद्यमी प्रशिक्षण कार्यक्रम, राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन आदि कार्यक्रमों को आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

इन सब कार्यक्रमों को लागू करने के लिए एक सक्रिय एवं प्रभावशाली संगठन की आवश्यकता है। समाज सुधार के कार्यक्रम को तेजी से लागू करने का निर्णय लिया गया है। समाज की सही तस्वीर रखी जाये इसका प्रयास किया जायेगा। केन्द्रीय एवं प्रांतीय सम्मेलनों के बीच सामंजस्य एवं वार्तालाप बढ़े इसके लिए कार्य करना है।

राष्ट्रीय चिन्तन शिविर मूलरूप से हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष की परिकल्पना है एवं हम सभी को इस दो दिवसीय बैठक से बहुत आशाएं हैं। इस बैठक में हम एक ओर राष्ट्रीय एवं प्रांतीय संगठन के स्वरूप पर चर्चा करेंगे वहीं सम्मेलन को किस तरह एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित कर सके इस विषय पर महत्वपूर्ण कार्यक्रम निर्धारित करेंगे। समाज सुधार एवं समरसता सम्बन्धी कार्यक्रमों पर भी विस्तृत चर्चा करेंगे।

मुझे पूरा विश्वास है कि आपके विचारों से सम्मेलन को एक नयी ताकत एवं दिशा प्राप्त होगी। चिन्तन शिविर हमें एक नयी रोशनी प्रदान करेगा। चिन्तन शिविर के विषय में हमारे अध्यक्ष सीताराम जी विस्तृत चर्चा करेंगे।

मैं अपनी वाणी को यहीं विराम देना चाहूंगा क्योंकि हमारे अध्यक्ष का चिन्तन शिविर के संदर्भ में यह आदेश है कि पदाधिकारी कम से कम बोलेंगे एवं ज्यादा से ज्यादा सुनेंगे। धन्यवाद।

श्री मोहनलाल चोखानी

(अध्यक्ष, समाज सुधार उप-समिति के आचार-संहिता पर विचार)

गत 4-5 नवम्बर को साल्टलेक में सम्मेलन द्वारा आयोजित चिन्तन शिविर द्वारा प्रस्तावित वैवाहिक आचार-संहिता का प्रारूप ता. 18 को आप द्वारा प्रेषित फैक्स से मिला।

इसमें चार-पांच विषयों में यानी क्र. 1, 3, 4, 6, 9 बिना मतभेद के साधारणतः सर्वमान्य है। एवम् आंशिक रूप में कई परिवारों में भी पालन होता है। शिविर के कुछ घंटों की चर्चा में क्रमांक 5 के विषय स्पष्ट निर्देश दे देना चाहिए।

"सज्जन गोठ बन्द हो", इसके स्थान पर "सज्जन गोठ में साग जलेबी के साथ गिन्नी देने का प्रचलन बन्द हो।"

उपरोक्त संशोधन को बिना किसी हिचकिचाहट से जोड़ देना चाहिए। यह प्रचलन वर्तमान सुधार आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में अप्रासांगिक है। कुछ करोड़पतियों को छोड़कर आम धनी उच्च वर्ग को भी यह अरुचिकर लगता है। मध्यम वर्ग की पीड़ा तो सोच के बाहर है। आचार-संहिता के क्रमांक 2 में लिखा है कि "अधिकतम 25 व्यंजन का नियम लागू हो", इस आडम्बर और अनावश्यक प्रणाली को सम्मति दें, सम्मेलन द्वारा एक फजूलखर्ची को बढ़ावा देना है। सभ्रांत घरानों में भी इसका प्रचलन नहीं है। अतः किस कारण सम्मेलन ऐसे प्रस्ताव को अपनी सम्मति प्रदान व्यंजन 15 भी प्रचुर होते हैं, बाकी सब एक दिखावा है।

आचार-संहिता को अच्छी तरह विचार कर समाज के सम्मुख वितरीत किया जाये। ध्यान में रहे यह आचार-संहिता हम अ. भा. अग्रवाल महासभा, देहली, अ.भा. माहेश्वरी महासभा, अ.भा. वैश्य महासम्मेलन आदि सबके सम्मुख प्रस्तुत करना चाहेंगे। न कि, केवल प्रांतीय शाखाओं के सम्मुख। अतः इसकी भाषा गरिमामय एवं सर्वमान्य हो।

अगर सम्मेलन के महामंत्री इस आवश्यक कार्य के लिए दो दिन का समय निकाल कर, नागपुर आने का प्रोग्राम बनाएं, तो सम्मेलन के महाराष्ट्र प्रांतीय अध्यक्ष के साथ मंत्रणा कर इन आचार-संहिता को सारे महाराष्ट्र में बम्बई तक पालनार्थ, प्रचार की रूप रेखा बनायी जा सकती है। इस कार्य के लिए मैं मंत्री महोदय के साथ अपना योगदान देने को सहर्ष प्रस्तु रहूंगा।

समाज और हम

रमेश कुमार बंग, अध्यक्ष : आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना, आस्था और विश्वास से परिपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर, रणबांकुरों की शौर्य स्थली राजस्थान में सर्वाधिक रही है। मारवाड़ से चल कर विश्व के कोने-कोने में बसे हमारे पुरखों का त्याग, संगठनात्मक शक्ति, कर्म के प्रति निष्ठा, राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव सदैव जन-जन के लिए प्रेरणादायी रहा है।

तीव्र गति से परिवर्तनशील कालचक्र के प्रभाव से प्रवासी राजस्थानी समाज भी अछूता नहीं रहा। आधुनिक टेक्नोलॉजी तथा तत्काल परिणाम (इंस्टेन्ट रिजल्ट) मानो एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। परिणामत: प्रतिस्पर्धा के इस दौर में 'परजन' की जगह 'स्वजन', 'परहित' की जगह 'स्वहित', 'परमार्थ' की जगह 'स्वार्थ' की भावनाएँ मानव मन में दृढ़ होती जा रही है। स्वकेन्द्रित स्वार्थपूरक आकांक्षाओं ने व्यक्ति को समाज के प्रति अपने दायित्व निर्वहन से विमुख सा कर दिया है। कुछ भी, किसी भी कीमत पर प्राप्त करने की लालसा भी इसका एक कारण है। यहीं से समाज में विघटन का सूत्रपात होता है। जिस परिवार, समाज और राष्ट्र में हमने जन्म लिया है, उनके प्रति हमारे कुछ दायित्व होते हैं।

जहाँ समाज की बात आती है व्यक्ति का समर्पित भाव से निष्काम कर्म उस समाज की प्रगति तथा एकता का मूल मंत्र है। जैसे कि मैंने ऊपर उल्लेख किया समय चक्र बड़ी तीव्र गति से चल रहा है। यह ऐसा संक्रमण काल है जहाँ केवल अतीत के गौरव और संस्कृति की अच्छाइयों की ही सराहना उचित नहीं है और न ही पाश्चात्य सभ्यता को बुराई का बरगद बताना उचित है। दोनों सभ्यताओं और संस्कृतियों से वर्तमान समय में उपयोगी गुणों को अपनाना होगा।

आज युवा पीढ़ी समाज के प्रति अपने दायित्व निर्वहन में आगे आ रही है। युवा नेतृत्व में उत्साह, साकारात्मक सोच है। पूर्ण समर्पण के साथ काम करने की उमंग है, परन्तु कभी-कभी समाज के कुछ तथाकथित हितैषियों द्वारा एकता व संगठन को तोड़ने के जो प्रयास होते हैं उनसे उनका आत्मविश्वास हिल जाता है और वे निष्क्रिय हो जाते हैं।

अहं जनित ईर्ष्या समाज हित में नहीं है। सामाजिक संस्थाओं में विशेषकर यह ध्यान देना जरूरी है। प्राय: यही देखा गया है कि जहाँ हमारा अहं आहत हुआ हम परिवार एवं समाज सबको भुला देते हैं। यह याद रखने की बात है कि स्वयं के, समाज के या राष्ट्र के विकास में 'मैं' मुख्य नहीं है 'हम' मुख्य है। आपसी सहयोग, विचार-विमर्श और मार्गदर्शन के साथ जो भी कार्य होगा उसकी सफलता असंदिग्ध है।

हमें अपनी कथनी और करनी को एक करना होगा। एक छोटी सी बोध कथा है—एक बार राजा भोज ने अपनी विद्वत सभा में प्रश्न किया कि ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक दूरी किनके बीच है। अलग-अलग विद्वानों ने तर्क के साथ अलग-अलग उत्तर दिए। किसी ने जमीन-आसमान के बीच की दूरी को सर्वाधिक बताया, किसी ने आकाश पाताल के मध्य, किसी ने स्वर्ग और नर्क के मध्य। हर एक ने अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया। महाराज को कोई भी उत्तर संतुष्ट नहीं कर पा रहा था। एक विद्वान ने कहा महाराज मेरी दृष्टि में कथनी और करनी के बीच की दूरी ही सबसे बड़ी दूरी है। राजा भोज की विद्वत सभा ने किसी तर्क के इस कथन पर वाह-वाह करते हुए माना कि वास्तव में कथनी और करनी के बीच की दूरी ही सबसे बड़ी दूरी है। यह मानव जीवन की सर्वाधिक विकट त्रासदी है। आदमी की लालसा और कर्म के बीच जो विरोधाभास है वही इसका मूल केन्द्र है। यही दोहरा जीवन चरित्र, समाज सेवा हो या राजनैतिक सेवा हर जगह दिखता है।

सामाजिक संस्थाओं की गतिशीलता तभी बनी रहेगी जब इससे जुड़े हर बन्धु में सौहार्द, संवाद, समन्वय, सहभागिता की भावना रहे। हमारी युवा पीढ़ी के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि समाज आज जिन ऊँचाइयों पर पहुँचा है उसके मूल में वरिष्ठजनों का अथक प्रयास और निष्काम कर्म है। ऐसे समर्पित, कर्मठ कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन समाज के लिए बहुत आवश्यक है। उनकी नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए समाज द्वारा उनका समुचित सम्मान हो यह नितांत जरूरी है।

हमारे वरिष्ठजनों के लिए भी यह आवश्यक है कि उर्जावान, युवा शक्ति के प्रति नकारात्मक सोच न रखें। उनकी गलती पर उन्हें सचेत करें। उनका मनोबल बढ़ाये। उन पर विश्वास करें और उनको प्रोत्साहित करें। आपसी विश्वास और सामंजस्य मानव जीवन की सफलता का मूल मंत्र है।

प्रेम और संवेदना का भाव तुम ऐसा जगा दो,
स्नेह और सौहार्द की प्रकाश गंगा तुम बहा दो,
भेद जो मन के मिटा दें, राग ऐसा गुन गुना दो।

तभी हम अपनी बुद्धि से, निष्ठापूर्वक समाज की हर विसंगति को दूर करने में सक्षम हो सकेंगे। ●

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

सुशील मोदी, उप-मुख्यमंत्री बिहार के साथ मारवाड़ी सम्मेलन प्रतिनिधि दल

बायें से संयुक्त महामंत्री अरुण गुप्ता, कार्यकारिणी सदस्य सज्जन भजनका, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, अध्यक्ष सीताराम शर्मा बिहार के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील मोदी, महामंत्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री रवीन्द्र कुमार लड़िया एवं भानीराम सुरेका।

बिहार के उप-मुख्यमंक्षी एवं वित्तमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी के कोलकाता प्रवास के दौरान अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि दल ने उनसे मुलाकात की। दल में महामंत्री राम अवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया, संयुक्त महामंत्री द्वय - श्री अरुण गुप्ता, श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया तथा कार्यकारिणी सदस्य श्री सज्जन भजनका थे। श्री मोदी से बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन को उनके पूर्ण सहयोग की अपील की गई। श्री मोदी ने सम्मेलन के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उसके स्वरूप एवं कार्य क्षेत्र को और वृहद एवं विस्तृत करने का परामर्श दिया। श्री मोदी ने कहा कि वे विभिन्न नगरों में बिहार फाउण्डेशन की शाखा खोलने पर विचार कर रहे हैं।

राजस्थान के उद्योगमंत्री श्री नरपत सिंह रजवी के साथ

राजस्थान के उद्योगमंत्री श्री नरपत सिंह रजवी के साथ कोलकाता में विचार-विमर्श करते हुए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया।

B.M.A. Trade & Holdings Pvt.Ltd.

36 "KOHINOOR" 105, Park Street, 7th Floor, Kolkata - 700 016.

Fax: 2226 7782 ✆ 2226 9995 / 3849, Email :bmatrade@vsnl.net

REGD. OFFICE

4, Synagogue Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 001

✆ (Off) : 2242 2585 / 2749 Resi : 2478 8519 / 3291 9137

Selling Agent for Raymonds Limited

न्यूनतम वैवाहिक आचार संहिता राजस्थान में लागू करने का आश्वासन : सहकारिता एवं समाज कल्याण मंत्री (राजस्थान)

कोलकाता 15 दिसम्बर। आज अपराह्न 3 बजे राजस्थान सूचना केन्द्र में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों के साथ हुई बैठक में, राजस्थान सरकार के समाज कल्याण एवं सहकारिता मंत्री श्री मदन दिलावर जी ने विवाहों में बढ़ती फिजूलखर्ची पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले दिनों सम्मेलन द्वारा आयोजित चिन्तन शिविर में सर्वसम्मति से बनाये गये न्यूनतम वैवाहिक आचार-संहिता को राजस्थान में भी लागू करने का आश्वासन दिया। श्री दिलावर ने कहा कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने यह जो समाज सुधार का बीड़ा उठाया है, यह प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। क्योंकि गरीब अगर चने खाता है तो लोग समझते हैं कि भूखों मर रहा है, लेकिन यही यदि पैसेवाला खाता है तो लोग समझते हैं कि शौक से खा रहा है।

उन्होंने उद्योगपतियों को राजस्थान आने का आमन्त्रण भी दिया और कहा कि राजस्थान में जो भी व्यक्ति गरीबों के कल्याण एवं अन्य सेवा कार्य के लिए व्यय करेगा उसे राज्य सरकार स्वामी विवेकानन्द जयन्ती पर सम्मानित करेगी।

बायें से दायें श्री मोहनलाल तुलस्यान, कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, समाज कल्याण एवं सहकारिता मंत्री श्री मदन दिलावर जी, महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया व श्री अरुण गुप्ता।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार एवं राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया ने समाज विकास की प्रतियां मंत्री जी को भेंट किया। समारोह में श्री मोहनलाल तुलस्यान, अरुण गुप्ता, जुगलकिशोर जैथलिया, प्रेम सुरेलिया, भानीराम सुरेका, हरिप्रसाद कानोड़िया, चिरंजीलाल अग्रवाल, राजेन्द्र खण्डेलवाल, जय गोविन्द इन्दौरिया, अरुण मल्लावत, सूर्यकरण सारस्वा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। सम्मेलन के कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोडिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मूर्ति एवं चित्र में भगवान का दर्शन

स्वामी विवेकानन्द अलवर के महाराजा मंगलसिंह के साथ वार्तालाप कर रहे थे। बातों ही बातों में मंगलसिंह ने स्वामी जी से कहा—"लोग मूर्ति पूजा करते हैं पर मुझे उनमें विश्वास नहीं है।" स्वामी जी थोड़ा जोर से बोले "आप यह कैसा मजाक उड़ा रहे हैं।" मंगलसिंह ने कहा-"स्वामी जी मैं यह कोई मजाक नहीं कर रहा हूं। लकड़ी, मिट्टी, पत्थर, धातु, आदि इन सबकी उपासना क्यों करते हैं। क्या इससे किसी को सद्गति प्राप्त होगी। स्वामीजी ने उत्तर दिया-जिसका जैसा विश्वास।"

अचानक स्वामी जी ने एक व्यक्ति को कहा-"वह तस्वीर लेकर आना।" तस्वीर आने पर उसे हाथ में लेकर स्वामी जी ने पूछा-"यह किसकी तस्वीर है ?"

महाराज के दीवान रामचन्द्र बोले-"महाराज की।" स्वामीजी ने फिर दीवानजी से कहा आपसे इस तस्वीर पर थूक फेंकने का अनुरोध कर रहा हूँ। क्योंकि यह तो कागज का एक टुकड़ा ही तो है और कुछ नहीं। रामचन्द्र असमंजस में पड़ गये। वे तो एक बार रामचन्द्र से उस पर थूक फेंकने के लिए कह रहे हैं। रामचन्द्र लम्बी सांस लेकर आश्चर्य भाव से बोले-"यह क्या कह रहे हैं स्वामी जी ?" यह तो महाराज की तस्वीर है। स्वामी जी ने उत्तर दिया-"बहुत खूब महाराज तो इसके भीतर नहीं है। यह तो मात्र कागज का टुकड़ा ही तो है। इसमें न तो हड्डी है, न मांस है, न ही रक्त प्रवाह है। कुछ भी तो इसमें नहीं है। इस कागज के टुकड़े पर बनी छाया पर थूकने पर आप को कष्ट हो रहा है न।" सोच रहे हैं कि महाराज का अपमान होगा। इस पर थूक फेंकने से लगता है कि महाराज के शरीर पर ही थूक रहे हैं। महाराज का अपमान कर रहे हैं। क्यों! यही बात है न।

रामचन्द्र लम्बी सांस लेते हुए बोले- हाँ, बात यही है। अब स्वामी जी महाराज की ओर देखते हुए बोले - महाराज ये लोग आपके भक्त हैं। इस कागज के टुकड़े में न तो मांस हैं, न चमड़ा, न रक्त प्रवाह। फिर भी इस तस्वीर को ये लोग महाराज ही मानते हैं। यह आपके प्रति एक सम्मान है, भक्ति है।

इसी प्रकार किसी देवी देवता के चित्र व मूर्ति को भक्त देखता है तो उसे अपने आराध्य का ध्यान आ जाता है। महाराज मंगलसिंह के ज्ञानचक्षु खुले एवं उन्होंने मूर्ति में भगवान के दर्शन किये एवं स्वामी जी से माफी मांगी। -पुष्करलाल केडिया

एक संस्था एक संविधान

कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला, अध्यक्ष- बिहार प्रा. मा. सम्मेलन

किसी भी संस्था को अपने अस्तित्व के 70 वर्ष गुजारना ही उसकी उपयोगिता, सार्थकता, प्रासंगिकता आदि सिद्ध करता है। किन्तु साथ ही आवश्यकता है समय-समय पर प्राथमिकता तय करने की। मारवाड़ी समाज की पहचान न केवल उद्योग व्यापार में योगदान की वजह से है बल्कि देश के हर कोने में निःस्वार्थ एवं निःशुल्क सेवाएँ प्रदान करते रहने से भी मिली है। सेवा भावना ने समाज को हमेशा जनोपयोगी कार्य करते रहने की प्रेरणा दी है।

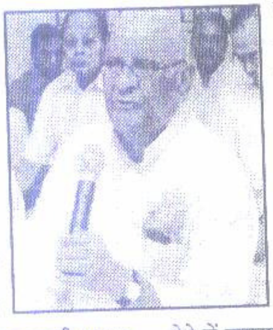

उल्लेखनीय है कि हमलोग समाज में व्याप्त कुरूतियों के प्रति हमेशा जागरुक रहे हैं, और इसके उन्मूलन के लिए सामूहिक रूप से कार्य करते रहे हैं। यह जानकारी शायद बहुत लोगों के पास न हो कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना के पूर्व सन् 1921 में **मारवाड़ी सुधार समिति** की स्थापना बिहार प्रांत के आरा शहर में हुई थी तथा **'मारवाड़ी-सुधार'** नामक मासिक मुख-पत्र करीब दो साल तक सफलतापूर्वक प्रकाशित हुआ। श्री हरिद्वार जालान, श्री नवरंग लाल तुलस्यान तथा श्री दुर्गा प्रसाद पोद्दार आदि उत्साही समाजसेवी महानुभावों की प्रेरणा से समिति के मुख पत्र के रूप में इसे आरा से ही प्रकाशित किया गया। देशभर के धनाढ्य मारवाड़ी सज्जनों की आर्थिक सहायता से इसका संचालन-प्रकाशन होता था। अतः अर्थाभाव नहीं था। इसकी छपाई, सफाई और सजावट में कोई कमी नहीं थी। इसमें बढ़िया और लाभदायक रचनाएँ प्रकाशित की जाती थी।

यद्यपि यह मूलतः सामाजिक पत्र था और इसके सम्पादक प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य शिवपूजन सहाय थे। उन्होंने इसे साहित्यिक स्वरूप भी प्रदान कर रखा था।' आखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा' की ओर से कलकत्ता से मुख-पत्र के रूप में 'मारवाड़ी अग्रवाल' के प्रकाशन के बाद इसे बन्द कर दिया गया।

आजादी के पूर्व एवं उसके बाद दो-तीन दशकों तक मारवाड़ी समाज की छवि देश भक्त एवं समाज सेवी समुदाय के रूप में महसूस की जा रही थी, किन्तु कुछ वर्षों में हमारी यह छवि धूमिल हुई है। इसका एक कारण तो सोच में बदलाव आया लगता है और दूसरा यह कि समयानुसार हम अपने जनोपयोगी कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से नहीं कर पा रहे हैं। ऐसा लगता है कि हमारी सारी शक्ति सार्वजनिक धार्मिक अनुष्ठानों एवं कार्यक्रमों में लग रही है जहाँ लोग समाज में अपनी पहचान बनाने की होड़ में लगे हैं। पहले हमारी शक्ति धर्मशाला, विद्यालय, चिकित्सालय, प्याऊ आदि में लगती थी, जिससे आम जनता को लगातार सेवा मिलती है किन्तु अब हमारी शक्ति अर्थ प्रदर्शन पर लग रही है। पहले हमारे समाज के लोग सेवा के कार्य संस्थाओं के नाम से करते थे, इससे समाज की छवि निखरती थी, किन्तु अब सेवा कार्य में व्यक्ति प्रधान हो गया है, जिससे व्यर्थ में आडम्बर एवं दिखावा ही नजर आता है। स्थिति चिन्तनीय अवश्य है, लेकिन इतनी भी नहीं कि सुधार असंभव हो। हम घड़ी की सूई को पीछे की ओर तो घुमा नहीं सकते। हाँ बेहतर सामंजस्य और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ना होगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री सीताराम जी शर्मा द्वारा आयोजित चिंतन बैठक में प्रस्तुत विषय सम्मेलन के उज्ज्वल भविष्य हेतु दिशा निर्देश देने में कारगर सिद्ध होगा।

विचारणीय विषय संख्या (1) **'सम्मेलन को मारवाड़ी समाज की सही मायने में प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करने के लिये संगठन एवं सदस्यता संबंधी प्रस्ताव।'**

उपरोक्त विषय पर निम्नलिखित सुझाव आपके समक्ष रखना चाहता हूँ-

1. विस्तृत सदस्यता अभियान :-''सम्मेलन'' सही मायने में मारवाड़ी समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित नहीं हो पाया है क्योंकि हमारी शाखाएं देश के सिर्फ 11 राज्यों में है और पूरे देश में लगभग एक लाख समाज बन्धुओं को सदस्य के रूप में जोड़ पाये हैं, जबकि पूरे देश में हमारी संख्या लगभग 8 करोड़ है। हमारा सुझाव है कि 51.00 रु० लेकर समाज के सभी भाई-बहनों का निबंधन कराया जाये। जिन राज्यों में आजीवन एवं वंशानुगत सदस्य बने हुए हैं, उनसे भी निबन्धन शुल्क केन्द्रीय कार्यालय द्वारा लिया जाये। जिन लोगों को हम बिंधित करें उन्हें हम एक लघु पुस्तिका दें, जिसमें सम्मेलन के उद्देश्यों एवं गतिविधियों की सूचना शामिल रहे। मैं मानता हूँ कि इस तरह समाज के लोगों का निबंधन करना एक कठिन कार्य है, फिर भी हम इसकी शुरूआत राजस्थान, हरियाणा, मालवा आदि क्षेत्रों में सम्पन्न होने वाले सार्वजनिक समारोहों में (जैसे-खाटू, सालासर, झुन्झणू इत्यादि) जहाँ देश के कोने-कोने से लोग भाग लेने जाते हैं, वहाँ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का एक शिविर लगाये जायें और उसमें हम सदस्यों का निबंधन करें एवं आगन्तुकों के सेवा कार्य करें। वहाँ अपनी प्रचार समाग्री भरपूर मात्रा में भेजें ताकि लोगों को हमारी गतिविधियों के बारे में जानकारी मिल सके और हमारा सदस्यता अभियान आगे बढ़े।

2. मारवाड़ी एक ब्रान्ड :-मारवाड़ी सम्मेलन को एक ब्रांड के

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

रूप में विकसित करना चाहिए ताकि हम अपनी उपलब्धियां एवं सेवा कार्य का उपयोग अपनी छवि सुधारने में कर सकें। उदाहरणार्थ मारवाड़ी रिलीफ सेवा समिति का ब्रांड पहले उजागर हुआ था, जिससे हमारे समाज की सेवा भावना, प्राकृतिक आपदाओं, विपदाओं में सहायता एवं सहयोग की बात अपने आपमें परिलक्षित होती थी। हमें ऐसा लगता है कि हमें "**मारवाड़ी सम्मेलन**" को एक नये व लोकप्रिय ब्रांड के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। जिसे हम मार्केटींग करें और इससे नये-नये लोग हमारी संस्था से निश्चित ही जुड़ेंगे। इसके लिए आवश्यकता होगी कि विस्तृत ब्रेसियर बनाने की जिसमें समाज की उपलब्धियों एवं इसके द्वारा किये जा रहे सेवा, सहायता आदि कार्यों का पूर्ण विवरण हो।

3. अर्थ संग्रह :-इन सब कार्यों के लिए निश्चित रूप से हमें कोष की आवश्यकता पड़ेगी, जिसे समाज में जागृति पैदा कर संग्रह करना होगा।

4. गतिविधि अवलोकन :-समाजिक कार्यों के लिए जब हम समाज से पैसा लेंगे तो निश्चितरूप से न केवल हमारे लेखा का अंकेक्षण होगा बल्कि हमारा समाज हमारे कार्यकलापों की समीक्षा भी करेगा।

5. मारवाड़ी समाज का कई संस्थाओं में बिखराव :-1935 वर्ष में जबसे मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुई-उसके बाद यह कई भागों में विभक्त होता चला गया। उदाहरणार्थ अग्रवाल सम्मेलन, महेश्वरी सभा, ओसवाल सभा, ब्राह्मण सभा, खण्डेलवाल सभा तथा इन सबों में युवा मंच, महिला सम्मेलन आदि अलग-अलग टुकड़ों में बंट गये। मारवाड़ी समाज एक व्यापक शब्द है, उसका कार्य क्षेत्र बांटने से यह कमजोर हो गया। उन सबों का एक सूत्र में पिरोने की आवश्यकता है।

पिछले राष्ट्रीय अधिवेशन में **मारवाड़ी युवा मंच एवं मारवाड़ी महिला सम्मेलन** के राष्ट्रीय अध्यक्ष को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यसमिति के पदेन सदस्य लिया गया है। क्या उन संस्थाओं ने भी अपने कार्यकारिणी में अ० भा० मा० सम्मेलन को स्थान दिया है? अन्य संस्थाओं को सम्मेलन से अलग क्यों रखा गया है? आवश्यकता है हम कोई नई योजना बनाकर इस सभी वर्गों को एक साथ मिलाकर सम्मेलन के कार्य क्षेत्र को व्यापक बनाये।

विचारणीय विषय संख्या-(2) :-**21वीं शताब्दी में सम्मेलन की प्रासंगिता को बनाये रखने के लिए उसकी दिशा एवं कार्यक्रम तथा उनकी प्राथमिकताएं।**

इस विषय पर विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि हम कुछ ऐसे कार्यक्रम सम्मेलन के माध्यम से चलायें, जिससे देश भर में फैले हुए समाज के भाई-बहन यह जरूरत महसूस करें कि उन्हें सम्मेलन से जुड़ना है और इसके लिए आवश्यक है कि हम न केवल अपने सदस्यों की संख्या बढ़ाने की सोचे बल्कि ऐसे कार्यक्रम अपनाये जिससे समाज के पढ़े-लिखे लोगों को प्रेरित किया जा सके और वे सम्मेलन से जुड़ सकें इसके लिए कुछ सुझाव विचारार्थ प्रस्तुत है।

1. मारवाड़ी विद्यापीठ-एक शृंखला :—इस संदर्भ में ऐसा व्यापक कार्यक्रम बनाया जाये जिसके माध्यम से हमलोग देश के कोने कोने में उच्च स्तरीय विद्यालय स्थापित करा सकें। ये मारवाड़ी विद्यालय के नाम से मशहूर हो जिसमें न्यूनतम शुल्क पर उच्चतम कोटि की शिक्षा प्रदान की जा सकें। ऐसा गैर सरकारी संस्थाओं के लिए संभव है क्योंकि डी० ए० मी० का उदाहरण हमारे समक्ष है।

2. मारवाड़ी इन्सच्यूट ऑफ बिजनेस मैनेमेन्ट :—मारवाड़ी समाज आज प्रत्येक क्षेत्र में बुलंदियों की ओर अग्रसर है, और यह पहचान वस्तुत व्यापार एवं उद्योग के क्षेत्र में प्रगति की वजह से है। बिजनेश मैनेजमेन्ट में उच्च शिक्षा के लिए जितनी भी संस्थाएं हैं, उनमें दाखिला बहुत ही कठिन होता जा रहा है और इस तरह के शिक्षण संस्थाओं की कमी हो रही है। मेरा सुझाव है कि इन शिक्षण संस्थाओं की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए हमलोग कम से कम एक मारवाड़ी बिजनेश इन्सच्यूट की स्थापना करें।

3. मारवाड़ी इन्सच्यूट ऑफ टेक्नोलोजी :—21वीं शताब्दी में एक नयी टैक्नोलोजी विकसित हो रहा है जिसे नैनो टैक्नोलोजी के नाम से जाना जाता है और यदि इसमें सफलता मिलती है तो इससे दुनियाँ से गरीबी, भूखमरी आदि समस्या से छुटकारा मिल सकता है और आम आदमी को अनपा जीवन स्तर सुधारने में सफलता मिलेगी। साथ ही इससे उद्योग व्यापार के नये आयाम खुलेंगे।

सारांश में यह एक नयी वैज्ञानिक खोज है जिससे अपने दैनिक जीवन और उद्योग धंधे में निकलने वाले कचरे को एवं प्रकृति द्वारा प्रदत्त किन्तु बेकार माने जाने वाली चीजें यथा बालू, पेड़ के पत्ते आदि के अणु के भी सहस्त्र अंशों में बाँट कर उसे फिर से उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित किया जा सकता है। दुनिया के विकसित देशों में इस पर अनुसंधान चल रहा है और इसके सफल होने पर दुनियाँ के आर्थिक जगत एवं आपलोगों के जीवन में एक नई क्रांति आयेगी।

मारवाड़ी समाज उद्योग धंधों में अग्रणी रहा है। नैनों टैक्नोलोजी अनुसंधान केन्द्र की जो आधुनिकत्तम यंत्रों से सुसज्जित हो, और उसे योग्य वैज्ञानिकों की देख-रेख में चलाया जाये। इस तरह के अनुसंधान केन्द्र की स्थापना में सम्मेलन पहल करें। इसकी सफलता मारवाड़ी समाज की एक बड़ी देन होगी।

4. बिजनेज/उद्योग जगत का जुड़ाव :—यह प्रश्न उठ सकता है कि इतना बड़ा कार्यक्रम सम्मेलन के माध्यम से कैसे चलाया जायेगा, उसके लिए कार्यकर्त्ता एवं धन कैसे उपलब्ध होगा और यह चिंता स्वभाविक भी है किन्तु यदि हमें अपनी प्रसंगिता बनाये रखनी है तो इसके लिए हमें सामर्थकता लोगों को प्रेरित करते रहना होगा। ताकि वे हमारी संस्ता से जुड़ सके और इसके लिये जैसा कि मैंने

विलास विनाश है।

ऊपर में कहा है कि हमें आपने संस्था के लिए "**सोशल मार्केटींग**", "**सोशल फंडींग**" और "**सोशल ऑडिटींग**" की ओर अग्रसर होना होगा।

5. एक संस्था एक संविधान :-प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए अलग-अलग संविधान बने हुए हैं जो उचित नहीं लगता है। संविधान एक होना चाहिए और उसमें प्रादेशिक इकाइयों के लिए भी स्पष्ट रूप से मार्गदर्शन भी दिये जाने चाहिए, जिससे उन्हें राज्य स्तर पर कार्य करने के लिए स्वतंत्रता भी हासिल रहे।

6. सदस्यता-एक स्तरीय :-आज सदस्यता अलग-अलग राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं शाखा स्तर पर बनाये जाने का प्रावधान है और यह दोहरी सदस्यता जैसा लगता है। इसकी क्या व्यवस्था हो इस पर विचार-विमर्श आवश्यक प्रतीत होता है।

7. वेबसाइट, मारवाड़ी मैरेज ब्यूरो :-मध्यमवर्गीय परिवारों में शादी-विवाह की समस्या जटिल होती जा रही है। उनकी समस्या के निदान के लिए हमारा सुझाव है कि राष्ट्रीय स्तर पर एक मारवाड़ी मैरेज ब्यूरो के नाम से वेबसाइट बनाई जाये, जिसे देश के प्रत्येक प्रादेशिक इकाइयों से जोड़ा जाना चाहिए तथा इस वेबसाइट पर विवाह योग्य लड़के-लड़कियों के विवरण देने के लिए समाज के सभी लोगों को प्रेरित करना चाहिए। इसका देश भर में प्रचार हो कि मारवाड़ी समाज के विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का विवरण वेबसाइट पर उपलब्ध है जिसका लाभ समाज के लोगों को अवश्य उठाना चाहिए। मैं समझता हूँ कि इससे उपरोक्त हमारी समस्या के निदान में मदद मिलेगी।

8. समाज सुधार:-समाज सुधार एक समाजिक आवश्यकता है और उस पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रथम कार्यकारिणी की बैठक में शादी-विवाह के लिए आचार संहिता तैयार करने का निर्णय लिया गया। सभी के लिए मिलनी का चार रुपया लेने का नारा निर्धारित किया गया। "**मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया।**"

यह निर्णय बहुत ही सामयिक है किन्तु यह देखा गया है कि इन निर्णयों के पीछे कोई बाध्यता नहीं होती है और ना ही हम उस पर कोई दबाव डाल पाते हैं। इसके लिए भी हमें कुछ विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है ताकि सम्मेलन के द्वारा लिये गये प्रस्ताव को कारगर बना सके।

प्रादेशिक कार्यकारिणी की दिनांक 8 अक्टूबर की बैठक तथा पूर्व की अन्य गोष्ठियों में चिन्तन के दौरान आये विचारों को ध्यान में रखते हुए मैंने उपरोक्त सुझाव आपके समक्ष प्रस्तुत किये हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन पर अमल करने से हम अपने संगठन को मजबूत बनाने एवं हम 21वीं सदी में भी "**प्रासंगिक**" रह सकेंगे।

WE MOVE
XL
YOU RELAX

With Best Compliments From:-

EXCEL MOVERS PRIVATE LIMITED

A Country Wide Fleet Owners & Transport Contractors
AN ISO 9001 : 2000 CERTIFIED COMPANY

H.O.: 2 –B, Tarachand Dutta Street
Kolkata-700 073

Phone: 28630333,28630716,22218149
FAX: 22352555
Mobile: 9831035555/81555/75555
E-MAIL: info@excelmovers .com

29 नवम्बर 2006

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का कार्यवृत्त

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक दिनांक 29 नवम्बर 2006 को सायं 5.30 बजे कोलकाता चेम्बर ऑफ कॉमर्स, 18 एच, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता-700016 में सम्पन्न हुई।

2. बैठक की अध्यक्षता सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा ने की।

सर्वप्रथम सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने नवनिर्वाचित रा. उपाध्यक्ष श्री विश्वम्भर नेवर का हार्दिक अभिनन्दन किया।

राष्ट्रीय महामन्त्री श्री राम अवतार पोद्दार ने पिछली बैठक के कार्यवृत्त का प्रस्तुत किया। जिसको सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया। उपस्थित सदस्यों ने समय पर कार्यवृत्त की प्रतियां कोरियर द्वारा उपलब्ध कराने हेतु सम्मेलन की सराहना की।

रा. संयुक्त मंत्री रवीन्द्र कुमार लड़िया, रा. महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री हरीप्रसाद कानोड़िया, निवर्तमान रा. अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान।

आय-व्यय का ब्यौरा राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। श्री कानोड़िया ने सदस्यों की संख्या बढ़ाने का अनुरोध किया।

भावी कार्यक्रम : भवन निर्माण की जानकारी देते हुए, भवन निर्माण उपसमिति के अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने बताया कि भवन निर्माण शीघ्र किया जायेगा। जिसके लिए आवश्यक तैयारी की जा रही है। आर्किटैक्ट की नियुक्ति के बाद काम में तेजी आयी है। मिट्टी परीक्षण की रपट आ गयी है। शीघ्र कोलकाता नगर निगम में आवेदन किया जायेगा, जिसके लिए आवश्यक तैयारी की जा रही है।

72वाँ स्थापना दिवस : 25 दिसम्बर 2006 को प्रात: 10 बजे कोलकाता के 'कलामन्दिर' सभागार में सम्मेलन का 72वाँ स्थापना दिवस मनाया जायेगा। जिसकी शुरूआत भक्तिमूलक गीतों द्वारा किया जायेगा। तत्पश्चात् समाज के कलाकारों द्वारा अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा। समाज के बच्चों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शन का पूर्ण अवसर प्रदान किया जा रहा है।

अध्यक्ष ने बताया कि 72वें स्थापना दिवस पर समाज विकास का एक संग्रहणीय विशेषांक का प्रकाशन किया जायेगा। जिसमें उन्होंने विज्ञापन एवं रचनात्मक सहयोग का आह्वान किया।

सदस्यता आवेदन पर स्वीकृति : सदस्यता अभियान उपसमिति के अध्यक्ष श्री आत्माराम सौंथालिया ने 13 नये सदस्यों का नाम पढ़कर सुनाया। उन्होंने बताया कि जो भी नये सदस्य बनेंगे उनका नाम कार्यकारिणी की बैठक में प्रस्तुत किया जायेगा। श्री सौंथालिया जी ने 8 नवम्बर 2006 को सदस्यता अभियान उपसमिति की बैठक का कार्यवृत्त भी पढ़कर सुनाया। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि हरेक परिवार से एक से ज्यादा आजीवन सदस्य बनें तो उन्हें कुछ आर्थिक रियायत भी देनी चाहिए। कार्यकारिणी एवं स्थाई समिति के सदस्यों से उन्होंने अपील की कि वे कम से कम 10 आजीवन सदस्य बनाकर इस अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका निभायें। इस अभियान के तहत घर-घर जाकर सदस्य बनाने का प्रस्ताव भी उन्होंने रखा।

विविध : सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि पहली बार सम्मेलन ने नव वर्ष की बधाई प्रेषित करने के लिए

श्री गीतेश शर्मा, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री नवल जोशी, श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल, श्री विश्वनाथ मारोदिया

एक उच्च श्रेणी का बधाई कार्ड तैयार किया है। जिस पर सम्मेलन से सम्बन्धित कथन छपे हैं। कार्ड की कीमत 7 रुपये एवं यदि कोई इस पर अपनी कम्पनी का नाम छपवाना चाहे तो उस नाम छपे कार्ड की कीमत 7.50 रुपये हैं। इससे सम्मेलन का प्रयास घर-घर तक जायेगा। ऐसे दस हजार कार्ड छापे जा रहे हैं। उन्होंने सदस्यों से नव वर्ष के कार्ड खरीदने की अपील की। एक हजार कार्ड श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने एवं पांच सौ कार्ड श्री राम अवतार पोद्दार तथा पाँच सौ श्री सीताराम शर्मा ने अपनी कम्पनियों के लिए खरीदे। जिसका करतल ध्वनि से स्वागत हुआ। उन्होंने बताया कि न्यूनतम एक सौ कार्डों का ऑर्डर दिया जा सकता है।

श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल ने कार्ड छपवाने के लिए सम्मेलन को बधाई दी। उन्होंने सुझाव दिया कि विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से सदस्यता अभियान के लिए सहयोग की अपील किया जाये। निवर्तमान अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने भी इस पर अपनी सहमति जतायी।

सम्मेलन की आगामी वार्षिक साधारण सभा दिनांक 28 जनवरी 2007 को प्रात: 10 बजे सम्मेलन भवन में आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

धन्यवाद ज्ञापन के बाद बैठक का समापन हुआ। ●

सदस्यता अभियान उप-समिति की प्रथम बैठक

अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन की सदस्यता अभियान उपसमिति की प्रथम बैठक अध्यक्ष आत्माराम सोन्थालिया के कार्यालय कक्ष 23/24, राधा बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता-1 में बुधवार दिनांक 8 नवम्बर, 2006 को अपराह्न 5-30 बजे हुई। उपस्थिति निम्न प्रकार थी-

1. श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष
2. श्री आत्माराम सोन्थलिया, उपसमिति अध्यक्ष
3. श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा
4. श्री सन्तोष हरलालका
5. श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष (विशेष आमंत्रित)
6. श्री प्रदीप अग्रवाल (विशेष आमंत्रित)

श्री सोन्थलिया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए चर्चा का श्री गणेश करने के लिए तथा अभियान के संबंध में मार्गदर्शक बिन्दुओं, को स्पष्ट करते हुए दिशा निर्देश हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष से निवेदन किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि सम्प्रति निम्न 5 प्रदेशों कर्नाटक, दिल्ली, उत्तरांचल, गुजरात तथा छत्तीसगढ़ में जहां सम्मेलन की प्रदेश शाखायें नहीं है, कार्यारंभ किया जाना है। उन्होंने बताया कि सामान्यत: जहां 50 से 100 तक सदस्य बन जायें वहां शाखा स्थापित की जाये। केन्द्रीय कार्यालय उस स्थान पर कतिपय पदाधिकारी भेजकर एवं तदर्थ समिति का गठन कर देगा। संयोजक की नियुक्ति की जायेगी एवं कालांतर में यथाशीघ्र विधिवत् कार्य समिति का गठन किया जायेगा। उन्होंने अद्यतन प्रगति का खुलाशा करते हुए बताया कि वे दिल्ली में श्री चरतीलाल जी गोयल (पूर्व अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा), उत्तरांचल में श्री सोम गोयनका एवं छत्तीसगढ़ में श्री सत्यनारायण शर्मा (पूर्व शिक्षा मंत्री) श्री अमर अग्रवाल, मंत्री एवं श्री सुभाष अग्रवाल, पूर्व मेयर, रायपुर के माध्यम से शाखा गठन की दिशा में प्रयत्नशील हैं। उन्होंने उपस्थित उपसमिति सदस्यों से आग्रह किया कि अभियान का प्रथम चरण कोलकाता से शुरू करें—साल्टलेक, लेकटाउन, बांगुड़ एवेन्यू एवं पूर्वी कोलकाता के उपनगरों वी. वाई पी रोड के दोनों तरफ नवनिर्मित बहुमंजिली भवनों में समाज के अनेक लोगों के आवास है जिन्हें सदस्य बनाया जा सकता है। उन्होंने नवीन सदस्य बनाने की प्रक्रिया बताते हुए कहा कि सम्प्रति दो प्रचारक केन्द्रीय कार्यालय में नियुक्त हैं जो आवश्यकतानुसार किसी भी प्रदेश में किसी भी स्थान पर भेजे जा सकते हैं। और नये प्रचारक भी नियुक्त किये जायेंगे जिन्हें प्रथमत: कोलकाता में ही कार्यानुभव हासिल कराया जाये। श्री सीतारामजी शर्मा ने उपस्थित महानुभावों की शंकाओं एवं प्रश्नों का स्पष्ट और विस्तृत उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट किया।

तत्पश्चात पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अगरवाल (बिहार) ने भी दिल्ली गुजरात और कर्नाटक में इसी वर्ष में यथाशीघ्र कम से कम 100 सदस्य बना देने का आश्वासन देते हुए कहा कि वे कर्नाटक में जहां सम्प्रति उनका मुख्य निवास व व्यवसाय है घूम घूम कर अधिकाधिक सदस्य बनायेंगे। दिल्ली में भी अपने सुपरिचित बंधु श्री शिवनारायण झुनझुनवाला (भागलपुर) के माध्यम से तथा गुजरात में अहमदाबाद और सूरत में अपने उनके प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा अभियान को सफल बनाने में प्रयत्नशील होंगे।

इस पर श्री सीताराम शर्मा ने सूचना दी कि राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री अरुण गुप्ता तथा स्थायी समिति सदस्य श्री नवरत्नमल सुराना भी गुजरात में अपने सम्पर्कों के जरिए सदस्य बनाने में प्रयासरत हैं। श्री नारायण प्रसाद जी अग्रवाल ने श्री शर्माजी एवं श्री सोन्थालियाजी से आग्रह किया कि अरूण गुप्ताजी एवं श्री सुराणाजी के जनवरी-फरवरी यात्रा कार्यक्रम की अग्रिम सूचना तथा उनके साथ संयुक्त भ्रमण की व्यवस्था करवा दें।

पर्याप्त विचार विमर्श के उपरांत बैठक के विसर्जन के पूर्व उपसमिति अध्यक्ष श्री सोन्थालिया ने उपस्थित महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। ●

मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया।

ALL INDIA MARWARI FEDERATION
152 B, MAHATMA GANDHI ROAD
KOLKATA - 700 007

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH 2006

FUNDS & LIABILITIES		AMOUNT RS. P.	PROPERTY & ASSETS		AMOUNT RS. P.
LIFE MEMBERSHIP FUND:-			FIXED ASSETS:- (At W.D.V)		
As per last account	1,306,750.00		(As per Schedule 'B' Annexed)		18,402.74
Add:- Received during the year	160,000.00	1,466,750.00			
PRIZE DISTRIBUTION FUND:-			CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES:-		
As per last account		16,530.00	A) Current Assets :-		
RAJASTHANI SAHITYA PARITOSHIK FUND:-			~ Sundry Debtors :-		
As per last account		100,000.00	(Unsecured considered good)		
CURRENT LIABILITIES & PROVISION:-			For Advertisement		34,898.00
For expenses & others			~ Cash in Hand :- (As Certified)		463.41
(As per Schdule 'A' annexed)		83,307.00	~ Bank Balances :-		
			I) On Current A/Cs		
			With Syndicate Bank (AIMF)	15,810.61	
			With Syndicate Bank (A/C Samaj Vikas)	6,694.45	
			With The Bank Of Rajasthan Ltd.	2,534.40	
				25,039.46	
			ii) On Fixed Deposit A/C		
			With Syndicate Bank	100,000.00	125,039.46
			B) Advances:-		
			(Recoverable in cash or in kind or for value to be received)		
			~ Security Deposit	2,316.00	
			~ Tax Deducted at Source	12,084.00	
			~Staff Advance (Gopal Pandey)	2,000.00	
			~ Advance for Office Space (Marwari Foundation Samelan)	309,280.00	325,680.00
			DEBIT BALANCE IN INCOME & EXPENDITURE A/C (As per Annexed A/C)		1,162,103.39
	TOTAL:-	1,666,587.00		TOTAL:-	1,666,587.00

Notes on Accounts :-
(As per Schedule 'D' Annexed)

As per our report of even date annexed herewith.
For P.K LILHA & CO
CHARTERED ACCOUNTANTS

CA. P.K.LILHA
Partner
M No 11092

P. K. LILHA & CO. Chartered Accountants Kolkata

5, Fancy Lane,
Kolkata - 700 001

Dated:- 18 AUG 2006

For ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PRESIDENT
SECRETARY
TREASURER

ALL INDIA MARWARI FEDERATION
152B, MAHATMA GANDHI ROAD.
KOLKATA - 700 007

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2006

EXPENDITURE		AMOUNT RS. P.	INCOME		AMOUNT RS. P.
To SAMAJ VIKAS PUBLICATION EXPENSES - Paper & Printing Expenses - Cooli-Cartage & Postage etc	284,796.50 -	284,796.50	By MEMBERSHIP FEES/ SUBSCRIPTION - Special Membership Fees - All India Committee Fees	144,550.00 1,818.00	146,368.00
To SOCIAL FUNCTION & OTHER ACTIVITIES - Social Function Expenses - Advertisement & Publicity	42,376.75 1,065.00	43,441.75	By SAMAJ VIKAS PUBLICATION - Samaj Vikas Advertisement (Gross) (TDS Rs.1785/- Previous Yr. Rs. 1756/-)	239,000.00	
			- Samaj Vikas Subscription	20,552.00	259,552.00
To ESTABLISHMENT & OTHER EXPENSES (As per Schedule 'C' Annexed)		430,338.25	By Donation Received -As Per Detail		95,500.00
To DEPRICIATION W/O		7,299.47	By BANK INTEREST On Fixed Deposit A/C - From Syndicate Bank	7,500.00	
			On Savings Bank A/C - From The Bank Of Rajasthan Ltd.	87.00	7,587.00
			By Misc Income		700.00
			By BALANCE , CARRIED DOWN		256,168.97
		765,875.97			765,875.97
To BALANCE, BROUGHT DOWN		256,168.97	By BALANCE, BEING EXCESS OF EXPENDITURE OVER INCOME CARRIED TO BALANCE SHEET		1,162,103.39
To BALANCE, FROM PREVIOUS YEAR		905,934.42			
	TOTAL:-	1,162,103.39		TOTAL:-	1,162,103.39

Notes of Accounts:-
(As per Schedule 'D' Annexed)

As per our report of even date annexed herewith

For P.K LILHA & CO.
CHARTERED ACCOUNTANT

CA. P.K. LILHA
Partner
M.No.11092

P. K. LILHA & CO. Chartered Accountants Kolkata

For ALL INDIA MARWARI FEDERATION

PRESIDENT

SECRETARY

TREASURER

5, Fancy Lane
Kolkata:- 700 001

Dated:- 18 AUG 2006

मनुष्य जीवन की सार्थकता

बालकृष्ण गोयनका (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष)

कोई व्यक्ति चाहे किसी भी सम्प्रदाय में विश्वास करता हो, किसी भी जाति या कौम का हो, नैतिकता और सदाचार उसके लिए समान रूप से आवश्यक है। इसके बिना जीवन में शांति का अवतरण नहीं हो सकता। आज सर्वत्र राजनीति का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। और तो और धर्म को भी लोग राजनीति के रंग में रंगना चाहते हैं। हिंसा जैसे तत्व को भी राजनीति के मंच पर घसीट कर ले आते हैं। भाषणों में अहिंसा के उच्च आदर्शों की बड़ी बड़ी बातें और हृदय में हिंसा का हलाहल। यह स्थिति अहिंसा को राजनीति के रंगमंच पर घसीटना नहीं है, तो और क्या है? क्या यह अहिंसा और धर्म की विडम्बना नहीं है? संसार में अहिंसा की आग धड़काने वाले, अहिंसा को अपनाने की बात करे शांति सम्मेलन बुलाए, यह कैसी विसंगति है। दुःख है, आज कुछ ऐसा ही हो रहा है, वस्तुतः अहिंसा और शांति की चर्चा करने के अधिकारी वो हैं, जो अहिंसा और शांति का जीवन जीते हैं। जिनके जीवन में अहिंसा और शान्ति व्याप्त है।

मनुष्य एक सर्वाधिक शक्तिशाली प्राणी है, इस तथ्य को सभी सम्प्रदायों ने स्वीकार किया है, पर मानव जाति का दुर्भाग्य यह रहा कि उसकी शक्ति मानवता के विकास में खपने के स्थान पर उसके ह्रास में खप रही है। मानवता की सुरक्षा के लिए जिस ऊर्जा को संग्रहित किया गया था, यह हथियार का रूप लेकर क्रूरता से उसका संहार कर रही है। मनुष्य के मन की धरती पर उगी हुई धर्म और त्याग की फसल क्रूरता से भावित होकर धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है।

मनुष्य जैसा विचार करता है, वह ठीक वैसा ही बन जाता है। जिन-जिन वस्तुओं का चिंतन मनन करते हैं, हमारा ध्यान उसी पर जाता है।

आवश्यकता है, मनुष्य अपने जीवन को सुधारे, अपने चरित्र का निर्माण करे, हृदय को पवित्र बनावे, सद्‌गुणों को अपने अन्दर बढ़ायें। अनुशासन द्वारा अपने अन्दर की दुष्प्रवृती का नाश करें। इसके लिए आवश्यक है ध्यान तपस्या का बल। शील सदाचार का पालन, संयमित जीवन, तभी हममें वह शक्ति प्राप्त होगी जिससे अपने मन को वश में कर सके। ध्यान साधना का नित्य अभ्यास से अपनी इन्द्रियों पर अधिकार रख सकेंगे, मन शुद्ध निर्मल होगा, शान्ति का जीवन होगा। **मन से सदा दया तथा क्षमा का ही भाव उठेंगे, इससे मन निर्मल बना रहेगा। जो व्यक्ति जितना धर्म में पुष्ट होगा वह उतना ही विनम्र होगा। बड़ों के सामने झुकेगा, उन्हें नमन करेगा, उनकी आज्ञाओं का पालन करेगा, मन को अभिमान रहित रखेगा। शील समाधी प्रज्ञा का जीवन जीता हुआ मनुष्य राग, द्वेश, मोह इन तीन बन्धनों को जड़ से समाप्त कर देता है।**

धर्म का बीज सब में है, यह बीज ऐसे रह जाय, विकसित न हो, फूले फले नहीं तो मनुष्य का जीवन खो दिया। यह बीज को विकसित करें, यह फुलित-फलित हो-अपने भले के लिए अपने मंगल के लिए अपने कल्याण के लिए।

आदमी जब स्वः निरीक्षण का अभ्यासी हो जाता है, तो स्व-संबंधी बहुत सी सच्चाईयाँ उसके सामने उजागर होकर आने लगती हैं। वह स्वानुभूतियों के स्तर पर अपने बारे में बहुत कुछ जानने लगता है। कुदरत के बारे में बहुत कुछ जानने लगता है। जीवन जगत की प्रथम सच्चाई प्रमुख होकर सामने आती है। ''यह दुःख है। व्याधि दुःख है, जरा वस्थादुःख है, अप्रिय का संयोग दुःख है। ''मैं'' के प्रति जितनी गहरी आसक्ति है, उतना गहरा दुःख है। आसक्ति का दृढ़-मूल आलंबन ''मैं'' है। इस मिथ्या दृष्टि के रहते कोई व्यक्ति कैसे विमुक्त हो सकता है, इस अहं और ममत्व से हट कर ही ध्यान साधना में पुष्ट होकर विमुक्त हो सकता है।''

डायरेक्टरी-प्रकाशन उपसमिति 2006-08

डायरेक्टरी-प्रकाशन उपसमिति के अध्यक्ष के रूप में श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया के नाम का मनोनयन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने किया।

अध्यक्ष : श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया
संयोजक : श्री प्रदीप ढ़ेडिया

सदस्य

श्री विनोद सराफ, श्री अनिल डालमिया, श्री दिलीप गोयनका, श्री मुकेश खेतान, श्री बिमल कुमार चौधरी, श्री अमलेश शर्मा, श्री रवि भालोटिया, श्री कैलाशपति तोदी, श्री हरीश काबरा, श्री दिलीप कुमार सराफ, श्री अशोक कुमार देवतिया।

अंधेरा

मैं हूँ अंधेरा, मेरे साए मे होता विचित्र खेल
जग पर राज हमारा।
दीपक तो क्या? मैने, सूर्य को भी ललकारा।
देखकर मेरी असीम शक्ति
उजाला भी मुझ से हारा।
पथ, खाई विहीन, पत्थर रहित
पथिकों का मै प्यारा।

[illegible]

नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।

With best compliments from :

Deorah Seva Nidhi

CHARITABLE TRUST DEDICATED TO SERVICE

(Founder Trustee - Late S. L. Deorah)

13E - Rajanigandha
25, Ballygunge Park
Kolkata - 700019

समाज विकास विचार मंच

समाज विकास के विचार मंच में इस बार हमने श्री हरीप्रसाद कानोड़िया, श्री दीपचन्द नाहटा, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री साधूराम बंसल, श्री इन्द्रचंद संचेती, श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल, श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल एवं श्री चिरंजीलाल अग्रवाल के स्वतंत्र विचार दे रहे हैं। आप भी अपने विचार उपरोक्त प्रश्नों पर व्यक्त कर सकते हैं। बस देर किस बात की, उठाइए कलम और क्रमबद्ध 500 से 800 शब्दों के अन्दर अपनी बेबाक टिप्पणी - स्वतंत्र विचार, अपने पूर्ण परिचय व पासपोर्ट साइज फोटो के साथ 10 फरवरी 2007 तक हमें लिख भेजिए। ध्यान रहे कि प्रकाशित लेखों से अलग हट कर जो विचार आयेंगे उसे प्राथमिकता दी जायेगी। -संपादक

1. *विवाहों में दिखावा, फिजूलखर्ची एवं आडम्बर दिनों-दिन बढ़ रहा है। इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?*
2. *तलाक बढ़ रहे हैं, परिवार टूट रहे हैं, सभी समाजों में कमोबेश यही स्थिति है। मारवाड़ी समाज क्या करे?*
3. *न खाता सही न बही सही, जो मारवाड़ी कहे वही सही। एक समय जबान की कीमत थी, अब वह बात नहीं॥ इस बारे में आपका क्या विचार है?*
4. *मारवाड़ी समाज अब केवल व्यापारी समाज नहीं है। बल्कि शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति के क्षेत्रों में भी इस समाज ने प्रगति की है, लेकिन मारवाड़ी समाज की तस्वीर नहीं बदल रही है ऐसा क्यों?*
5. *एक समय था देश के दस बड़े औद्योगिक घरानों में प्रथम पांच या अधिक मारवाड़ी समाज के होते थे, अब वह स्थिति नहीं है। इस बारे में आप क्या कहेंगे?*
6. *मारवाड़ी समाज की अपनी कुछ विशेष खूबियां रही है, उनको बचाकर रखना है। युवा समाजे के लिए आपका क्या संदेश है?*

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

के

72वें स्थापना दिवस के अवसर पर

शुभकामनाओं के साथ

-संतोष सराफ

जुबान की कीमत, मारवाड़ की हकीकत।

NIF 1955 ESTD.

NANDIKESHWARI
STEEL INDUSTRIES PVT. LTD.

Office :

46, Moulana Abul Kalam Azad Road
Salkia, Howrah - 711101, India

Telephone Nos :

033-2666-2581, 033-2666-2583, 033-2666-2584, 033-32926388
Mobile : 9836122011

Fax : 033-2666-2582

e-mail : **nsi@nsilimited.com**

Products :

Cast Iron Manhole Covers & Frames, Grates, Gully, Ingot Mould, Slag Pot, Bottom Plate, Centre Column etc.

An ISO-9001-2000 Company

REGD, OFFICE & WORKS : BELTALA CHAMRAIL, HOWRAH - 711 323

अच्छी शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी दें

हरिप्रसाद कानोड़िया

1. यह एक चिन्तन का विषय है, जो पूरे समाज को प्रभावित करता है। खासकर मध्यम एवं निम्न वर्ग पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। इसके कारण कन्याओं के सम्बन्ध होने में दिक्कत आती है। आजकल लड़की की तरफ से भी काफी खर्च होने लगा है। जिसके कारण वरपक्ष वाले कन्यापक्ष पर दबाव देने की कोशिश करने लगे हैं। सभी को इस विषय पर गंभीरता से सोचना होगा, एवं आगे बढ़कर सकारात्मक कदम बढ़ाना होगा। समाज की कोई परवाह किये बिना इस तरह की कुरीतियों के खिलाफ दृढ़ता के साथ संघर्ष करना होगा।

2. संस्कार एवं सहन शक्ति का अभाव तथा आधुनिक विचारों वे पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध के कारण तलाक बढ़ रहे हैं। जिसमें असमान्य संबन्धों की भी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता है। इसके लिए बुजुर्ग या बच्चों के माता-पिता भी काफी हद तक उत्तरदायी हैं। वे बच्चों का मन समझे बगैर अपने मान-सम्मान की दुहाई देकर अपने मन-मुताबिक घर में अथवा कन्या से रिश्ता कर देते हैं। ऐसे में बच्चों की पसन्द, अथवा नापसन्द की ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता। इसके कारण भी काफी हद तक तलाक होने के आसार बन जाते हैं। साथ ही साथ नवयुवकों को भी चाहिए कि वे अपने अभिभावकों से इस विषय में खुलकर बात करें। इस दिशा में घर के बुजुर्गों का भी फर्ज बनता है कि वे अपनी पसंद बच्चों पर न थोपें। समाज को पूर्णरूप से इन सभी बातों पर ध्यान रखते हुए प्रत्येक परिवार को अपने आप में सुधार लाने की जरूरत है। आज शिक्षा समाज की बहुत बड़ी जरूरत है, इसलिए हर माँ, बाप का फर्ज बनता है कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी दें।

3. यह भी आधुनिक समाज की ही देने, लोग आमदनी से ज्यादा खर्च करते हैं। संत कबीर कहते थे ''ताते पांव पसारिये जेती चादर होय।'' परन्तु दिखावे में विशेष खर्च एवं संयुक्त परिवारों के टूटने के कारण प्रतिस्पर्धा व सरकारी नीतियों में बदलाव के कारण तथा तकनीकी बदलाव के कारण व्यापार में उत्थान - पतन काफी होने लगा। इसका एक और भी कारण समझ में आता है, वह है नैतिक पतन क्योंकि आजकल संस्कार न तो दिया जा रहा, न ही लिया जा रहा है। लोगों को जागरुक करना है कि ''गर्व से कहो हम मारवाड़ी हैं।'' नैतिक पतन को रोकना होगा। नवयुवकों को हमारी पुरानी विरासत याद दिलानी होगी कि 'प्राण जाये पर वचन न जायी।'

4. मारवाड़ी समाज केवल व्यापारी समाज नहीं है। दूसरे समाज वाले हमें व्यापारी ही समझते हैं। हमें आगे बढ़कर कहना है कि हम देशभक्त हैं। मारवाड़ी समाज का देशभक्ति में विशेष स्थान रहा है। अतीत में झांकने पर पता चलता है कि चितौड़गढ़ की लड़ाई में जब महाराणा प्रताप को सेना के खर्च के लिए पैसों की जरूरत पड़ी थी। उस समय सेठ भामाशाह अपना सर्वस्व दान कर अपना नाम इतिहास में अमर कर गये। इनकी दानवीरता की गौरवगाथा यहीं से शुरू होती है। इसके बाद स्व: घनश्याम दास जी बिड़ला, स्व. भागीरथमल कानोड़िया जी, स्व. सीताराम जी सेक्सरिया आदि तमाम ऐसे नाम हैं, जिनका नाम आज भी उनकी दानवीरता के लिए लिया जाता है। मारवाड़ी समाज का देशभक्ति में भी गौरवशाली इतिहास रहा है। इसका ज्वलंत उदाहरण हैं श्री पन्नालाल जी माहेश्वरी जो अभी अजमेर में रहते हैं। 90 वर्षीय श्री माहेश्वरी व स्वर्गीय कमल नारायण बजाज जैसे अनेक नाम हैं जिन्हें स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का प्रमाण पत्र तक नहीं मिला। जब कि ये लोग स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिए थे। डॉक्टर दाऊदयाल कोठारी ने गुरुदेव रवीन्दरनाथ ठाकुर की कविताओं का हिन्दी में अनुवाद किया।

5. मारवाड़ी समाज विशेषकर जनजीवन से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बन्धित उद्योगों व व्यापार में लगा रहा। रिसर्च नयी तकनीकि, होटल उद्योग, आदि अत्याधुनिक क्षेत्रों अपने धार्मिक विचारों एवं संस्कारों के कारण नहीं जा सका। नये युवक युवतियां शिक्षा, स्वास्थ्य तकनीकी शिक्षा एवं आरोग्य शिक्षा अधिवक्ता आदि क्षेत्रों में काफी प्रगति की। एक समय था जब व्यापार को विशेष दर्जा नहीं दिया जा रहा था। समाज और सरकार के द्वारा व्यापारी वर्ग को हेय दृष्टि से देखा जा रहा था। इसलिए युवकों का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हुआ।

6. मारवाड़ी समाज की अपनी विशेषता संस्कार, संस्कृति, धार्मिकता (परन्तु संकीर्ण धार्मिकता नहीं) सादगी, सेवा भावना, मेहनत, ईमानदारी, बुजुर्गों का आदर एवं संयुक्त प्रेमभाव विशेषता रही है। यही नयी पीढ़ी को सीखना है। इसी से वे खुश रह सकते हैं। आगे बढ़ सकते हैं, अगर यही उनकी बुनियाद रही तो वे एक अदृश्य शक्ति पर विश्वास करके अपने देश व समाज के लिए बहुत कुछ कर सकेंगे आसमान को छू सकेंगे, हिमालय को हिला सकेंगे। यही मेरा युवा समाज को संदेश है।

मिलनी सबकी चार रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।

लम्हों ने ख़ता की थी सदियों ने सज़ा पायी

दीपचंद नाहटा

यह हमारे समाज के लिए एक घातक कुप्रथा साबित हो रही है। विवाहों में जो फिजूल खर्ची हो रही है। इसी कारण समाज में कुरीतियां फैल रही हैं। लोग देखा-देखी अपनी क्षमता से अधिक दिखावा करना चाहते हैं। इसके कारण उनका अपना स्वस्थ्य एवं उनके बच्चों का स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। क्योंकि जो पैसा बच्चों की शिक्षा पर खर्च होना चाहिए था, अथवा जो पैसा घर के विकास, बच्चों के स्वास्थ्य या इस तरह के अन्य अच्छे कार्यों में खर्च होना चाहिए था। वह दहेज, मिलनी, या सजन गोठ की भेंट चढ़ जाता है। जिसका सीधा प्रभाव हमारे समाज के विकास को प्रभावित करता है। सम्मेलन ने इस पुनीत कार्य का जो बीड़ा उठाया है, इसकी मैं मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूँ। मैं तो यह भी मानता हूँ कि अब वक्त आ गया है, जब समाज इसे सिरे से नकार दें। समाज व समाज से जुड़ी सामाजिक संस्थाओं को भी चाहिए कि वे भी इस पुनीत कार्य में एक साथ योगदान करें। यदि इसके बाद भी स्थिति में सुधार नहीं हो तो फिर समाज को चाहिए कि ऐसे लोगों के विरुद्ध कड़े कदम उठाये । सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जेहाद जरूरी है।

हमारे वेदों में उल्लेख मिलता है कि "संयमः खलु जीवनम्" अर्थात् संयम में ही जीवन है। लेकिन आज के इस आपाधापी - भागम् भाग के दौर में यह संयम सिर्फ किताबों में ही सिमट कर रह गया है। हम अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के साथ साथ अच्छे संस्कार नहीं दे पा रहे हैं। जिसके कारण यह समस्या रूपी सुरसा आज हमारे बच्चे एवं बच्चियों को एक-एक कर निगलती जा रही है। हमारे दर्शनशास्त्र में उल्लेख मिलता है कि—

"अयं निजः परोवेति गणनां च लघुचेत्साम,
उदार चरितानाम् तु वसुदैव सकुटुम्बकम्॥"

अर्थात् यह अपना है वह पराया है ऐसी गणना तो छोटे चित्त वाले करते हैं, मानवता विकासोन्मुख होने के बजाय विनाशोन्मुख होने को चली है।

निर्माण से ज्यादा विनाश को अहमियत दी जा रही है। अतः ऐसे परिवेश में रिस्तों का टूटना परिवारों का विखंडित होना, स्वाभाविक है। मारवाड़ी समाज को चाहिए कि वे अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार अवश्य दें, बच्चों को प्रेरणादायक कहानियां, रामायण, गीता का अध्ययन अवश्य करायें जिससे उनमें अच्छे संस्कार उपजे एवं आगे चलकर यही बच्चे देश व समाज को नई दिशा देने में कामयाब होंगे।

आज का इंसान सिर्फ पैसों के पीछ भाग रहा है। जिससे ऐसी समस्या उत्पन्न हुयी है। उस जमाने में जबान की कीमत थी। लेकिन आज के इस जमाने में वे सब बातें बेमानी लगती है। बातों का इस कदर अवमूल्यन हुआ है कि आज का आम आदमी इन सब बातों पर विश्वास ही नहीं करता, जरूर कुछ लोगों ने पहले कहीं न कहीं किसी न किसी के साथ विश्वासघात किया होगा। जिसकी यह सजा आज हमें व हमारे बच्चों को मिल रही है। इस संदर्भ में मुझे एक शैर याद आता है कि-

"कुछ ऐसी भी मंजिल है तारीख की नज़रों में।
लम्हों ने खता की थी सदियों ने सज़ा पायी।।"

मारवाड़ी समाज शिक्षा कला के साथ-साथ हर क्षेत्र में आज आगे आया है, जो बड़ा ही शुभ लक्षण है। इनकी तस्वीर दिनों दिन सुधरती जा रही है। पहले हमारे समाज के लोग सिर्फ व्यवसाय में ही रहा करते थे। लेकिन आज लगभग हर क्षेत्र में मारवाड़ी समाज आगे आया है। चाहें वह शिक्षा का क्षेत्र हो या तकनालॉजी का इस समाज ने हर क्षेत्र में उन्नति की है। थोड़ा सा पीछे जाकर देखें तो भारत की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री स्वः कल्पना चावला हमारे ही समाज से सम्पर्क रखती है। पहले जहां लड़कियों को पढ़ाने लिखाने से परहेज किया जाता था। आज उसी समाज की एक बच्ची पराये देश में जाकर न सिर्फ सफलता की मिसाल कायम की बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणाश्रोत भी बनी।

मारवाड़ी समाज का दायरा आज बहुत बढ़ गया है। ऐसे में सिर्फ एक छोटे से इलाके को न देखा जाय बल्कि पूरे विश्व को देखा जाना चाहिए। आज दुनिया के स्टील किंग श्री लक्ष्मीनिवास जी मित्तल हमारे समाज से हैं। तो हम यह पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि हमारे समाज की तस्वीर बदल रही है। हाँ, इतना जरूर कहूंगा कि अभी जितना परिवर्तन होना चाहिए था उतना नहीं हो पाया है। इसके लिए हमें प्रयास करना होगा।

संयम, धर्म में आस्था, परोपकार, कठोर परिश्रमी, अल्पव्यापी, इमानदारी, व समरसता यह मारवाड़ी समाज की विशेषतायें हैं। आज के बदलते परिवेश में ये तमाम चीजें विलुप्तप्रायः होते जा रही हैं। हमें अपने इन आदर्शों को बचाना होगा बच्चों के लिये व युवा समाज के लिए सिर्फ यही कहना चाहूँगा कि वे चाहे जिस भी रास्ते को चुनें लेकिन एक बात का ध्यान अवश्य रखें, कि हमेशा अपनी उस प्राचीन विशेषता को ध्यान रखते हुए पूरी ईमानदारी से परिश्रम करें, व हर क्षेत्र में एक नयी पहिचान कायम करें।

●

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

मॉडर्न झोंको के थपेड़ों से युवाओं को बचायें

हरिप्रसाद बुधिया

यह दिखावा, फिजूल खर्ची, व आडम्बर, एक ऐसी वास्तविकता है। जो आज के एक विभीषिका का रूप धारण कर चुकी है। ऐसे में जो बड़े हैं, जिनको समाज ने महात्म्य प्रदान किया है। उनको आदर्श स्थापित करना होगा। क्योंकि मध्यम वर्ग उन्हीं का अनुसरण करना चाहता है। यह रोग देखा-देखी पनप रहा है। ऐसे में लोग अपनी आय से ज्यादा व्यय कर देते हैं। जो बाद में परेशानी का कारण बन जाता है। क्योंकि जब पैसों की जरूरत पड़ती है, तो ऐसे ही लोग कहीं बैंक तो कहीं सूद खोरों के चक्कर में पड़ जाते हैं। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए, लोगों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम अपनी स्थिति का आंकलन करें उसके बाद खर्च के बारे में सोचें। लेकिन सिर्फ इसका उल्टा हो रहा है। लोग देखते हैं कि अमुक बड़े आदमी ने अपनी बेटी की शादी में इतना पैसा खर्च किया, तो हम क्यूँ नहीं कर सकते। बस इसी चक्कर में कहीं से कर्ज लेकर या कुछ गिरवी रखकर जैसे भी हो वह इस दिखावे को मूर्तरूप देना चाहता है। इसी चक्कर में जब एक बार पिस जाता है, तो फिर उसे सुधरने में काफी वक्त लग जाता है। इसलिए मेरा निवेदन समाज के उन बड़े लोगों से है कि यदि वे इस कुप्रथा के खिलाफ अगर एकजुट हो जायें तो यह समस्या हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगी।

यह तो एक आंधी है जिसे मीडिया ने और असीमित दूरदर्शनिक चैनलों के माध्यम से तीव्रता प्रदान कर रही है। इससे बचने के उपायों पर चिन्तन करने की आवश्यकता है। इससे बचने के लिए अच्छे संस्कार, अच्छे साहित्य का वाचन अथवा श्रवण करना, विशेष लाभदायक होगा। एक समय था जब सामूहिक परिवारों का जमाना था, लोगबाग पूँछा करते थे कि जहाँ रिश्ता ठीक करके आये हो वहां परिवार की क्या स्थिति है, कितने सदस्य हैं कौन क्या करता है आदि। लेकिन परिस्थितियाँ बदली परिवेश बदले, आज स्थिति यह है कि लोग चाहते हैं कि परिवार में जितने कम सदस्य हों उतना ही बेहतर है। लिहाजा परिवारों का टूटना स्वाभाविक है। इससे बचने के लिए जैसा मैंने बताया है, अच्छे संस्कारों व सदाचार पर विशेष ध्यान देना होगा। इसे मैं नहीं मानता, क्योंकि अभी भी काफी हद तक हम लोग अपने वादे पूरा करते हैं। परन्तु निश्चित रूप से पहले वाली बात नहीं है। संस्कारों, व विचारों में गिरावट आना, व लोभ इसके मुख्य कारण हैं। समाज को इससे उबरने की आवश्यकता है।

अब पहले वाली बात नहीं रही। हमारे समाज की पहले जितनी नकारात्मक छवि थी अब उसमें सुधार आया है। अब काफी हद तक परिस्थितियां बदल चुकी हैं। क्योंकि आज अपने समाज के कई होनहार उद्योगपति भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व में अपनी ख्याति और उपलब्धियाँ समाज के सामने लाने में कामयाब हुए हैं। उद्योगों के अलावा जिस किसी भी क्षेत्र में अपने समाज के नव युवकों ने पदार्पण किया है, वहीं अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। ऐसे तमाम उदाहरण सामने आये हैं। आज शिक्षा उद्योग एवं व्यापार के साथ-साथ नई पीढ़ी अन्य क्षेत्रों जैसे डॉक्टरी, वकालत, प्रशासनिक क्षेत्र में भी अपना कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

पहले लोग व्यवसायी थे जो बड़ी-बड़ी स्टेट्स खरीद लिए व प्रथम स्थान पर आ गये। लेकिन आज के बदलते हुए परिवेश में स्वाभाविक रूप से दूसरा समाज भी सामने आया है। परन्तु आज भी मारवाड़ी समाज के उद्योगपति अपना गौरव स्थापित किये हुए हैं। जिनमें कुछ का नाम यदि गिनाया जाय तो श्री लक्ष्मीनिवास मित्तल, श्री कुमार मंगलम बिड़ला, श्री अनिल अग्रवाल आदि। परन्तु आने वाले समय में जो भी प्रतिस्पर्धात्मक दौर में अपनी योग्यता व विश्वास की कसौटी पर स्वयं को खरा साबित कर पायेंगे, उन्हीं का झण्डा ऊंचा रह पायेगा।

भविष्य हमेशा आने वाली पीढ़ी पर यानि युवा समाज पर आधारित है। यदि हम अपने युवाओं को मॉडर्न झोंकों के थपेड़ों से बचाकर अच्छाइयों कोमुखरित कर सकें, तो मारवाड़ी समाज आने वाले समय में भी हमेशा सिरताज रहेगा।

भूल सुधार

सितम्बर 2006 मास के अंक 9 में उपसमितियों की सूची में साहित्य-संस्कृति उपसमिति के 2006-08 में सदस्य श्री प्रताप सिंह सुराणा के जगह श्री प्रताप दुगड़ प्रकाशित हो गया, कृपया भूल सुधार कर श्री प्रताप सिंह सुराणा पढ़ें।

आयकर समस्या

श्री नारायण जैन (प्रसिद्ध आयकर सलाहकार) अगले अंक से आयकर पर अपने लेख देंगे।

आपको आयकर सम्बन्धी कोई प्रश्न/समस्या पर समाधान चाहिए तो हमें लिख भेजें, जिसका समाधान करेंगे श्री नारायण जैन।

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

सबसे बड़ा है देश और समाज

साधूराम बंसल

मेरा तो यह मानना है कि यह सब बड़े लोग बढ़ा रहे हैं। क्योंकि भारतवर्ष हमेशा से आदर्शवादी रहा है। यहां हम किसी को भी अपना आदर्श मानते हैं, एवं बाद में उसी का अनुकरण करते हैं। ऐसे देश में जाहिर है, हमेशा से ही समर्थ पुरुषों अथवा महापुरुषों को आदर्श मानते हुए उन्हीं का अनुसरण करने की परम्परा है। संस्कृत में कहा भी गया है कि—महाजनों येन गता सपन्था। अर्थात् जिस रास्ते से महापुरुष गये हों वही रास्ता है। अब आज भी जिस रास्ते से बड़े लोग जाते हैं वही पथ मान लिया जाता है। आम आदमी उन्हीं का अन्धा अनुकरण करने को उद्दत हुआ जा रहा है। लिहाजा यह बीमारी महामारी का रूप लेती जा रही है।

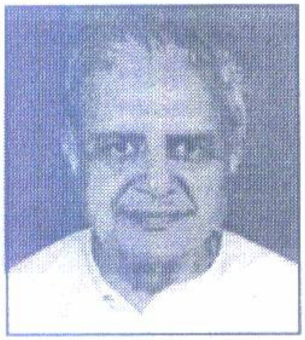

आदर्शों के सही नहीं होने के कारण यह पतन हो रहा है। पहले लोग राम, कृष्ण, गौतम, गाँधी को अपना आदर्श मानते थे। उन्हीं का अनुकरण करते थे। लेकिन आज दूरदर्शन के पात्र उनके आदर्श हो गये हैं। लिहाजा यह पतन होना तो स्वाभाविक है। यह अच्छी बात नहीं है। इसके लिए सुधार की आवश्यकता है। यह चिन्ता के साथ-साथ चिन्तन का विषय है। समाज को इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है। वह भी बड़े लोगों द्वारा विशेषरूप से इस दिशा में रचनात्मक कदम उठाने, व इसके प्रति सचेत रहने की आवश्कता है।

आजकल पैसा सबसे बड़ी चीज हो गयी है, बाप बड़ा न भइया सबसे बड़ा रूपइया। एक समय था जब मूँछों के बाल की कीमत थी। लेकिन आज यह बात नहीं है। इसके लिए कुछ लोगों की कुत्सित मानसिकता जिम्मेदार है। चूँकि शुरू - शुरू में इस पर ध्यान नहीं दिया गया। लिहाजा आज यह बीमारी भयावह रूप ले चुकी है। इससे बचते हुए समाज को अपनी पुरानी प्रतिष्ठा को वापस लाना होगा।

मारवाड़ी समाज की तस्वीर के बारे में मेरा यही मानना है कि परिस्थितियां सुधार की ओर अग्रसर हैं। सुधार निरंतर दर्ज किया जा रहा है। पहले यहां हमारे घरों में बच्चियों को शिक्षा देने में भेदभाव बरता जाता था। आज हमारी बच्चियां डॉक्टर, इंजीनियर, एकाउन्टेन्ट आदि बनकर आ रही हैं। समाज के बच्चों की इस प्रगति पर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

आज का दौर बड़े ही उत्थान पतन का है, ऐसे में मारवाड़ी समाज के सामने चुनौतियां जरूर हैं। हमें उन्हीं चुनौतियों का सामना करते हुए, आगे बढ़ना है। तस्वीर पहले वाली बिल्कुल नहीं है। हालांकि आज के इस उत्थान व पतन के दौर में स्थितियां असामान्य अवश्य हुई है। लेकिन स्थिति नियन्त्रण में है। युवासमाज को आगे आना चाहिए, वे यदि आगे नहीं आयेंगे तो ये सारी खूबियां विलुप्त हो जायेंगी। सिनेमा, दूरदर्शन, फैशन, व पश्चिम से आने वाले सांस्कृतिक प्रदूषणों से इस पीढ़ी को बचाना होगा। इसलिये अच्छे आदर्शों एवं अपने प्राचीन इतिहास का अध्ययन व मनन करना आवश्यक है। मैं तो आज यह भी मानता हूँ कि मेरे पास आज भगवान ने जो कुछ भी दिया है। यह समाज की ही देन है। समाज के मुझ पर बहुत से एहसान हैं। इसलिए मेरे लायक जो भी कार्य समाज समझे उसके लिए आदेश दे, मैं पूरी निष्ठा के साथ उस सत्कार्य को पूर्ण करने में अपना गौरव समझूंगा। युवाओं के लिए भी यही कहना चाहूँगा कि समाज व देश से बढ़कर कोई नहीं होता समाज ही सर्वोपरि है।

नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद

नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद, काठमाण्डु का आगामी वार्षिक अधिवेशन 4 जनवरी 2007 को काठमांडू, नेपाल में आयोजित किया जा रहा है। नेपाल के प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला को उद्घाटन के लिये आमंत्रित किया गया है। यह जानकारी मारवाड़ी परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री आत्मा राम मुरारका ने दी है। श्री मुरारका ने सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है। नेपाल राष्ट्रीय मारवाड़ी परिषद से सम्मेलन का वर्षो से सम्बन्ध रहा है। परिषद के अन्य पदाधिकारी हैं—हरिलाल अग्रवाल, गंगाकिशन राठी (उपाध्यक्ष) कुंज बिहारी क्याल (महा सचिव) प्रदीप राजगढिया (कोषाध्यक्ष) मुरारीलाल अग्रवाल, रमेश तापड़िया, उमाशंकर अग्रवाल (सचिव) एवं सत्यारायण राठी (सह कोषाध्यक्ष)।

विवाह में सादगी बरतें।

पुराने आदर्शों को पुनर्जीवित करना है

इन्द्रचन्द संचेती

यहाँ महानगर में जब सुसम्पन्न लोग हैं, यहाँ हर आदमी के पास पैसा है। ऐसे में फिजूल खर्ची जरूर बढ़ेगी। मेरा तो यह भी मानना है, कि कहाँ नहीं बढ़ रहा है। गाँवों में भी पहले 20 या 50 हजार खर्चा करने पर अच्छी शादियां हो जाया करती थीं। आज बढ़ती हुई महंगाई में वही शादियां 4 या 6 लाख में पड़ने लगी हैं। लेकिन यह अच्छी बात नहीं है। इसे समूल नष्ट करने के लिए सृजनात्मक कदम उठाना चाहिए। समाज में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। जो खर्च यहां दिखावे पर हो रहा है। उसे शिक्षा पर खर्च कीजिए। बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाइये, फिर देखिए समस्या अपने आप समाप्त हो जायेगी।

मारवाड़ी समाज आज सिर्फ एक जगह नहीं है। न ही यह कोई छोटा समुदाय है। यह एक बहुत बड़ा समाज है। जो पूरी दुनियां में फैला है। परिवार टूटने की बात मैं नहीं मानता। क्योंकि पहले राजघराने या जमींदारों के यहां लोग नौकरी करते थे। लोगों की अपनी सीमित आवश्यकतायें थी। लोग शिक्षित अथवा अल्पशिक्षित हुआ करते थे। उस समय घर में एक मालिक हुआ करता था, वही पूरे परिवार को चलाता था। लेकिन बदलते परिवेश में यह सम्भव नहीं है, इसलिए परिवार टूटेंगे ही। क्योंकि उस समय 10 या 20 लोगों की संख्या वाले एक परिवार का खर्च 100 रुपये था। आज वही 50 हजार रुपये है। उस समय एक आदमी की आय 200 रुपये थी। आज उस अनुपात में आमदनी घटी सुविधायें व संसाधन बढ़े, खर्च बढ़े। इसलिए अब संयुक्त परिवार की सोच बीते जमाने की बात हो गयी। आज का समाज शिक्षित है, सभ्य है। उसके खर्च की अपनी सीमायें हैं। जिसके बाहर जा पाना उसके वश की बात नहीं है। लिहाजा अगर विघटन होता है। उसे सकारात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए। अलग रहकर एक व्यक्ति अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला सकता है। जो कि संयुक्त परिवार में रह कर सम्भव नहीं है। इसलिए अगर वे अलग रह कर सुखी रह सकते हैं। तो इसमें इतना हो हल्ला मचाने की क्या जरूरत है।

एक समय था जब राजपूत मूँछों की शान के लिए अपनी जान कुर्बान कर देते थे। आज वह बात नहीं रही। अपनी मूँछ का एक बाल साहूकार के यहाँ गिरवी रखकर उससे पैसा उधार ले लेते थे। एवं बाद में पैसा लौटा कर अपनी मूँछ का वह बाल वापस ले लेते थे। समय बदला परिस्थितियां बदलीं आज वह बात कहानी बनकर रह गयी। ठीक उसी तरह मरवाड़ी समाज में ही नहीं कमोबेश हरेक समाज में यह स्थिति देखने को मिलती है। इसके पीछे जो दूसरा कारण समझ में आता है। वह है संस्कारों का आभाव। हम अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें व इसे रोकें।

स्थिति या तस्वीर नहीं बदल रही ऐसा कौन कहता है? सिर्फ एक छोटी सी जगह के बजाय निगाह को थोड़ा दूर ले जाइये। एक समय था जब हमारे समाज में लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। आज हमारी बच्चियां उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। वे चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, इंजीनियर, डॉक्टर के अलावा एम. बी.ए. कर रही हैं। समय के साथ मारवाड़ी समाज की तस्वीर बिल्कुल बदल रही है। इसमें कोई दो राय नहीं है।

मारवाड़ी समाज ने भी अन्य समाज की तरह उन्नति की है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या व्यवसाय का। स्व: कैप्टन कल्पना चावला। वह भी हमारे ही समाज की बच्ची थी। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि कल्पना पूरी दुनिया की बच्चियों के लिए प्रेरणाश्रोत बन गयी। आज मारवाड़ी समाज प्रगति की ओर है। लेकिन जरूरत है और तेजी से सुधार करने की।

जबान की कीमत, ईमानदारी, मेहनत, व उच्च संस्कार मारवाड़ी समाज की विशेषतायें रही हैं। इसे पुर्नजागृत करना है। आज के युवाओं के लिए सिर्फ यही संदेश है कि वे शिक्षा के क्षेत्र में अपनी योग्यता और बढ़ायें। पूरी लगन के साथ आगे बढ़ें एवं समाज व देश का नाम रौशन करें।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

आडम्बर हीनता बरतें व मेहनत करें

महावीर प्रसाद अग्रवाल

केवल विवाहों में ही नहीं बल्कि हर जगह यह प्रवृत्ति बहुत ज्यादा बढ़ गयी है। दिखावा आडम्बर यह किसी एक समाज की बात नहीं रही। यह अब कमोबेश हर समाज में विकराल रूप धारण करती जा रही है। देर से ही सही मगर, यदि समाज इस विषय में कुछ सोच रहा है, तो हम समाज के इस कदम का स्वागत करते हैं। हम अपनी बात कर रहे हैं, पहले हमारे यहां संयुक्त परिवार की प्रणाली थी। हम हमेशा यह देखते थे कि जिस घर में रिश्ता कर रहे हैं। उस परिवार में कितने सदस्य हैं उस समय लोग इसे पूंजी समझते थे एवं उसी घर में रिश्ता करते थे, कि बच्ची चार अच्छे लोगों के बीच रहेगी। लेकिन आज यह स्थिति नहीं है। अब न तो कोई कहने वाला रहा न ही कोई सुनने वाला। जो मन में आ रहा है करते जा रहे हैं।

इसमें एक खास बात्त हो रही है। जिसमें मारवाड़ी लड़कियाँ अच्छी व उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। जो कि एक बहुत अच्छी बात है। लेकिन व्यवसाय हमारी रीढ़ है। इसे भी ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा उत्थान हो रहा है। पर इसके साथ ही साथ बुराइयां भी बढ़ रही हैं। इसके लिए सम्मेलन सकारात्मक भूमिका निभायें। इस लिए आगे आने की जरूरत है।

बहुत से और भी समाज में उद्योग बढ़े हैं। हमारे मारवाड़ी समाज का योगदान उद्योगों में बहुत है। अब तो हर समुदाय व हर प्रान्त के लोग भी सामने आ रहे हैं। संचार में प्रगति हुई है। इस दौर में काफी कुछ परिवर्तन आया है। लेकिन आज का परिदृश्य बदल चुका है। समय के हिसाब से इसे और आगे बढ़ाना है समाज के उत्थान के लिए सतत प्रयास करना है। फिर भी हम लोगों की स्थिति काफी अच्छी है।

मारवाड़ी समाज की खूबिया आडम्बर हीनता, शिक्षा, दान, पारिवारिक सद्भाव व कम खर्च एवं ज्यादा कमाई की पुरानी परम्पराओं को बचाये रखना है। सामंजस्य का अभाव न होने पाये। मेहनत करें और यह आडम्बर हीनता बरते अपने परिवार एवं समाज को ऊपर उठायें।

With best compliments from

ARUN KUMAR MAHESHWARI

Trivium India Software Pvt. Ltd.

#454 6-A, Cross; 11th Main

Sadashivnagar

Bangalore - 560080

Ph. : 4132-8212

Fax : 2361-5481

www.triviumsys.com

arunm@triviumsys.com

Leading providers of Customer Service / Support software

तातें पांव पसारिये जेती चादर होय

प्रह्लादराय अग्रवाल

समाज में सम्पन्नता बढ़ रही है जब समाज में सम्पन्नता बढ़ेगी, तो लोग उसका आनन्द भी लेना चाहेंगे। लिहाजा फिजूल खर्ची तो बढ़ेगी ही, लेकिन सामाजिक तौर पर लोगों को यह समझाने की जरूरत है कि भइया, सन्त कबीर दास जी कह गये हैं कि "ताते पांव पसारिये जेती चादर होय।" अर्थात् जितनी लम्बी चादर हो उतना ही पैर फैलाइये। कहने का मतलब यह कि अपनी जेब जितना खर्च वहन कर सके उतना ही खर्च कीजिए। इस दिशा में सम्मेलन ने अथवा बड़े बुजुर्गों ने जो भी रास्ते सुझाये हैं, हमें उनका अनुकरण करना चाहिए।

इस समस्या के अन्त:करण में जा कर यदि देखा जाय तो एक बात खुलकर सामने आती है। वह है स्त्रियों या मातृशक्तियों का शिक्षित होना। नि:संदेह आज की नारी उच्च शिक्षा प्राप्त कर हर क्षेत्र में अपनी मजबूत पकड़ बनाये हुए हैं। लिहाजा उसके साथ यदि सामंजस्य बैठाकर यदि नहीं चलेंगे तो तलाक तो बढ़ेंगे ही। आज के युवक एवं युवतियां दोनों ही शिक्षित हैं अपना भला बुरा स्वयं समझते हैं। ऐसे में यदि वैचारिक मतभेद हो जाय या कोई और समस्या आ जाये तो विघटन होना स्वाभाविक हो जाता है। इसके लिए भी मेरा ऐसे युवाओं से यही कहना है कि कोई भी कदम उठाने से पहले खूब सोच समझकर निर्णय करें। घर के बड़े बुजुर्गों से सलाह अवश्य लें, अपने शुभचिंतकों की राय को भी अहमियत दें। एक साथ मिलकर रहने को प्राथमिकता दें।

इसके लिए संस्कार एवं नैतिकता जिम्मेवार है, आज कल इसका समाज में ह्रास हो रहा है, इसे रोकना होगा। हालांकि यह बहुत कम है, फिर भी इस पर मनन करने की आवश्यकता है। पहले की तरह आज भी हमारे समाज में भी करोड़ों का व्यवसाय जबानी ही होता है। लेकिन इस समस्या से इनकार भी नहीं किया जा सकता। इसमें सुधार के लिए बच्चों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी देने की जरूरत है। उन्हें पुरखों के पुराने इतिहास को बताना अतिआवश्यक है कि हमारे समाज में जबान की कीमत थी, प्राण जाय पर वचन न जाये, हमारी पुरानी परम्परा रही है।

आज भी मारवाड़ी समाज अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पहले से ज्यादा समझता है। हमारा समाज आज शिक्षा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी प्रगति कर रहा है। पहले जिन क्षेत्रों में हमारी पकड़ मजबूत नहीं थी आज हमारे बच्चे उन क्षेत्रों में भी अपने मजबूत पकड़ बनाये हुए हैं, जो कि बहुत अच्छी बात है। मारवाड़ी समाज इस क्षेत्र में भी प्रगति कर रहा है। समाज आज उत्थान की ओर अग्रसर है। यह एक बहुत अच्छी बात है।

मेरे विचार से मारवाड़ी समाज में विकास हो रहा है। आज दुनिया के जानेमाने उद्योगपति श्री लक्ष्मीनिवास जी मित्तल हमारे ही समाज से सम्पर्क रखते हैं। बिड़ला घराना व भारती मित्तल जी आदि हमारे ही समाज के हैं। इसलिए आज पहले वाली स्थिति अब नहीं है।

मेरा संदेश यही है कि युवा समाज को चाहिए कि अपनी पहिचान बनाकर रखें। अपनी भाषा एवं अपने संस्कारों को बचाकर रखना है। समाज के लिए बहुत कुछ करना है। इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। ताकि समाज एवं देश का उत्थान हो।आप सभी उपलब्धियों के शिखर पर आरूढ़ हो यही मेरी मंगलकामना है।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं पदेन सदस्यों हेतु ध्यानार्थ

केन्द्रीय सम्मेलन द्वारा जनवरी/फरवरी 2007 में सत्र 2006-08 की डायरेक्टरी का प्रकाशन किया जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि पिछले दिनों आपको एक जानकारी-पत्र भेजा गया था, मिला होगा।

कृपया जल्द भर कर प्रेषित करें जिससे डायरेक्टरी प्रकाशन का कार्य अग्रसर हो सके।

-रवींन्द्र कुमार लड़िया
अध्यक्ष-डायरेक्टरी प्रकाशन उपसमिति

प्रान्तीय अध्यक्षों एवं महामंत्रियों हेतु ध्यानार्थ

आगामी जनवरी/फरवरी 2007 में डायरेक्टरी का प्रकाशन किया जा रहा है। आपसे अनुरोध है अपने प्रान्त की प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं पदेन सदस्यों की पूर्ण पते मय सूची शीघ्र ही केन्द्रीय कार्यालय में प्रेषित करने की व्यवस्था करें, जिससे डायरेक्टरी प्रकाशन का कार्य आगे बढ़ सकें।

-रवीन्द्र कुमार लड़िया
अध्यक्ष-डायरेक्टरी प्रकाशन उपसमिति

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

कुरीतियों के खिलाफ युवा समाज आगे आये

चिरंजीलाल अग्रवाल

इसको रोकना बहुत जरूरी है, क्योंकि जब तक यह कुरीतियां समाज में रहेंगी, समाज को इसी तरह खोखला करती रहेंगी। सम्मेलन का यह प्रयास सराहनीय है। हम सबको चाहिए कि हम सभी इस दिशा में खुलकर सहयोग करें। अभी मैं सिलीगुड़ी एक मंगनी में शामिल होने गया था, तो वहां लड़के वाले बीरगंज नेपाल से आये थे। लड़की की तरफ से मैं भी आमंत्रित था। जब मिलनी की बात आयी तो लड़की वाले सोने के चार सिक्के देने लगे तो लड़के वालों ने कहा नहीं हम तो कागज का चार रुपया ही लेंगे। मुझे बहुत अच्छा लगा। यह बात मैं इस लिए उल्लेख करना चाहता हूँ क्योंकि पिछले दिनों सम्मेलन ने चिन्तन शिविर का आयोजन किया था। जिसमें सर्वसम्मति से एक न्यूनतम वैवाहिक आचार संहिता को मंजूरी दी गयी थी। मुझे लगा कि शायद यह उसी का प्रतिफल है।

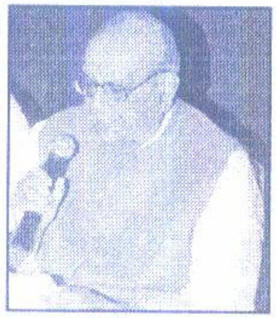

मारवाड़ी समाज हम दो हमारे दो का जो सिद्धान्त लेकर चल रहे हैं। यह पारिवारिक विघटन का एक खास कारण बन रहा है। पहले हमलोग संयुक्त परिवार में रहते थे। जहां एक व्यक्ति घर का मुखिया होता था। उसकी सब लोग इज्जत करते थे। वही पूरे परिवार को चलाता था। समय बदला परिस्थितियां बदलीं, समाज में शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ा, लोगों की सोच बदली, आज का एक शिक्षित नवयुवक उन पुरानी परम्पराओं में विश्वास नहीं करते हैं। लिहाजा यह समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। इसके लिए समाज के युवाओं को आगे आने की आवश्यकता है। ताकि इस नयी समस्या से समाज को मुक्ति दिलाया जा सके। इसके लिए जगह-जगह संगठन बनाने की आवश्यकता है। लगभग हर छोटे या बड़े इलाके में युवाओं के ऐसे संगठन बनाये जायें एवं उन्हीं के माध्यम से इन कुप्रथाओं को रोकने का प्रयास सार्थक साबित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

ऐसा होने के पीछे सिर्फ एक ही कारण है, जो मेरी समझ में आता है और वह है नैतिकता का पतन, आज यह कार्य वही लोग कर रहे हैं जो नैतिक रूप से पतित हो चुके हैं। मैं किसी का नाम नहीं ले रहा, एवं न ही मेरा उद्देश्य किसी को पीड़ा पहुँचाना है। लेकिन मेरा मानना है कि ऐसे लोगों की संख्या मारवाड़ी समाज में बहुत ही कम है। बाकी अन्य समाज को यदि देखा जाय तो यह संख्या, अथवा ऐसे लोगों का अनुपात काफी कम है। आज भी हमारे समाज में करोड़ों का लेन देन जबानी होता है। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि मैं सिर्फ अपवादों को छोड़कर आपसे बात कर रहा हूँ। लेकिन समस्या है, इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

इसका एक मात्र कारण है संगठन का अभाव, हम आपसी अन्तर्कलह से त्रस्त हैं, एवं हम संगठित भी नहीं हैं। यदि हमारा संगठन मजबूत होता एवं उसकी पकड़ आम आदमी तक होती तो शायद इसकी नौबत ही नहीं आती। इसलिए मेरा यही कहना है कि आपस के द्वन्द्व को भुलाकर हमें संगठित होने की आवश्यकता है।

तस्वीर बिल्कुल बदली है, आज पूरी दुनियां के स्टील के बादशाह श्री लक्ष्मीनिवास जी मित्तल हमारे ही समाज से सम्पर्क रखते हैं। इसके अलावा बिड़ला परिवार तथा ऐसी अनेक नाम गिनाये जा सकते हैं। हमारे समाज के लोग आज की विकट परिस्थिति में भी पूरे धैर्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

युवाओं को मेरा यही संदेश है कि खूब मेहनत करें, जिस किसी भी क्षेत्र में जायें एक नई मिसाल कायम कर अपने समाज एवं अपनी कौम का नाम रौशन करें। यही मेरी शुभकामना है।

सबसे बड़ा आश्चर्य

महाभारत काल की घटना है- युधिष्ठिर को पूछा गया दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है ? तब उन्होंने उत्तर दिया-मनुष्य। सबको मरते देखता है पर सोचता है कि वह नहीं मरेगा। जीवन और मृत्यु के बारे में एक भजन है-

क्या तन मांजता रे, इक दिन माटी में मिल जाना।
खून का गारा बना है, ईंट जिसमें हड्डियाँ।
चन्द श्वासों पर टिका है, यह ख्याली आसमां।
मौत की पुरजोर आंधी, जब इसे टकरायेगी।
एक मुद्दत की इमारत, खाक में मिल जायेगी।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

आवश्यकता एवं चुनौतियां

ओंकार पारीक

अमूमन संगठन चार प्रकार के होते हैं, यथा-व्यावसायिक, राजनैतिक, मजदूर और सामाजिक। मूलत: व्यावसायिक, राजनैतिक और मजदूर संगठनों का उद्देश्य अपने-अपने नीहित स्वार्थों की पूर्ति किया जाना है, जिसका लाभ सीमित लोगों को ही मिलता है, जबकि सामाजिक संगठनों का उद्देश्य वृहत्त समाज के सर्वांगीण विकास के लिए होता है।

सामाजिक संगठनों को छोड़कर अन्य सभी संगठनों के प्रतिद्वंद्वी संगठन मौजूद हैं और वे एक-दूसरे की गाहे-बगाहे टांग खींचते रहते हैं। केवल सामाजिक संगठन एकमात्र ऐसा संगठन है, जिसमें कोई व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा नहीं है। सभी संगठनों का बस एकमात्र उद्देश्य है अपने-अपने समाज-समूह का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और बौद्धिक विकास करना।

मारवाड़ी संगठन की आवश्यकता :

19वीं शती के अंतिम भाग और 20वीं शती के प्रारंभिक काल में विशेषत: कोलकाता, मुंबई, दिल्ली आदि महानगरों में मारवाड़ी व्यवसायियों ने तत्कालीन अंग्रेज सरकार के सामने अपना पत्र रखने के लिए व्यावसायिक संगठनों का गठन किया। फलस्वरूप इस स्थानों में मारवाड़ी चैम्बर अथवा मारवाड़ी चैम्बर आफ कामर्स की स्थापना की गई। कालान्तर में इन्होंने वृहद व्यावसायिक हितों को ध्यान में रखते हुए अपने-अपने नामों से जातीय सूचक नाम हटाकर अन्य रख लिए। यहां यह भी उल्लेख करना समीचीन होगा कि उन दिनों मारवाड़ी समाज के विभिन्न घटकों ने अपने-अपने समूह संगठन बना रखे थे। जैसे अग्रवाल सभा, माहेश्वरी सभा, जैन सभा, तेरापंथी परिषद, ब्राह्मण सभा इत्यादि। कालान्तर में गांव और शहरों के नाम पर संगठनों की परिपाटी ने जन्म लिया। फलस्वरूप सुजानगढ़ नागरिक, रतनगढ़ नागरिक परिषद, लक्ष्मणगढ़ नागरिक परिषद जैसे छोटे-छोटे संगठन अस्तित्व में आए। हालांकि इनका कोई वृहद उद्देश्य या कार्यक्रम नहीं था। यथा नाम तथा कार्यों के प्रसंगवश हम यह भी जानकारी देना चाहेंगे कि इन जातीय और शहर-गांव के नाम पर बने संगठनों का प्रादुर्भाव प्रारम्भ में कोलकाता महानगर से शुरू हुआ, जो बाद में सर्वत्र फैल गया।

सम्मेलन का जन्म :

1935 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने आम चुनाव में नागरिकों में मताधिकार की आचार संहिता बनाने के लिए स्थान-स्थान पर आयोग का गठन किया। ऐसे में तत्कालीन समाज के भविष्य द्रष्टाओं की दूरगामी सोच ने एक सशक्त मारवाड़ी संगठन की आवश्यकता को महसूस किया कि इन छोटे-छोटे जातीय संगठनों के बनिस्पत गोरी सरकार से लोहा नहीं लिया जा सकता। फलस्वरूप एक सशक्त मारवाड़ी संगठन की स्थापना की जाए, जो संपूर्ण मारवाड़ी समाज को प्रतिनिधित्व करता हो।

असम के प्रसिद्ध डिब्रूगढ़ शहर में मारवाड़ी चैम्बर आफ कामर्स के कार्यालय में 18 अगस्त, 1935 की समाज बंधुओं की बैठक हुई, जिसमें तत्कालीन समाज की अग्रिम पंक्ति, श्रद्धेय रायबहादुर वृद्धिचक्र करवा, रंगलालजी खेमानी, नौपतरायजी केडिया, आशारामजी पोद्दार, पं. शिवभजनजी शर्मा, भगवानदासजी कयाल, जुगलकिशोरजी केड़िया, रायबहादुर ख्यालीरायजी हंसारिया के अलावा पन्नालालजी राजपुरोहित (पारीक) ने अहम भूमिका का निर्वहन किया और सर्वसम्मति से निर्णय लेकर आसाम प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की। समाज को संगठित कर एक मंच पर लाने और सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना, समाजोत्थान और शिक्षा के प्रचार-प्रसार संबंधी कई प्रस्ताव पारित किए गए।

अधिवेशन की सबसे बड़ी सफलता पूर्वोत्तर में हिन्दी का प्रथम हाईस्कूल श्री मारवाड़ी हिन्दी हाईस्कूल, डिब्रूगढ़ तथा प्रथम बालिका विद्यालय की स्थापना का निर्णय किया गया। अतीत का मारवाड़ी बालिका विद्यालय, डिब्रूगढ़ वर्तमान में सूरजमल जालान बालिका शिक्षा सदन के नाम से जाना जाता है। इन दोनों शिक्षण संस्थानों से सर्वत्र समाज में जोश आया और जगह-जगह पर हिन्दी हाईस्कूलों का निर्माण शुरू हुआ। तिनसुकिया, शिवसागर, जोरहाट आदि कई स्थानों पर इसी अधिवेशन की प्रेरणा से समाज शिक्षा के विकास में क्रमवार प्रगति की ओर बढ़ता गया।

आज ऊपर उल्लेखित मीषियों में से एक भी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा सौंपे गए इन संगठन और शिक्षा-संस्थानों के निर्माण में दी गई आहुतियों के लिए यह समाज सदैव उनका चिर ऋणी रहेगा।

समाजोत्थान की दिशा में सम्मेलन :

भले ही आज की पीढ़ी और सम्मेलन के नाम पर नाक भौं सिकोड़ने वाले यह कहते फिरे कि सम्मेलन ने क्या किया, **ऐसे लोगों को हम यह जानकारी देना चाहेंगे कि समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सम्मेलन की अविस्मरणीय उपलब्धि रही है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। एक समय था, जब मारवाड़ी महिलाएं सड़कों पर अश्लील गीत गाते हुए जाती थीं। पर्दा प्रथा को हटाने तथा बाल-विवाह को रोकने और विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक कार्यकर्ताओं को कई बार लांछित, प्रताड़ित होना पड़ा है और लाठियां भी खानी पड़ी हैं, लेकिन वे अपने मंसूबे से पीछे नहीं हटें। नारी शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी सम्मेलन ने अहम भूमिका निभाई है।**

जब-जब समाज पर किसी प्रकार की आंच आई, तब-तब सम्मेलन आगे आया। चाहे वह 1965 का खाध्य आंदोलन हो या 1968 का 26 जनवरी कांड। 1973 की इंफाल की घटनों ने समाज को हिलाकर रख दिया था। इन सबके अलावा जब-जब समाज पर कोई आपत्ति-विपत्ति आई, वह अपने समार्थ्य और ताकत के साथ डटकर खड़ा हुआ है। यहां एक और बात भी बताना चाहूंगा कि पहले सम्मेलन अकेला था, अब उसकी युवा पीढ़ी और महिलाएं भी कंधे से कंधा मिलाकर युवा मंच और महिला सम्मेलन के साथ समाज के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं

सम्मेलन का साईनबोर्ड काम नहीं करता। उसका लैटर पैड ही काम करता है। किसी भी संस्था को चलाने के लिए अर्थ, कार्यकर्ता और समाज के प्रबल समर्थन की आवश्यकता होती है। मेरा अपना 25-30 सालों का अनुभव रहा है कि सम्मेलन ने समाज हित के अलावा स्वयं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष किया है और यही कारण है कि वह आज 70 साल बाद भी जिंदा है। आज समाज का अधिकांश पढ़ा लिखा वर्ग अंतर्राष्ट्रीय क्लबों की ओर भागता है, जहां कार्य कम और photo is our motto उद्देश्य की अधिक पूर्ति होती है। जब कभी समाज पर कोई आपत्ति आती है, तब ये क्लब वाले मुंह छिपा लेते हैं और सारा का सारा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ समभाव धरा-का-धरा रह जाता है। ऐसे में उन्हें याद आती है सम्मेलन की। समाज की इस प्रतिनिधि संस्था को वे सालाना एक सौ रुपए भी देना गंवारा नहीं करते और क्लबों में हजारों रुपए पानी की तरह बहा देते हैं।

समाज में कई लोग (यह शब्द जान -बूझकर प्रयोग कर रहा हूं) ऐसे भी हैं, जो सम्मेलन अथवा अन्य मारवाड़ी संस्थाओं में उच्च पदों पर बैठें हुए हैं, लेकिन करते-धरते कुछ नहीं हैं। यही नहीं, वे स्वयं तो कुछ करने का माद्दा नहीं रखते, तो दूसरों को भी नहीं करने देते। हाँ, मेढ़क की तरह टांग खींचने में सिद्धहस्त हैं। ऐसे लोगों से सम्मेलन तो क्या, कोई भी संस्था पनप नहीं पाएगी।

अपने सार्वजनिक जीवन में बहुत कुछ देखा-सुना और सहा है, अनुभव किया है, जो मधुर कम कड़वा अधिक रहा है।

सम्मेलन की आवश्यकता क्यों?

आज के परिप्रेक्ष्य में ही नहीं, सम्मेलन की मांग और उसकी आवश्यकता समाज को हमेशा रहेगी। हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि आज पूर्वोत्तर उग्रवाद का ज्वालामुखी बन चुका है, ऐसे में सम्मेलन को न सिर्फ जिंदा रखना है, बल्कि तन-मन-धन से उसे मजबूत करना होगा। सम्मेलन एक फायर ब्रिगेड है, इसे अच्छी तरह से चुस्त-दुरुस्त और मजबूत बनाकर रखना, समाज के हर सदस्य का कर्त्तव्य है। कहीं ऐसा न हो कि जब हम कई बार प्रत्यक्ष देखते हैं और अखबारों में पढ़ते हैं कि अमुक जगह आग लगाने पर दमकल समय पर नहीं पहुंचा तो कहीं रास्ते में ही खराब हो गया, पाइप फटा हुआ था, भीड़ ने दमकल में आग लगा दी, तोड़-फोड़ कर दी इत्यादि।

क्या हम सम्मेलन के साथ भी ऐसा ही होते होना देखना चाहते हैं? अपने विवेक को टटोलिए और सारी बातों का गहराई से विश्लेषण कर उसे आत्मसात कर समाजहित में साथ कदम से कदम मिलाकर चलें, यही इस लेख की सार्थकता और उद्देश्य है।

राजस्थानी में एक कहावत है-घर का पूत कुँआरा डोले और पाड़ोस्यां का फेरा करावें। सम्मेलन और युवा मंच के लिए उचित स्थान नहीं है और जो थोड़ा किन्हीं दानदाताओं की मेहरबानी से है, तो वहां बिन बादल बरसात होती है। वहीं क्लबों के लिए ऊंचे-ऊंचे भवन हमारे तथाकथित समाजसेवी बनाते हैं. क्या फिर भी हम उन्हें अपना मानें?

और अंत में यह लेख संपादक महोदय के आग्रह पर केवल सम्मेलन और समाजहित में लिखा गया है। कुछ अनावश्यक टिप्पणियां जान-बूझकर भी की गई है, क्योंकि वस्तुस्थिति और उचित कारणों की प्रदर्शित करने के लिए इन्हें दर्शाना आवश्यक था। किसी व्यक्ति विशेष पर हमारा आक्षेप नहीं है। (साभार-संवाद)

माँ

"रात से ही उस बुढ़िया को क्या हो गया ?"

झूठमूठ चिल्लाये जा रही है।

"ओरे-ओरे।" हाय मैं मर गयी।"

सीमा ने माँ की नकल करते हुए दो-चार बातें मुझे सुना दी। मैंने उसे समझाने का प्रयास किया।

देखो। माँ है कहीं दर्द हो रहा होगा। एक बार जाकर पूछ ही लोगी तो तुम्हारा क्या बिगड़ जायेगा।

"हुँ:.....दर्द!"

सब नाटक है।

तुमको बहुत दया आती है तो जाकर करो सेवा। मुझे तो नींद आ रही है। बच्चों का, दूध का, पानी का, दाई का, नौकर का- सब तो मुझे ही देखना पड़ता है।

"तुमको क्या है ?"

बड़ा आया है, माँ को जाकर पूछ लो। हूँ।

माँ का इतना ही ख्याल रखना था तो शादी क्यों की थी। नौकरानी रख लेते। तुम्हारी भी सेवा कर देती। (सीमा ने आक्रोश में ताने कसे)

"देखा सीमा।"

यह सब अच्छा नहीं लगता तुमको।

तुम तो पढ़ी लिखी हो।

माँ तो आखिर माँ ही है, "मेरी ही या तुम्हारी।"

"छोड़ो-छोड़ो मुझे ज्ञान देने की जरूरत नहीं है।"

सीमा को अब मेरी बात का कोई असर नहीं था। मैं उठा... माँ के कमरे में गया। देखा माँ दर्द से छटपटा रही थी।

हाथ लगा के देखा - शरीर बुखार से तप रहा था।

डाक्टर को फोन किया।

फोन रखते ही फोन की घंटी पुन: बजी....

शायद डाक्टर बाबू ने पुन: फोन किया हो, यह सोचकर फोन उठाया। फोन पर किसी औरत की रोने की आवाज आ रही थी।

"सीमा को देना।"

"सीमा तुम्हारा फोन!"

नहीं....न.....ही माँ। मैं कल ही चलकर आ रही हूँ। देखती हूँ आकर। भइया से भी बात करूँगी। तुम घबड़ाना नहीं।

क्या हुआ माँ को ?

मैंने सीमा से सहानुभूति जताते हुए पूछा।

माँ दो दिन से बुखार में जल रही है। और वह आगे कुछ भी नहीं बोल सकी। जोर-जोर से रोने लगी। बीच-बीच में सुबक सुबक कर बोलती "मेरी माँ को कुछ हो गया तो ?"

फिर थोड़ा रुक कर बोली,

'मां' को देखने डाक्टर कितनी देर में आयेंगे ?

मैंने जवाब दिया, बस आते ही होंगे।

-शम्भु चौधरी

MAKESWORTH INDUSTRIES LTD.

Kamalalaya Centre
Suit 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata - 700 013

MACO GEL is a high profile product of Makesworth Industries Ltd. (MIL), a part the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL - THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

FULLY compatible with polyethylene of medium and high density.
No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.
Stable without migration.

FILL LONG INTO YOUR CABLE

आज के युग की मूल समस्या और उसका समाधान

दीपचंद नाहटा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का यह अहोभाग्य रहा है कि उसे समाज के विशिष्ट व्यक्तियों का योगदान प्राप्त होता रहा है। सन् 1935 में अपनी स्थापना काल से लेकर आज तक सम्मेलन ने अपने नित्य नूतन अभियानों, कार्यक्रमों एवं विचारों से सदा समाज को सही दिशा देने का प्रयत्न किया है, जिससे आज मारवाड़ी समाज जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

निसन्देह मारवाड़ी समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकासशील एवं अग्रणी हैं। विकास की चरम सीमा पर है। पर साथ ही साथ विभिन्न प्रकार की समस्याओं का आगमन हमारी उन्नतशील छवि को धूमिल करने का प्रयास कर रहा है। वर्तमान संदर्भ में हमारे समाज और हमारे समक्ष अपनी सादगी, संयम, सरलता, सभ्यता एवं संस्कृति को अक्षुण्य रखने के महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे समक्ष विद्यमान है। अत: हमें नई पीढ़ी के लिये ऐसे आदर्श स्थापित करने होंगे जिससे आने वाली पीढ़ियां सुसंस्कृत, सभ्य एवं विकासशील हो सके।

आज के युग की मूल समस्या अर्थवाद, आडम्बर, फिजूलखर्ची, उपभोक्तावाद, भोगवाद की ओर हमारे उन्नत समाज का झुकाव होना हमारे समाज के लिये चिन्तन मनन का विषय है। आज के भौतिक युग में अर्थ उपार्जन प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है। पर, अपने द्वारा परिश्रम से अर्जित धन को आडम्बर, फिजूलखर्ची में खर्च करना कहाँ तक उचित। **हमारे अर्थोपार्जन की सार्थकता तभी होगी जब हम अपने श्रम से संचित धन का रुग्न मानवता की सेवा, शिक्षा के विकास एवं देश के नव निर्माण में सुनियोजित तरीके से निवेस करें।** जिससे समाज एवं देश की सेवा में हमारे समाज को सर्वाधिक योगदान देने का सम्मान मिल सकें।

आचार्य तुलसी कहा करते थे : **संयमः खलु जीवनम्,** अर्थात् संयम ही जीवन है। वास्तव में आज समाज संयम और दानशीलता की सुप्रवृत्ति से प्राय: विमुख होता जा रहा है। आज के संदर्भ में सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम स्वयं अहंकार, संकीर्णता, लोभ, अधिकार भावना और स्व का विसर्जन करें और अपने अन्तरमन में परोपकार की भावना, प्रेम, सहिष्णुता, उदारता, सहृदयता, समानता, सर्वधर्मसम्भाव की भावना को विकसित करते हुये संसार के प्रत्येक प्राणी के हित एवं उत्थान के लिये कार्य करने का संकल्प करें। हम नई पीढ़ी को अच्छे सुसंस्कृत विचारों की शिक्षा दें ताकि आने वाली पीढ़ी उदात् चारित्र एवं अच्छे संस्कारों की संपोषक हों।

हम अपने नैतिक मूल्यों, परम्परा की शक्तिशाली धारा, संयम और सरलता को और अधिक सुदृढ़ कर मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण उन्नयन में अपना सक्रिय सहयोग दें। हम यह सदा स्मरण रखें कि स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ी समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान युग में मारवाड़ी समाज के लिए संयम, सादगी और नैतिक मूल्यों की स्थापना करना अत्यन्त आवश्यक है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को अब और अधिक सजग एवं सशक्त होकर समाज का मार्ग दर्शन करना है। हम अपने समाज एवं देश के विकास में अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह करें जिससे सम्मेलन और मारवाड़ी समाज की सृजनात्मक छवि और भी प्रखर रूप से उभर कर विश्व के मानचित्र पर देदीप्यमान रहें।

हमारे समाज और देश की उन्नति के लिए आवश्यक है कि जीवन के हर क्षेत्र से भ्रष्टाचार दूर हो किसी शायर की बात मुझे याद आती है :-

"कुछ ऐसी भी मंजिल है तारीख की नजरों में,
लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पायी है"।

मारवाड़ी समाज शिक्षा कला के साथ-साथ हर क्षेत्र में आज आगे आया है, जो बड़ा ही शुभ लक्षण है। तस्वीर बदलती जा रही है। पहले हमारे समाज के लोग सिर्फ व्यवसाय में ही रहा करते थे लेकिन आज लगभग हर क्षेत्र में मारवाड़ी समाज आगे आया है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या टेकनालॉजी का। थोड़ा सा पीछे जाकर देखें तो भारत की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री स्व. कल्पना चावला हमारे ही समाज से सम्पर्क रखती है। पहले जहां लड़कियों को पढ़ाने लिखाने से परहेज किया जाता था। आज उसी समाज की एक बच्ची दूसरे देश में जाकर न सिर्फ सफलता की मिसाल कायम की बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणाश्रोत भी बनी।

मारवाड़ी समाज का दायरा आज बहुत बढ़ गया है। ऐसे में सिर्फ एक छोटे से इलाके को न देखा जाय बल्कि पूरे विश्व को देखा जाना चाहिए। आज दुनिया के स्टील किंग श्री लक्ष्मीनिवास जी मित्तल हमारे समाज से हैं। तो हम यह पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि हमारे समाज की तस्वीर बदल रही है। हां इतना जरूर है कि अभी जितना परिवर्तन होना चाहिए था उतना नहीं हो पाया है। इसके लिए हमें निरन्तर प्रयास करना होगा।

जब कभी किसी भी समस्या का समाधान न हो रहा हो तो गांधी जी के विचारों को याद करना चाहिए उनके विचारों का अनुशरण करने मात्र से ही बहुत सी समस्याओं का समाधान स्वत: हो जायेगा। हिंसा की प्रचण्ड आंधी के बीच सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, संयम को कायम रखने वाला नाम गांधी है। प्रलय की ध्वंस लीला से बचने का एक मात्र उपाय है "महात्मा गांधी की अहिंसा"। यह वर्ष गांधी की सत्याग्रह आंदोलन का शताब्दी वर्ष है। गांधी की सत्याग्रह आज भी मानव को राष्ट्रहित और वैश्विक शांति के लिए प्रेरणा देता है।

महात्मा गांधी ने भारतीय संस्कृति पर इतनी अधिक दिशाओं में प्रकाश डाला है जिसका सम्यक मूल्य निर्धारित करना किसी के लिये संभव नहीं दिखता। खान-पान, रहन-सहन, धर्म-कर्म, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता में जो भी आचार विचार प्रचलित है उनमें प्रत्येक पर कहीं न कहीं गांधी की छाप है। ●

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companies that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the letter. More than just financial products and services. SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of God makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVIC

हमें हमारी पुख्ता पहचान कायम करना है

सांवरमल भीमसरिया

इसीलिए तो नगर-नगर बदनाम हो गये मेरे आंसू।
मैं उनका हो गया कि जिनका कोई पहरेदार नहीं था॥

देश के कोने-कोने में ही नहीं विश्व के कोने-कोने में फैले मारवाड़ी समाज के लोगों की स्थिति पर जब भी मैं गहराई से विचार करता हूँ तो नीरज की ये पंक्तियां मुझे बरबस ही याद हो जाती हैं।

मारवाड़ी बदनाम है। कहा जाता है कि यह समाज आत्मकेन्द्रित होता है। सिर्फ पैसा बनाना और उसे अपने लिए उड़ाना इस समाज के लोगों की चारित्रिक विशेषता है। ऐसा कहने और सोचने वाले कभी यह नहीं देखते कि इस समाज ने अपनी मातृभूमि से अलग, जहां भी इसका ठिकाना है, सामान्य लोगों के लिए क्या-क्या किया। अगर गौर से मारवाड़ी समाज के लोगों के कृतित्व और व्यक्तित्व का आंकलन किया जाय तो यह सहज ही प्रमाणित होता है कि यह समाज भारतीय समाजों में अकेला ऐसा समाज है जिसमें दया, धर्म और दान की प्रवृत्ति नैसर्गिक रूप से रही है। इस समाज ने सदियों से पीड़ित, उपेक्षित, शोषित समाज को जीविका का संसाधन देकर जो महान कार्य किया है। क्या उसे इतनी सहजता से भुलाया जा सकता है?

सदियों पहले राजस्थान, हरियाणा और मालवा के रेतीले भूखंड पर जीविका का संसाधन न जुटा सकने की बाध्यता ने जिस समाज को अपनी मातृभूमि से विस्थापित होने को मजबूर किया वही मारवाड़ी समाज देश और विश्व के जिस कोने में भी गया वहां उसने अपना सारा प्यार उड़ेल दिया। यह सोचकर भी आश्चर्य होता है कि उस जमाने में जब आज की तरह से उन स्थानों पर पहुंचा जहां तक पहुचना आज भी कष्ट साध्य है। कठोर परिश्रम की मानसिकता, स्थानीय लोगों से हिल-मिल कर रहने की प्रवृत्ति, स्थानीय सभ्यता और संस्कृति में रच-बस जाने की विलक्षणता, ईमानदारी ही जिस समाज के लोगों की कुल पूंजी हो उस समाज के विकास की कहानी को क्या कहेंगे?

मारवाड़ी समाज के लोगों ने असम्भव को भी सम्भव कर दिखाने का कमाल किया। बंजर और बीहड़ों को अपनी मेहनत से हरा-भरा लाभजनक क्षेत्र बनाने का काम किया मारवाड़ियों ने। देश का कोना-कोना इस बात का गवाह है। देश का शायद ही कोई कोना हो जहां मारवाड़ी समाज के लोगों द्वारा निर्मित धर्मशाला, पाठशाला, चिकित्सालय आदि उपलब्ध न हों। फिर भी मारवाड़ी बदनाम है?

क्योंकि मारवाड़ी समाज में योग्य राजनीतिक नेतृत्व का अभाव है। जो नेतृत्व है वह स्थानीय या क्षेत्रीय परिधि में ही सिमटा हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ी समाज की समस्याओं को लेकर आन्दोलन करने वाले, जनमत का निर्माण कर सरकार एवं प्रशासन के सम्मुख चुनौती पेश करने वाले तथा समाज को विकास की राह पर आगे बढ़ाने वाले राजनीतिक नेतृत्व अगर होते तो सम्प्रति इस समाज के सम्मुख स्थिति कुछ और ही होती।

सक्षम समाजोन्मुख, दूरदर्शी, नेतृत्व के बिना किसी भी समाज का सामग्रिक विकास संभव नहीं है। योग्य नेतृत्व हो तो समाज को संगठित करने एवं उसे सटीक पथ पर संचालित करने में दिक्कत नहीं होती। पर नेतृत्व अगर कमजोर और आत्मकोन्द्रित हो तो समाज को संगठित करना बहुत मुश्किल होता है।

नवीन और पौराणिक मान्यताओं के संघर्ष का प्रभाव भी इस समाज पर स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। समाज का एक अंश जहां सूचना तकनीक के प्रभाव को आत्मसात् कर व्यापार - वाणिज्य और पेशे में वैश्विक पहचान कायम करने में सफल हो रहा है। वहीं समाज का एक बड़ा हिस्सा प्रतियोगिता में टिक नहीं पाने की मानसिक यंत्रणा से ग्रसित होकर धार्मिक कर्मकांड में अपनी ऊर्जा खपा रहा है। मैं धर्म विरोधी नहीं हूँ। धर्म के प्रति मेरी पूरी आस्था है और यह मेरी पहचान का आधार भी है पर धार्मिकता की खातिर अपनी उद्यमिता का त्याग कर देने को मैं कम से कम मारवाड़ी समाज के लिए उचित नहीं मानता। उद्यमिता इस समाज की पहचान है जिसकी रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिए।

हमने दुनिया को नहीं जाना अथवा दुनिया ने हमें नहीं जाना। कारण कुछ भी हो अब इसके प्रतिकार का समय आ गया है। अब हमें हमारी पुख्ता पहचान कायम करनी है और इस पहचान के कायम करने होगी।

21वीं सदी में मारवाड़ी समाज की पहचान को पुख्ता करने के लिए हमें कुछ ऐसे उपाय करने हैं जो विशिष्ट हों।

यह युग विज्ञान और तकनीक के चर्मोत्कर्ष का युग है, इसलिए विज्ञान और तकनीक को आत्मसात् कर, दूरदर्शिता पूर्ण योजनायें बनाकर एवं उन्हें क्रियान्वित करके ही हम अपनी विशिष्ट पहचान बना सकते हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने इतिहास से सबक लें। उद्यमिता को अपना मूलमन्त्र बनाये, अपनी ताकत को पहचाने तथा नई पीढ़ी के समक्ष एक ऐसा आदर्श रखें अनुकरण कर उन्हें गर्व का बोध हो। किसी शायर ने क्या खूब कहा है :

गुजिस्ता वक्त की यादों को फिर करो ताजा।
बुझे चिराग जलाओ बहुत अंधेरा है॥

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

Ready Steady Grow

Yes, we are one of the fastest growing Financial Services groups in India having more than 5 years of dedicated services and 10,000 satisfied customers throughout the Country. Everyday our business associates enjoy our association and *GROW*.

BUSINESS ACTIVITIES	ATTRACTIVE FEATURES
• Member NSE - Capital & F&O Segment	• Total equity research support through SMS and e-mail
• Member BSE - Capital and F&O Segment	• Online Back office
• Depository Participants (CDSL)	• E-contract notes
• Member - NCDEX & MCX	• Initial Public Offers
• Merchant Banker	• Remarkably low brokerage
• Mutual Fund distributors	• D.P. - Auto Pay-in facility
• Forex Services	• Single Account Opening Form
	• Single VSAT

GOLDEN OPPORTUNITY

Become our business associates/ sub-brokers anywhere in India

ASHIKA

Contact : **ASHIKA GROUP**
Trinity, 226/1, A.J.C. Bose Road, 7th Floor, Kolkata-700 020
Ph. : 2283 9952, 2289 1551-54,
E-mail : ashika@ashikagroup.com, Web : www.ashikagroup.com
Pawan Jain 98300 49008 • **Daulat Jain** 98300 29008

NSE-INB-INF-230833437 BSE-INB-INF-010833433 DP-IN-DP-CDSL-250-2004	NCDEX-00191 MCX-12010 ARN-12417

Growing & Sharing with You

मारवाड़ी युवा मंच कोलकाता शाखा का वार्षिक समारोह

दायें से अ.भा.मा. युवा मंच के रा. उपाध्यक्ष श्री श्रवण अग्रवाल, प्रा. अध्यक्ष श्री संजय अग्रवाल, पूर्व रा. अध्यक्ष श्री प्रमोद शाह, रा. अध्यक्ष श्री अनिल जाजोदिया, कोलकाता शाखा अध्यक्ष श्री अनिल डालमिया, अ. भा. मा. सम्मेलन श्री सीताराम शर्मा अतिथिगण श्री प्रदीप गोयल, श्री राधेश्याम सुल्तानिया, श्री ओमप्रकाश भरतीया एवं श्री निर्मल खरकीया।

मारवाड़ी युवा मंच कोलकाता शाखा का 19वां वार्षिकोत्सव 10 दिसम्बर 2006 को विद्या मन्दिर सभागार में मनाया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल जाजोदिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रमोद शाह, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, सांसद श्री सुधांशु शील, श्री प्रदीप गोयल, श्री निर्मल खरकिया, श्री राधेश्याम सुल्तानिया, श्री ओम प्रकाश भरतिया विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। स्वागत भाषण शाखा अध्यक्ष श्री अनिल डालमिया ने दिया एवम् संचालन श्री विमल कुमार चौधरी ने किया। श्री अनिल जाजोदिया ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। श्यामप्रेमी श्री शुभकरण करनानी ने नृत्य नाटिका के रचयिता श्री रवीन्द्र केजरीवाल 'रवि' का सम्मान किया। शाखा सचिव श्री अनुप सांगानोरिया, उपाध्यक्ष श्री विजय झुनझुनवाला, श्री रवि भालोटिया, कोषाध्यक्ष श्री निर्मल कुमार चौधरी, पूर्व राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री शम्भु चौधरी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ाी श्रवण अग्रवाल एवम् प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. संजय अग्रवाल एवम् पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष कानोड़िया, श्री महेश शाह, पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री रवीन्द्र कुमार लडिया, श्री सुभाष सोन्थलिया के अलावा अनेक राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय पदाधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर स्व. भंवरमल सिंधी विशेषांक के रूप में शाखा का मुखपत्र 'उद्घोष' का विमोचन भी किया गया एवम् श्री रवीन्द्र केजरीवाल 'रवि' द्वारा प्रस्तुत श्री श्यम बाबा की अमर गाथा 'नाटिका' का मंचन किया गया।

कानपुर शाखा का मिलन समारोह

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन शाखा कानपुर का दीपपर्व स्नेह मिलन समारोह स्थानीय राजस्थान भवन, करांची खाना में बड़े ही हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ जिसमें टी. बी. कलाकारों द्वारा एक से बढ़कर एक हास्य एवं मनोरंजन के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिसका उपस्थित सदस्य परिवारों ने जम कर लुफ्त उठाया इसके साथ ही महिलाओं के लिये पुरुषों के लिये एवं बच्चों के लिये अलग- अलग प्रकार के स्पाट गेम खिलाकर उन्हें पुरुस्कृत किया गया।

कानपुर मारवाड़ी सम्मेलन के समारोह का एक दृश्य।

संस्था के अध्यक्ष सुशीलकुमार तुलस्यान ने अपने स्वागत सम्बोधन में सभी सदस्यों के बधाई दी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से महामंत्री संजय अग्रवाल, बल्देव प्रसाद जाखोदिया, महेशचन्द शर्मा, संजीव झुनझुनवाला, महेश भगत, सत्यनारायण सिहानिया, अनिल परसरामपुरिया, जयकुमार डालमिया, सुनील केडिया, श्रीगोपाल तुलस्यान, विश्वनाथ पारीक, सत्यनारायण नेवटिया, कमलेश गर्ग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष सत्येन्द्र महेश्वरी ने किया।

युगपथ चरण

मामराज अग्रवाल फाउण्डेशन ने डा. किदवई को सम्मानित किया

कोलकाता, 15 नवम्बर। भारतीय भाषा परिषद सभागार में हरियाणा के राज्यपाल डा. ए. आर. किदवई को मामराज अग्रवाल फाउण्डेशन ने 'ज्ञानोदय सम्मान' से सम्मानित किया। उद्घाटन दीप प्रज्वलन किया समारोह अध्यक्ष न्यायाधीश श्यामल कुमार सेन ने। गणेश वंदना व देशभक्ति गीत का गायन राजस्थान विद्या मंदिर की छात्राओं ने किया। फाउण्डेशन अध्यक्ष श्री मामराज अग्रवाल ने स्वागत भाषण में मेधावी छात्रों के सम्मान में आयोजित प्रथम सम्मान समारोह हेतु डा. किदवई की प्रशंसा करते हुए अब तक 9 बार बंगाल एवं 4 बार राजस्थान में हुए कार्यक्रमों का विवरण दिया। विशिष्ट अतिथि अखिल भारतवर्षीय सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने फाउण्डेशन द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की। डा. ए. आर किदवई को इस अवसर पर 'ज्ञानोदय सम्मान' से सम्मानित करते हुए शाल, श्रीफल, पुष्पमाला, अभनन्दन पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गेया। डा. किदवई ने सम्मान से अभिभूत हो फाउण्डेशन के प्रति आभार प्रकट करते हुए देश विदेश में भारतीयों के हर क्षेत्र में अग्रणी होने का ब्यौरा दिया। उन्होंने प्रसन्नता जाहिर की कि हरियाणा प्रांत चतुर्दिक प्रगति कर रहा है। समारोह अध्यक्ष न्यायाधीश श्यामल कुमार सेन ने अपने पूर्व संस्मरणों को उद्धृत करते हुए बताया कि मामराज अग्रवाल कोलकाता की संस्कृति में ऐसे घुल-मिल गये हैं कि उन्हें यहाँ दानवीर भामाशाह समझा जाता है क्योंकि वे मेधा का सम्मान ही नहीं बच्चों की स्कूल पोशाकें, स्कूल फीस, पुस्तक आदि हेतु आर्थिक अनुदान करते हैं साथ ही चिकित्सा क्षेत्र में उपस्थित लोगों को मुफ्त चश्मा तथा आंख आप-रेशन भी करवाते हैं। इस अवसर पर पेरेंट्स ओन क्लीनिक के मूक-वधिर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे उपस्थित जन-समुदाय ने मुक्तकण्ठ से सराहा। डा. किदवई ने बच्चों को पुरस्कृत किया। श्री कृष्ण स्वरूप दीक्षित ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन एवं अभिनन्दनवाचन महावीर प्रसाद रावत ने किया।

(बायें से दायें) न्यायाधीश श्यामल कुमार सेन, डॉ. ए. आर. किदवई, राज्यपाल हरियाणा, श्री मामराज अग्रवाल एवं श्री सीताराम शर्मा।

Career Development Opportunities

- IAS/APS and Allied Services Examinations
- Indian Forest Service & West Bengal Forest Service Examination
- WBCS (Exe) & Allied Services Examination
- WBCS (Judicial) Examination
- Language Courses - Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit & Hindi.
- Joint Entrance Examinations for West Bengal & National Level Instituitions.
- Mass Communication, Journalism and Public Relations.
- CA Courses (PE-I, PE-II & Final)
- CS Courses (Foundation, Intermediate & Final)
- MBBS, PG Medical Entrance
- Hospitality & Event Management
- UPSC Exam for NDA & CDSE for IMA including SSB interview.

✓ Fully AC ✓ Modern Facilities ✓ Loan/ Stipend given
✓ Hostel/Guest Accomodation Available
✓ Highly qualified success oriented faculty

Institute For Inspiration & Self Development
IB-200/1, Sector III, Salt Lake, Kolkata-106, Phone : 2335-2378/2697 Fax : 23352379
e-mail : admin@iisdedu.in, feedback@iisdedu.in, website : www.iisdedu.in, www.iisd.in

प. बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष

सिलाई मशीन वितरण

पं. बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा कोष के सचिव श्री बाबूलाल अग्रवाल ने बताया है कि इस संस्था ने गैर सरकारी संगठन रोशनी को 5 सिलाई मशीनें भेंट दी। इन सिलाई मशीनों के जरिये गरीब महिलाएं अपनी रोजी-रोटी जुटा पायेंगी।

इस अवसर पर श्री विश्वम्भर नेवर स्थानीय पार्षद निजामुद्दीन शम्स, श्री रतन शाह, श्रीमती मीरा बुबना ने भी अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रामनाथ झुंझुनूवाला ने की। धन्यवाद ज्ञापित किया श्री कृष्ण लोहिया ने।

जुनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति

जुनागढ़ मारवाड़ी महिला समिति द्वारा दीपावली मिलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम पूर्ववत नगरपाल श्री माणिकचन्दजी अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य मे सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में डॉ. उमाकान्त पंडा, श्री वेदप्रकाश गोयल, श्री अचुत पंडा ने शामिल होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती जामोती देवी ने सभी को दीपावली की हार्दिक बधाई दी। इस अवसर पर आशा देवी खेमका, कांतादेवी बंसल, संतोष गोयल भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया था।

मारवाड़ी युवा मंच की भाग्यशाली दानपत्र योजना सफल

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की भाग्यशाली योजना इस वर्ष राष्ट्रभर में अपनी सक्रिय 488 शाखाओं को 1.80 करोड़ रुपये दानपत्र बेचने का लक्ष्य रखा था, दिल्ली प्रांत एवं प. बंगाल प्रांत ने लक्ष्य से कई गुण अधिक दान पत्र क्रमशः (58 लाख, 51 लाख रुपये), उत्कल प्रान्त ने (32.15 लाख रुपये) के दानपत्र बेच कर एक मिशाल कायम की। राष्ट्र की कुल बिक्री 1.80 करोड़ से पार कर 2.09 करोड़ रुपये के दानपत्र की बिक्री की। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनील जाजोदिया ने सभी दानदाताओं को सहयोग देने हेतु उनका आभार व्यक्त किया।

रांची में जमनालाल बजाज जयंती मनायी गयी

अग्रवाल सभा की स्मृति व प्रेरणा समिति के तत्वावधान में 4 नवम्बर को जमनालाल बजाज जयंती मनायी गयी। मुख्य अतिथि झारखंड चैम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष अर्जुन जालान ने समारोह का उद्‌घाटन दीप जलाकर कर किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने बजाज के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। समारोह के संयोजक नरेश बंका ने कहा कि आजादी की लड़ाई में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। समारोह में विचार व्यक्त करने वालों में गोवर्धन गाड़ोदिया, वेदप्रकाश अग्रवाल, प्रभाकर अग्रवाल व सुरेश अग्रवाल शामिल हैं।

दिल्ली में परिचय सम्मेलन 18 फरवरी 2007 को

अग्रवाल निदेशिका समिति के तत्त्वावधान में विवाह योग्य अग्रवाल युवक-युवतियों, विधुर-विधवाओं, परित्यक्त-परित्यक्ताओं का 44वां परिचय सम्मेलन रविवार 18 फरवरी 2007 को **धर्मभवन, साउथ एक्सटैंशन भाग एक, नई दिल्ली-110049** में होगा।

इस परिचय-सम्मेलन के विवरण-फार्म महामंत्री-अग्रवाल निदेशिका समिति, डी-36, साउथ एक्सटैंशन-एक, नई दिल्ली-49 के कार्यालय में निःशुल्क उपलब्ध हैं।

श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय

मेरी साहित्य-साधना की ऊर्जा है सतत् क्रियाशीलता

-डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र

वरिष्ठ साहित्यकारों के जीवन एवं व्यक्तित्व पर केन्द्रित 'मेरी रचना यात्रा' शीर्षक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत डॉ. मिश्र ने अपनी साहित्यिक यात्रा में पारिवारिक पृष्ठभूमि, अपनी माता एवं पत्नी की भूमिका का बार-बार स्मरण किया। उन्होंने कहा कि माता के सुरीले कंठ से सुनी मानस की चौपाइयों ने जिस साहित्यिक संस्कार का बीजावपन किया उसे परिपुष्ट किया आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, अचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जैसे स्वनामधन्य गुरुओं ने। उन्होंने काशी के साहित्यिक वातावरण के साथ-साथ कोलकाता महानगर के अनेक साहित्यिक व्यक्तित्वों को भी याद किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आचार्य राधामोहन उपाध्याय ने की। श्री नंदलाल शाह ने पुस्तकालय की ओर से डॉ. मिश्र की 75वीं वर्ष पूर्ति पर शॉल उढ़ाकर उनका अमृत अभिनन्दन किया। डॉ. प्रतिभा अग्रवाल ने मिश्रजी के रचनात्मक अवदान का उल्लेख करते हुए उनके क्रियाशील दीर्घायु जीवन की कामना की।

आरम्भ में पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र के व्यक्तित्व एवं सृजन की विशिष्टता को रेखांकित किया। आलोचक श्री श्रीनिवास शर्मा ने डॉ. मिश्र की रचनात्मक ऊर्जा की सराहना की।

इस अवसर पर डॉ. रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध' लिखित खण्ड काव्य 'नेत्र-भंग' का लोकार्पण डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। डॉ. अवस्थी ने इस खण्ड-काव्य की प्रशंसा करते हुए श्री अनुरोध के ओजस्वी कवि-व्यक्तित्व की सराहना की।

कार्यक्रम का संचालन किया पुस्तकालय की साहित्य-मंत्री डॉ. उषा द्विवेदी ने एवं धन्यवाद ज्ञापित किया पूर्व अध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर जैथलिया ने।

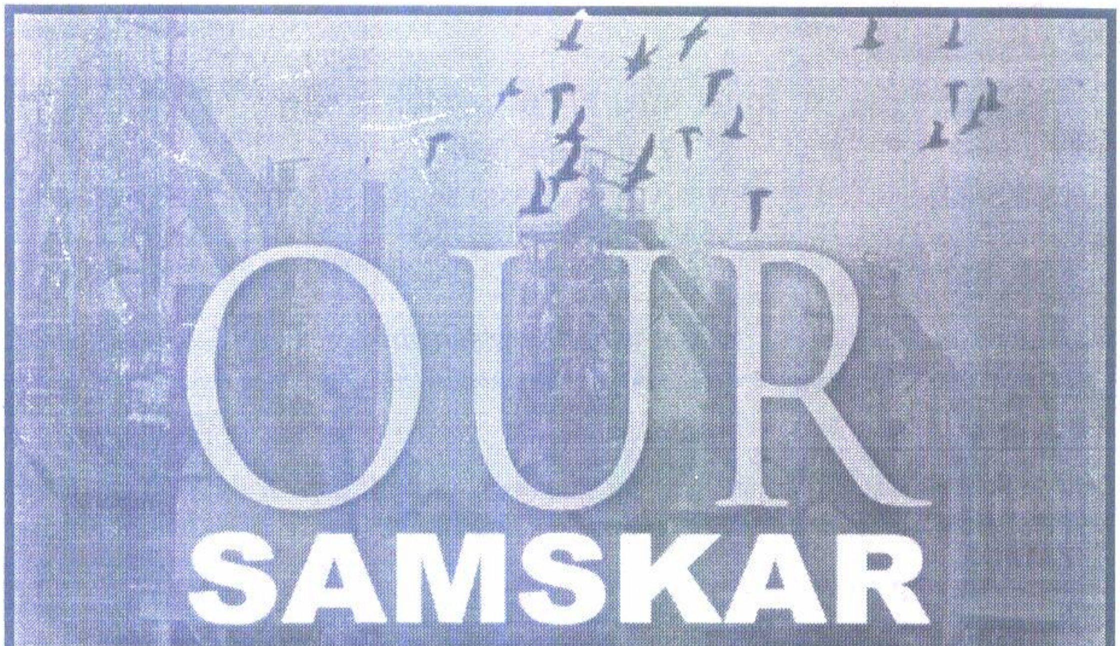

We have to create
and sustain a peaceful
work environment where
every employee can
contribute to the plant
in assigned area of work
with full freedom and dignity
and without fear.

ROURKELA STEEL PLANT
STEEL AUTHORITY OF INDIA LIMITED

सर्दी का आयुर्वेदिक
सुरक्षा-कवच
Sahul
Harpal... Herbal
हर 20 ग्राम पैक के साथ
5/- रु0 मूल्य का
Pen Free
100% आयुर्वेदिक क्रीम सिर्फ कटे-छिले, छुटपुट संक्रमण, हल्के-फुल्के जलने, फटे होंठ, फटी एड़ियां या नैपी दाने ही ठीक नहीं करती, बल्कि आपकी त्वचा को बनाती है, रुई जैसी नरम-मुलायम। बोरोविया सैकड़ों तकलीफ का तत्काल-इलाज। बोरोविया का एक पैक, जरूर रखें घर में।
Sahul
BOROVEA
Antiseptic Skin Care Cream
आयुर्वेदिक ऐंटीसेप्टिक क्रीम
M.R.P. 16/- मात्र
सात काम एक ही नाम
जाड़े की शुष्कता
फटे होंठ
फटी एड़ियां
छुटपुट संक्रमण
शिशुओं के नैपी दाने
दाढ़ी बनाते समय
छुटपुट कटा-जला

Refresher

OODLABARI

Royal

The strong CTC Leaf Tea with Rich Taste

Packed by

THE OODLABARI COMPANY LTD.

OODLABARI

MAKERS OF FINEST GREEN TEA, CTC TEA & ORTHODOX TEA
Nilhat House, 11, R.N. Mukherjee Road, Kolkata - 700 001
Phone : 2248-1101, 2248-4093 Fax : 2248-9515

JAIPUR OFFICE:
D-242, Devi Marg,
Green Vistas Apartment
Jaipur-302016
Phone : 2206682

SUJANGARH SALES DEPOT :
Gandhi Chowk,
Sujangarh - 331507
Phone : 220048

SR RUNGTA GROUP

Insync with Nature...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

(A Pioneer House for Minerals)

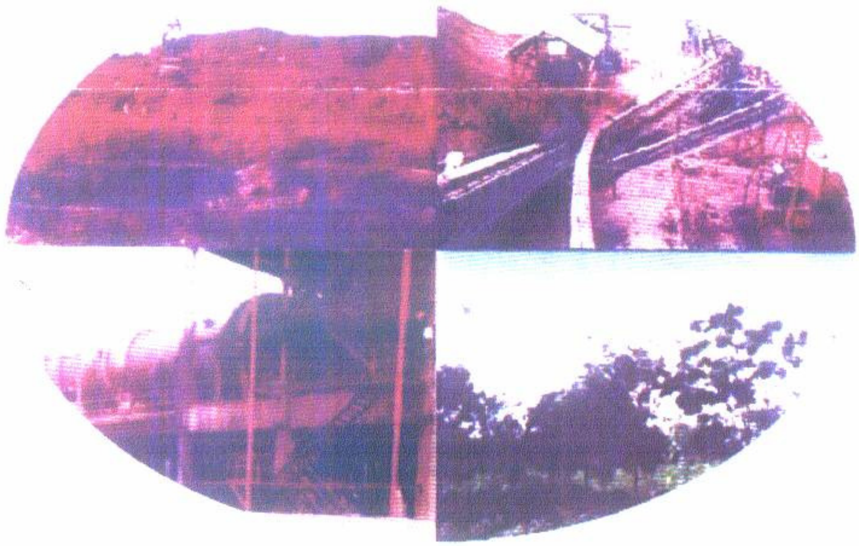

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

<u>MINES DIVISION:</u>
BARAJAMDA – 833221
DIST. – SINGHBHUM (W)
JHARKHAND, INDIA
Phone: (06596) 262221, 262321
Fax: 91-6596 – 262101
Cable : RUNGTA

<u>REGD. OFFICE:</u>
8A, EXPRESS TOWER
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA – 700 017, INDIA
Phone : 033-2281 6580, 22813751
Fax : 91-33-2281 5380
E-mail: rungta_cal@sify.com

<u>SPONGE IRON DIVISION:</u>
MAIN ROAD,
BARBIL – 758 035
DIST – KEONJHAR,
ORISSA, INDIA
Phone: (06767) 276891
Telefax: 91-6767-276891

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06
Date of Publication- 29th December 2006
RNI Regd. No . 2868/68

CENTURYPLY

Centuryply's new Identity

The new logo with it's graphic circular shape is suggestive of a continuous moving force creating a sense of momentum and dynamism. The pivotal point in the centre is reminiscent of a star- implying premium quality and the blue chip equity enjoyed by the company. The logo breaks clutter for it's smart, international, red and black sleek look.

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To,